Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RANGILA MUSAFIR 1957 G.K.V.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1125.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RT-543

112500

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

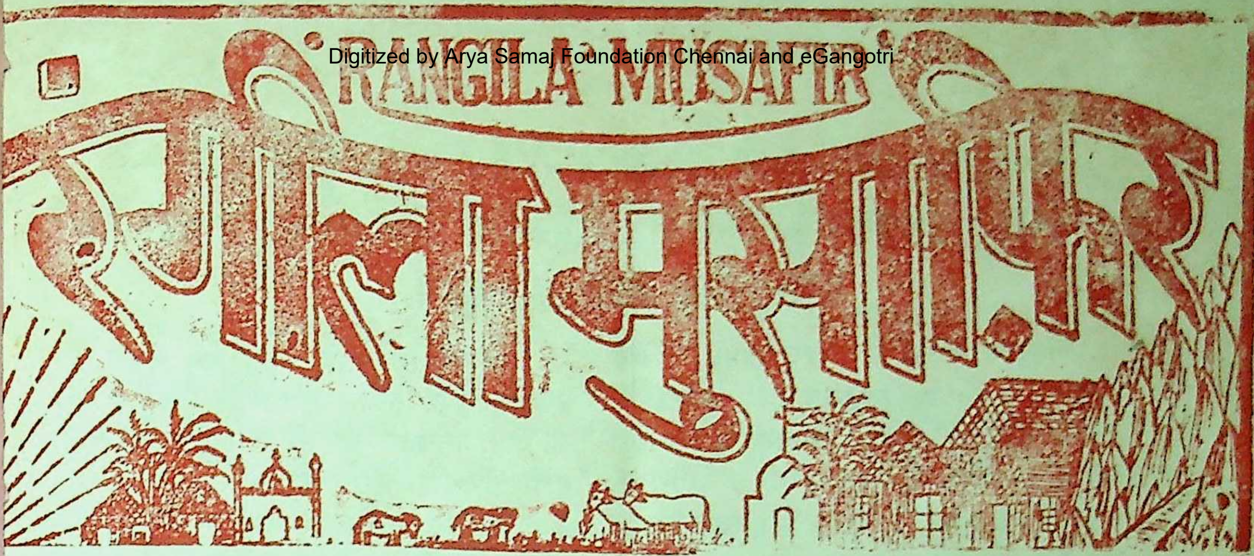

सर्व धर्मान् परत्यज्य मामेक शरणं व्रज ।
अहत्वा सर्वपापेभ्यों मात्तयिष्यामि मा शुचः ॥

संस्थापक:
राय साहब के० एल० शर्मा
एन्ड सन्स
जगाधरी ।

संचालक:
पं० प्यारे लाल जी शर्मा
खानदानी वैद्य (रजि०)
रिटायर्ड सुपरवाइजिंग आफिसर
सर्वे डिपार्टमैन्ट

112500

सफर ८ वार्षिक मूल्य २) रु० जगाधरी १५ अक्तूबर १९५७ पड़ाव ३

१	पैदा तो होंगे राम कभी	(गीत)	पृष्ठ १
२	कल्याणी	(कहानी)	" २
३	मेरी दुनिया से जाने वाले परदेसी	(गीत)	" ४
४	राष्ट्रय पति बापू के जीवन की मुख्य घटनाएं	(घटनाएं)	" ५
५	बापू का वरदान	(गीत)	" ७
६	आज कल की दशा	(गीत)	" ८
७	खून की गगोत्री	(कहानी)	" १०
८	जहां नरमूंडो का शिकार खेला जाता है	(कहानी)	" १३
९	गाँधी आओ अपने देश	(गीत)	" १४
१०	एम० एल० ए० की पत्नी	(गीत)	" १५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— 'दमा' और पुरानी खांसी के रोगियों ध्यान पूर्वक पढ़ो —
'हमारी' (चित्रकूट बूटी) ने तो विदेशों में भी हल चल मचादी है।
पढ़ो—देखो लोग क्या कहते हैं।

श्री गुरसरन सिंह पो० बक्स २०४६ अनकोन Ancon C. Zone से लिखते हैं कि मेरीस्त्री को दमा हो गया था जो यहाँ 'पानामा' में इस रोग का अधिक ज़ोर है। दसों प्रकार के ईलाज पर सैकड़ों रुपया खच किया परन्तु कोई लाभ न हुआ अकस्मात हो भाई सुचासिंह द्वारा आपकी दवा 'चित्रकूट बूटी' मिल गई। वाह-रे औषधि एक ही मात्रा में जादू की तरह स-काम किया। यथार्थ में यह तो जादूकी तरह ही काम करती हैं। सैकड़ों रुपया खर्च करने पर भी जो लाभ न हुआ था। वह इस दवा की एक मात्रा से ही होगया परमात्मा आपके कार्यालय की दिन रात उन्नत करे जिस में गरीबों का भला हो। मैं पांच डालर सेवा में भेजता हुं। आप किसी धर्म कार्य में लगा दें। अधिक क्या लिखुं।

(२) श्रीबारुराम कानस्टैंबिल न० ७४ थाना खास रोहतक से लिखते हैं कि मैंने आपसे सन् १६ ५० में जो ३ खुराक देमे खांसी की दवा मगाई थी। यथार्थ में उन्हों ने जादू की तरह से काम किया है। कृपा कर ३ पुड़ियाँ इस साल भी जल्दी से भेज दें परमात्मा आपको सदा जिन्दा रखें जो इस तरह पर जनता की भलाई होती है।

(३) नरेन्द्र सिंह वेदी असिस्टेन्ट सर्जन वावल डिस्पेंसरी जिला गुड़ गाव से लिखते है। पिछले साल श्रीमती हरचन्सकौर ने आपकी 'चित्रकूट बूटी' सेवन की थी एक ही मात्रा में आश्चर्य जनक लाभ हुआ कृपाकर एक पुड़िया इससाल जल्दी से और भेजें।

(४) श्री राम सुन्दर भगत मु० मोहन पुर पो० खवासपुर जिला भागलपुर से लिखते है आप की दवा "चित्रकूट बूटी' से आश्चर्य जनक लाभ हुआ. कृपया दो खुराक और भेज दें।

(५) श्री गौरीशंकर वर्मा अध्यापक ग्राम कोपवा पो० जैदपूर जिला० बारांबंकी से लिखते हैं, १० साल से एक रोगी दमा रोग से तड़फ र[illegible] था। आपकी दवा चित्र कूट बूटी' की एक ही म[illegible] ने उसकी जान बचा दो। यर्थाथ में यह [illegible] अमृत तुल्य है। अधिक कहां तक लिखा[illegible]।

इस दवा से प्रतिवर्ष हजारों स्त्री, पुरुष लाभ उठाते है। यदि आप इस रोगसे तड़फ रहे हो तो मुफ्त में इधर उधर पैसा बरबाद न करके किसी भी "पूर्णमाशी' को एक मात्रा इस की सेवन कर के आश्चर्य जनक गुण देखो। यदि रोग अधिक पुराना होतो लगातार ३ 'पूर्णमाशी' सेवन करें। जड़से रोगकट जायेगा। यहां आश्रम में सबको यह दवा मुफ्त दो जाती हैं। बाहर मगांने पर केवल २॥) रू० विज्ञापन रजिस्ट्र आदी का खर्चा भेजना पडता है। जल्दी मनीआर्डर भेजकर मगालें। जिसमें आने वाली 'पूर्णमाशी' पर सेवन कर सकें। इस दवा की वी० पी० नही भेजी जाती है क्यों कि वी. पी० कभी २ बहुत देर से मिलती है यदी पुरा कोर्स ३ खुराक एक बार मगवे तो७) भेजें। अनेक अमीर आदमी अपने नाम से गरीबो को मुफ्त [धर्मार्थ] बाँटने के लिये दर्जनों खुराक मगाते है उन के लिये रिआयती रेट कम से कम १२ पेकट २४)रू० है। जल्दी मंगा कर हर समय घर में रखें जिस में आनेवाली "पुर्णमांशी" पर से वन कर सकें

पता—राय[illegible] आश्रम (E) [illegible]गाधरी (E P)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैदा तो होगें राम कभी

लेखक— शिव प्रसाद कमल (संसार से धन्यवाद पूर्वक)

'मैं साधु हू' ऐसा कहते ? लेकिन तुमको अधिकार नही,
मे जहां मिलने को जाता हूं वह तो कोई अभिसार नही,
हो सकता है वह प्यार नही जिसको करता हुँ स्नेह परम,
वाणी मेरी जो कुछ कहती वह तीर नही तलवार नही !

जिस निशि के कोठे पर जाता वह नही वेश्या हो सकती,
शवनम जिसको मैंने चूसा वह नही अधर को धो सकती,
कविता की भाव न बन सकती तारिका तमन्नायें बनकर,
जो कली मचलती रहती है वह मेरे घाव न भर सकती !
तुम डाकू मेरे दुनियां के क्या वह मेरा संसार नही ?

ठठरी देखो तुम ओ साधु ! उन दीन हीन हरिजनों की,
तुम तो पल्ला पकड़े रहते दस नोटों के धनवानों की,
तुम ने तो घर के भाई को ठोकर मारी निरदयता से,
पूजा करते हो लगी गली कुत्ते जैसे भगवानों की !

सब दोष हमारे मढ़ते हो यह हृदय न मेरा सुन सकता,
क्या बात हमारी सुन लोगे जो घायल दिल मेरा कहता,
जो चमन हथेली पर मेरे सोया करता है संध्या से,
वह भोर भरी मधु वेलामें है स्वयं नित्य ही जग पड़ता !
तुम चाँदी क्यों न बहा देते जिसको कोई व्यापार नही ?

तुम स्वयं पाप करत रहते गहरे निशि के अंधियारे में,
सड़कों पर कहते बहन मेरी पर क्या करते गलियारे में?
तुम समाज के समुदायों के देश के बनते हो नेता,
बदला करते हो अपनी बातों से पर उजियारे में !

तुम अपने सीता-सावित्री के श्रापों से गठरी भरते,
लेकर रक्त गरीबों का तुम रावण बन गगरी भरते,
तुम ले न सकोगे स्वांस सुनो ! पैदा तो होंगे राम कभी
उद्धार सभी का तब होगा तुम जैसे पापी के मरते !

इतना सब कुछ कहने पर भी मानोगे अपनी हार नही !
'मैं साधू हूँ' ऐसा कहते ? लेकिन तुमको अधिकार नही !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के पूज्य ऋषियों की शक्ति शाली खोज

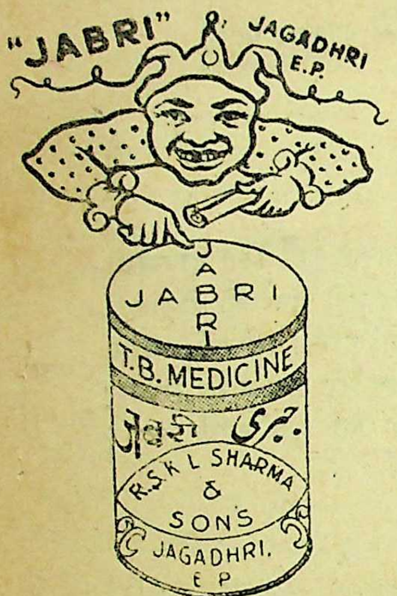

T. B. तपेदिक और पुराने ज्वरों के निराश रोगियों—क्या आपने भारत विख्यात महौषधि "जबरी" का सेवन अभी तक नहीं किया है। जो इस दुष्ट और भयंकर रोग से तड़प रहे हैं! तो यह आपकी भारी भूल है और स्वयं अपने जीवन को मृत्यु के मुख में धकेल रहे हैं। अब भी समझो, और तुरन्त 'जबरी' का सेवन शुरु करके इस दुष्ट रोग से अपने जीवन को बचावें अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि— अब पछताए क्या होत है, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत। 'जबरी' भारत के पूज्य ऋषियों की "अद्भुत खोज" और आयुर्वेद विद्या का अनोखा रहस्य में हलचल सी मचादी है। यदि आप सब तरफ से निराश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार 'जबरी' की परीक्षा जरुर करें। परीक्षा ही नमुना रखा है, जिसमें तसल्ली हो सके, तुरन्त आर्डर देकर रोगी के प्राण बचावें। मूल्य 'जबरी' स्पेशल नं० १ सोना, मोती वाली पूरा ४० दिन का कोर्स ७५), नमूना १० दिन २०), जबरी नं० २ पूरा कोर्स २०)। नमूना १० दिन६ रु० महसूल अलग है। इस में मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं। तार का पता "जबरी" (जगाधरी है)

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा, एण्ड संस रईस (R) 'जगाधरी' (E P)

कल्याणी

रांची इलाकेमें आये! अभी कुल एक मास हुआ था। शहर तो कुछ है भी किन्तु शहरसे दूर पहाड़ियों और घाटियों के बीच जो राष्ट्रीय विकास केन्द्र है, वहां आदमी की शक्ल देखने को मन तरसता है। हां, प्रकृति का सौन्दर्य वहाँ कुछ इतना भव्य है कि आदमी की 'मोनोटोनी' दूर हो जाती है। कहीं कहीं घने जंगल, कहीं लम्बे चौड़े वीरान मैदान! और उन्हीं जंगलों तथा मैदानोंके बीच 'जीप' पर सवार हर सुबह, हर शाम कामके पीछे भागते रहना पड़ता है।

जो लोग सस्कृतिकी प्राचीनतामें सौन्दर्य पाते है, उनके लिए ये स्थल बहुत अच्छे है बहुत उपयोगी हैं। यहांके आदिवासी सभ्यता और सस्कृति के चक्कर में अभीतक नहीं पड़े हैं। जहां कहीं क्रिश्चियन मिशन के 'फादर' पहुच गये हैं, वहां की औरतों के कपड़े लते सफेद दीखते हैं। नहीं तो, वही लंगोटी सहित पुरुष और निरावरण वक्षस्थलमयी नारियां?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी अपने क्षेत्र को अच्छी तरह समझने और जानने पहचानने की चेष्टा में ही था, कि एक सुबह दो आदिवासी दौड़े हुए आये, सामने हांफते हुए खड़े हो गये और बोले—

'जल्दी चलो साहब। बाघ को घर में बन्द कर दिया है। उसमें एक बच्चा भी है। जल्दी चलो, सा'ब, देर मत करो।

इतना कह कर वे तो रुक गये, किन्तु मैं कई मिन्टो तक इन बातों पर सोचता रहा। 'सही है' कि इस इलाके में कभी कभी बाघ निकल आते हैं मगर उसे घर में कैसे बन्द कर दिया गया और उसके पास एक बच्चा बाघ भी कहाँ से आ गया।' कितने तर्क वितर्क आते जाते रहे और अचानक मैं किसी भयभीत प्रतिक्रिया में उठ खड़ा हुआ। 'गराज' तक जाकर फिर बन्दूक लाने के लिए लौटा कारतूस में एक भी 'बुलट' नही— सभी छर्रे वाली, जिनसे पक्षी मारे जा सकते हैं। किन्तु उपाय ही क्या था? उन्हो कारतूसों के साथ मैंने उन दोनो आदिवासियों को भी 'जीप' में बिठाया और चल पड़ा। कभी तेज कभी आहिस्ता चल कर जब गांव में उस मकान के सामने पहुँचा, तो अजीब नाटकीय दृश्य था।

मकान को सारे गांवने घेर रखा था। कमरे में बाघ था, बाहर से सांकल चढ़ा दी थी। कमरे में बाघ का बच्चा नही आदमी की एक पचवर्षीय बच्ची थी, जिसकी मां एक खिड़की पर लगातार सर पटकती हुई प्रार्थना करती जा रही थी— मेरी बेटी को छोड़ दो छोड़ दो, बन देवता। मैं तुम्हारा कुछ नही बिगाड़ने दूंगी। तुम्हे कोई कुछ नही कहेगा। तुम मेरी बेटी को छोड़ दो।'

अपने को अकेला कमरे में बन्द पाकर बाघ घबड़ा गया था और खिड़की तथा किवाड़ के पास आकर दहाड़ रहा था। बच्ची जो एक मास से अवश्य ही कर मरणासन्न हो चुकी थी, चुप थी, बेहोश थी।

मेरे पहूंचते ही एकत्र हुए लोगों में सनसनी आ गयी। लोगों का शोर गुल बेहद बढ़ गया। भीतर की लड़की एकाएक चीख पड़ी और बाघ ने उसपर आक्रमण कर दिया। खिडकी पर अब तक रोती हुई उसकी माँ बेजार हो गयी। उस की उम्र प्रायः पच्चीस की थी। उसके ऊपरी भाग पर कोई कपडा नही रह गया था। उसमें शेरनी की हिम्मत आ गयी और उसने झपट कर दरवाजा खोल दिया। मातृत्व काबू से बाहर हो गया था और तीर की तरह बाघ कमरे से निकल कर पहाडी की ओर भाग चला। भागते हुए बाघ ने दरवाजे पर सिर्फ एक पंजा उसकी कनपटी पर मारा, जिससे वह तडाक से जमीन पर गिर गई। लोग अवाक रह गये। नौजवानों का एक दल उसे चाहेटता हूआ पीछे दौडा गया।

मैंने अपनी 'जीप' उधर ही घुमा ली, जिधर बाघ गया था। वहां मैं भी उतर गया। बाघ की खोज होने लगी। टीलों को पार करते, जंगलों के बीच में से राह बनाते हम सभी ऊपर चढ़ते जा रहे थे। घण्टों तलाश होती रही और प्रायः तीन घण्टों के बाद हम सभी उस गुफा के पास आये जिसमें बाघ ने शरण ले रखी थी। वह सर घुसा करभीतर घुस गया था। गुफा आगे तीनों ओर से बन्द थी। बाहर से उसका एक पुट्ठा और दुम दिखाई दे रही थी। वह डर गया था और अपनी जान की रक्षा चाहता था।

कुछ देर हम लोग सोचते विचारते रहे। प्रतीक्षा करते रहे कि वह बाहर आ जाय। बन्दूक मेंछर्रे वाली दो कारतूस भरी जा चुकी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत

द्वारिकाधीश नारायण पाण्डे 'आशुतोष'

मेरी दुनियासे जानेवाले परदेशी !
दोषी हूँ, तुमको प्यार किया था अनजाने !!

मागूंगी तुमसे भीख नहीं मैं जीनेको,
लेकिन मरनेका न्योता है स्वीकार मुझे
दांवों पर जीत गये यदि मेरे जीवनको
तो लौटाना होगा तुमको भी हार मुझे,
ये गलती नहीं तुम्हारी, लाखों करते हैं —
"अधजले शलभ को दीपक भी क्यों पहचाने ?

गीतोंके इन छन्दो को भी लेते जावो,
सूने पहरों में जो मनको बहलाते हैं,
दो चार घड़ी हंस लेती हूं गा लेती हूं
फिर तो दुख के काले बादल मंडराते हैं,
मैंना किया सौ बार मगर फिरभी फीर हठ कर,
मेरे सद्भाव गये हैं तुमको लौटाने !

सुनसान डगर में मुझसे पूछाथा अतीत
बहलाया बातोंसे उसकी जिज्ञासा को।
फिर वर्त्तमान है पूछ रहा चौराहापर
क्या, नहीं सजावोगी भविष्य कीआशा को
कैसे बतलाऊं इन भोले नादानों को-
प्राणों का पँछी उड़ जायेगा, कब जाने ?

मैं बहुत दूर तक बढ़ आयी थी इस पथ में,
फिर भी मैं लौट रही हूं लेकीन विकल प्यार
वह स्वच्छ हृदय तेरा मुझको इंगित करता-
"अवरुद्ध करो अपने नैनों का सलज द्वारा
तेरे पथ में मैं दीप जला कर देखूंगी,
कब तक लेटेंगे चरण तुम्हारे दीवाने !

★★—★★

मगर मौत उसे बाहर न ले आयी। उसका निकलना क्या कम खतरनाक होगा और इस एक विचारसे बन्दूक सामने उठ गयी। आंख बन्दूक की नली और 'मक्खी मिलाने लगी। लोगों ने साँस रोक ली। वातावरण में श्मशान का सन्नाटा छा गया।

और अभी मेरी उंगली 'ट्रिगर' दबाना ही चाहती थी, कि किसी ने पीछे से पीठ पर हाथ रख दिया। बन्दूक नीचे उतर गयी। उलट कर देखा— वही औरत आरजू कर रही थी, गिड़-गिड़ा रही थी—

'उसे छोड़ दो बाबू। उसने मेरी बात मान ली है। वह बन देवता हैं सा'ब ! मेरे बच्चे को उस ने छोड़ दिया है बाबू। तुम्हे अपने बाल बच्चो की कसम ! उसे छोड़ दो बाबू !'

एक क्षण, मैं उसे देखता रहा। दूसरे क्षण देखा उसकामातृत्व, जिसने उसे दरवाजा खोल देने का साहस दिया था और इस समय उसका परम्परागत विश्वास भी सामने खड़ा था। और न जाने क्यों, मैंने कारतूस निकाल ली और सीधे नीचे उतर आया।

आज सोचता हूँ— उसकी बात न मान कर यदि मैंने गोली चला दी होती तो क्या मैं उस दिन बच पाता ? वह मेरी मां तो नही थी, यह सत्य है किन्तु पच्चीस वष पहले मेरी मां मर चुकी थी, वह तो असत्य नही हैं !!!

(ससार से धन्यबाद पूर्वक)

डिप्टी का लड़का

कलकत्ते के मशहूर बाग इडान गार्डन में एक दर्द नाक दिलको हिला देने वाली सच्ची घटना हैं जिस को पढ़कर आप के रोंगटे खड़े हो जायेंगे केवल ।=) का स्टाम्प भेजकर मंगावें।

पता— 'जबरी आफिस' जगाधरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देश भर में राष्ट्रपिता बापू की जन्मतिथि ता० २ अक्तूबर को मनाई गई
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की मुख्य घटनाएं

१८६९—२ अक्तूबर को पोरबंदर में जन्म।

१८७६—राजकोट में शिक्षारंभ, कस्तूर बाई से सगाई।

१८८३—कस्तूरबाई से विवाह।

१८८५ पिताजी की मृत्यु।

१८८७ मैट्रिक परीक्षा पास की, भावनगर सामलदास कालेज में दाखीला।

१८८८—४ सितंबर को शिक्षा के लिए विलायत रवाना।

१८८९—पहला सार्वजनिक भाषण इंगलैंड की निरामिषाहारियों की सभा में।

१८९१—१० जून को बैरिस्टर हुए ७ जुलाई को बम्बई पहुंचे, माताजी की मृत्यु का समाचार।

१८९२—राजकोट तथा बंबई में वकालत।

१८९३—अप्रेल में वकालत के लिए दक्षिण अफ्रीका रवाना।

१८९४ जिस मुकदमे के लिये दक्षिन अफ्रीका गये उसका पंच फैसला हुआ।

१८९५—नेटाल सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट, हुए नेटाल भारतीय कांग्रेस का संगठन।

१८९६- छः मास के लिये भारत-आगमन, तिलक और गोखले आदि नेताओंसे भेंट, राजकोटमें महामारी कमेटी द्वारा सेवा २८ नवबर को वापसी।

१८९७— डर्बन लौटने पर विरोधी प्रदर्शन, जीवन में महान् परिवर्तन।

१८९९—बोअरकर युद्ध में अंग्रेजों की सहायता

१९०१—भारत अगमन, कलकत्ता कांग्रेस में शामिल, बर्मा यत्रा, तीसरे दर्जे में भारत-प्रवास।

१९०२ मार्च में बंबई में आफिस, तीन महने बाद दक्षिण अफ्रीका केलिये पुनः प्रस्थान

१९०३—ट्रांसवाल ब्रिटिश इण्डियन एसोसियेशन की स्थापना।

१९०४—गीताध्यान, इण्डियन ओपीनियन' का सम्पादन, 'आरोग्य पियक सामान्य ज्ञान' पुस्तक लिखी, रस्किन के अंटु दिस लास्ट' (सर्वोदय का पढ़ कर जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन, फिनीक्स आश्रम की स्थापना।

१९०६—जूलू विद्रोहः घायलों की सेवा, ब्रह्मचर्य से रहने की प्रतिज्ञा, 'सत्याग्रह' शब्द का आविष्कार

१९०७—शिष्टामण्डल के साथ विलायत की यात्रा खूनी कानून के विरुध सत्याग्रह।

१९०८ अंतरिम समझौता, पठान द्वारा अक्रमण, सत्याग्रह पुनः प्रारंभ, गिरफ्तारी।

१९०९—टालस्टाय को प्रथम पत्र, शिष्टामण्डल में इंगलैंड रवाना, वापसी में हिंद स्वराज्य लिखा

१९१० जोहांसवर्ग में टालस्टा-फार्म की स्थापना।

१९१२—गोखले की दक्षिण अफ्रीका की यात्रा, ,नीति धर्म' प्रकाशित।

१९१३—सत्याग्रह फिर आरंभ गिरफ्तारी व रिहाई, सात दिन का उपवास, तथा साढ़े चार मास तक एक समय भोजन।

१९१४—चौदह दिन का उपवास, समझौता व सफलता, १८ जुलाई को इंगलैंड रवाना, ४अगस्त से प्रथम महायुद्ध सरोजिनी नायडू से परिचय और महायुद्ध, में सेवा।

१९१५—भारत अगमन और कैसरे हिंन्द' मेडल की प्राप्ति, भारत भ्रमण १९ फरवरी को गोखले की मृत्यु, २५मई को आश्रम की स्थापना।

१९१६—काशी विश्वविद्यालय की स्थापना, लखनऊ कांग्रेस में जवाहरलाल नेहरु से पहली बार भेंट,

१९१७—पहली बार राजेन्द्र बाबू से भेंट, १७अप्रेल को चम्पारन सत्याग्रह, ३१ मई को गिरमिटियी कानून रद, ३० जून का दादा भाई नवरोजी की मृत्यु आचार्य कृपालानी और महादेव भाई से सपर्क।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९१८—अहमदाबाद में मिल-मजदूरों की हड़ताल ३ दिन का उपवास, खेड़ा-सत्याग्रह, चर्खे का पुनरुद्धार।

१९१९—रौलट-कानून, ६ अप्रैल को प्रार्थना और उपवास दिवस १३ अप्रैल जलियांवाला बाग, यंग 'इण्डिया' व 'नवजीवन' का सम्पादन शुरू, खिलाफत द्वारा असहयोग, अमृतसर कांग्रेस।

१९२०—पहली अगस्त को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु, २ अक्तूबर को तिलक फंड की स्थापना गांधी जी द्वारा तैय्यार किया हुआ कांग्रेस का विधान स्वीकृत असहयोग आंदोलन।

१९२१—राष्ट्रीय विद्यापीठों की स्थापना, प्रिंस आफ वेल्स के आगमन के कारण दंगा, अशांति, पांच दिन का उपवास अहमदाबाद कांग्रेस।

१९२२—५ फरवरी को चौरी चौरा काण्ड, सत्याग्रह आंदोलन स्थगित, ५ दिन का उपवास, १० मार्च को गिरफ्तारी ६ वर्ष की सजा।

१९२४—अपेंडिसाइटिस का आपरेशन, ५ फरवरी को रिहाई बेलगांव कांग्रेस के अध्यक्ष।

१९२५—हिन्दु-मुसलिम एकता के लिए २१ दिन का उपवास १६ जून को देश बन्धु दास की मृत्यु एक सप्ताह का उपवास कानपुर कांग्रेस चर्खा संघ की स्थापना।

१९२६—स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या।

१९२७—खादी यात्रा, २९ दिसम्बर को हकीम अजमलखां की मृत्यु।

१९२८—साइमन कमीशन, बारडोली सत्याग्रह १७ नवम्बर को लाला लाजपत राय की मृत्यु। नेहरू रिपोर्ट, कलकत्ता कांग्रेस।

१९२९—लाहौर कांग्रेस में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव।

१९३०—२६ जनवरी को पूर्ण स्वाधीनता की प्रतिज्ञा १२ मार्च को नमक कानून तोड़ने के लिए डांडी यात्रा, गिरफ्तारी।

१९३१—४ जनवरी को इंग्लैण्ड में मौ० मुहम्मद अली की मृत्यु २५ जनवरी को रिहाई ६ फरवरी को प० मोती लाल नेहरू की मृत्यु ४ मार्च को गांधी अर्विन पैक्ट, २४ मार्च को भगतसिंह को फांसी, कराची कांग्रेस, २५ मार्च को गणेश जी का बलिदान, दूसरी गोलमेज कांफ्रेंस में भारत के एक मात्र प्रतिनिधि निर्वाचित।

१९३२—सत्याग्रह फिर से आरंभ, कांग्रेस गैर कानूनी घोषित, ४ जनवरी को गिरफ्तारी, नवजीवन 'यंग इंडिया' पत्र बन्द, २० सितम्बर से आमरण अनशन, २४ सितम्बर यरवदा पैक्ट २६ सितम्बर को उपवास समाप्त।

१९३३—८ मई से २१ दिन का उपवास, हरिजन पत्रों का प्रारम्भ, रिहाई, फिर गिरफ्तारी, एक वर्ष की सजा, १६ अगस्त को आमरण, जो एक सप्ताह चला २३ अगस्त को रिहाई २०। सितम्बर को एनी बेसेंट की मृत्यु, २२ सितम्बर को विट्ठल भाई पटेल की मृत्यु, साबरमती आश्रम का त्याग ७ नवम्बर से हरिजन यात्रा।

१९३४—बिहार भूकम्प, ७ अगस्त को सत्याग्रह स्थगित ७ दिन का उपवास, बम्बई कांग्रेस २६ अक्तूबर को ग्रामोद्योग संघ की स्थापना।

१९३५—कांग्रेस की स्वर्ण जयन्ती।

१९३६—१९ मई को डा० अंसारी की मृत्यु सेवा ग्राम आश्रम की स्थापना।

१९३७—जुलाई में कांग्रेस के पद ग्रहण, नई तालीम शुरू।

१९३९—१४ जनवरी को मौ० शौकत अली की मृत्यु राजकोट में आमरण अनशन, वाईसराय के हस्तक्षेप से ४ दिन बाद समाप्त, त्रिपुरी कांग्रेस, सुभाष बाबू का कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र ३ सितम्बर को महायुद्ध का आरंभ, ८ नवम्बर को प्रांतों में कांग्रेस सरकारों द्वारा पद त्याग।

१९४०—१७ अक्तूबर से व्यक्तिगत सत्याग्रह विनोबा प्रथम सत्याग्रही, 'हरिजन' पत्रों पर रोक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४१—७ अगस्त को रवीन्द्र ठाकुर की मृत्यु कांग्रेस के नेतृत्व से मुक्ति।

१९४२—कांग्रेस का फिर नेतृत्व, ११ फरवरी को सेठ जमना लाल बजाज की मृत्यु, क्रिप्स मिशन ८ अगस्त को 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव, नेताओं की गिरफ्तारी, १५ अगस्तको महादेव भाई की मृत्यु

१९४३—आगाखां महल में २१ दिन का उपवास

१९४४—२२ फरवरी को कस्तूरबा गांधी मृत्यु ६ मई को जेल से रिहाई गांधी जिन्ना वार्ता।

१९४५ पहली शिमला कांफ्रेंस।

१९४६—केबीनेट मिशन मुस्लिम लीग द्वारा १६ अगस्त को 'सीधी कारवाई' दिन, साम्प्रदायिक दंगे

१९४७—नोआखाली की पैदल यात्रा १५ अगस्त को स्वतन्त्रता प्राप्ति, कलकत्ते ७३ घंटे का उपवास

१९४८—दिल्ली में आमरण उपवास, जो पांच दिन चला ३० जनवरी को महाप्रयाण।

'हे राम'

बापू का वरदान

—श्री मन्नूलाल द्विवेदी—

रंग हैं तीन, शील हैं पांच, मनुज मानस पंकज है।
बापू का वरदान, विश्व की शान, चक्रमय ध्वज है॥

विजय घोष से राष्ट्र गगन का कण कण झंकृत है।
तरल तिरंगे की लहरों से,
विश्व व्योम कंपित है॥

रंग हैं तीन, शील हैं पांच, मनुज मानस पंकज है।
बापू का वरदान, विश्व की शान, चक्रमय ध्वज है॥

महानाश के बादल देखो,
पश्चिम में मंडराये।
कौन विजु सी चीर उन्हें
अब अग आलोक मचाये॥

रंग हैं तीन, शील हैं पांच, मनुज मानस पंकज है।
बापू का वरदान, विश्व की शान, चक्रमय ध्वज है॥

साम्य और सामाज्यवाद के आधार शिला कंपित है।
शाँति, अहिंसा, सत्य, प्रेम,
पर भारत अवलंबित है॥

रंग हैं तीन, शील हैं पांच, मनुज मानस पंकज है।
बापू का वरदान, विश्व की शान, चक्रमय ध्वज है॥

(नया भारत से)

❀ "रेलवे मैन" अजमेर के ग्राहक बनिये ❀

"रेलवे मैन" सप्ताहिक पत्र दरबार प्रेस से प्रकाशित होता है। इस में रेलवे सम्बन्धी सभी समाचार होते हैं। रेलवे कर्मचारियों व्यापारियों व यात्रियों की कठिनाइयों को दूर कराने व सरकार को उचित परामर्श देना इस का लक्ष्य है हर विभाग के रेलवे कर्मचारियों को व्यापारियों व रेलवे यात्रीयों तथा वाचनालयों को इस के ग्राहक बन कर अपनी कठिनाइयों को दूर कराना चाहिये।

मैनेजर—
"रेलवे मैन"
पोस्ट बाक्स न० ११०
अजमेर

कार्यालय—
दैनिक दरबार
अजमेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना

राय साहब के० एल० शर्मा फर्म जो ४० साल से स्थापित है। जिस के भारत और विदेशों में लग भग ४०-५० हजार स्थाईरुप से ग्राहक हैं "रंगीला मुसाफिर" फर्म का अपना मुख्य पत्र है। सब ही ग्राहकों को अलग २ सुचना देना असम्भव है हजारों कृपालु ग्राहकों ने त अपना २ वार्षिक मूल्य २)रु० भेज दिया है। केवल २) मनीआर्डर भेज देने से साल भर तक रंगीला मुसाफिर" आपकी सेवा में पहुंचता रहेगा, ≥) मासिक खर्च एक तुच्छ रकम है। हमारे सब ही स्थाई ग्राहक तथा जिनके पास यह अंक नमूना रुप से पहुँच रहा है। इस मास के अन्त तक २) रू० हमें भेज दें। यदि किसी सज्जन को ग्राहक न रहना हो तो ३ पैसे का लालच न करके हमें एक कार्ड द्वारा सुचना देने की कृपा करें।

कार्यालय से जो आप का स्थाई सम्बन्ध है। हमें आशा है कि आप २) रु० तुरन्त भेज देंगे यह भी नोट करलें कि आगमी साल १९५८ से रंगीला मुसाफिर का वार्षिक मुल्य ३) होजावेगा। यह २) रु० की रिआयत अकतुबर मास के अ त तकही ग्राहक होने वालों को रहेगी नोट करलें।

सन् १९५७ (१९५७)

रहस्यमय बातें तथा शक्ति शाली (सर्व कार्य सिद्ध यंत्र) मालूम करने के लिये केवल ≥)के स्टाम्प भेजकर जबरी जन्त्री मुफ्त मगाकर मनो कामनांए पूर्ण करें।

पता-जबरी आफिस (१८) जगाधरी (E.P.)

आजकल की दशा

तुम्हेंअब डर किस का है........

झूम कर आनन्द में गाओ,
तुम्हें अब डर किस का है
जशन पर जशन मनाओ
होटल में लेमन का बहानाकरके
प्याले विस्की के उड़ाओ ॥ तुम्हें......
तुम्हारे प्रतिकूल नुक्ताचीनी जो
करे, उसे जेलों की हवा खिलाओ ॥ तुम्हें,.......
अपने मित्रों को परमिट देकर
बैंक वायलैंस को बढ़ाओ ॥ तुम्हें......
जो थे तुम से रूठे, उसे दिखा कर कुर्सी की
झलकी, अपना हम ख्याल बनाओ ॥ तुम्हें......
जनता रोटी को तरस्ती रहे और तुम
हल्वे अपने कुत्तों को खिलाओ ॥ तुम्हें......
बिस्तरे गोल भी हो जायें तो भर कर
बहरुप, चौर दरवाजे से आओ ॥ तुम्हें......
हम तो लाचार है भूखे भी रह
लेंगे, तुम खूब खाओ ॥ तुम्हें......
कुर्सियों के लिये आपस में
भाई, भाई को लड़ाओ ॥ तुम्हें......
यदि कभी खोले जबां कोई शिकायत के
लिये. फर्द जुर्म इस पर लगाओ। तुम्हें......
हम को कपड़ा भी न मिले तूम महलों
में. फर्श मखमल के बिछाओ ॥ तुम्हें......
काले चोरों को अपना सहारा दे
कर कोम का खून पिलाओ ॥ तुम्हें .....
जिन के वोटों ने बिठाया तुम्हें कुर्सी पर
इन को झिड़कियां सुनाओ ॥ तुम्हें......
जनता टी०बी० आदि भयंकर रागों में
फर्स, है पेट तुम अपने बढ़ाओ ॥ तुम्हें......

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसाम से पंजाब ही नहीं बल्कि भारत के कोने कोने तथा विदेशों में भी भारत विख्यात पुस्तक

आसामी बंगाली तिलस्मी राज
या
खजाना-करामात

ने हलचल मचा दी है, सैंकड़ों हजारों लोगों का कहना है कि यह पुस्तक नहीं बल्कि भारत के पूज्य महात्माओं की कभी न मिटने वाली अपूर्व शक्ति का भण्डार, यथार्थ में खजाना करामात ही है जिस के पहले २ एडीशन ६) रु० मूल्य होते हुए भी। हाथों हाथों खतम हो गये थे और फिर १०) १०) रु० में भी नहीं मिली थी. अब तीसरी बार का एडीशन भी खतम हो रहा है, यदि अभी तक आपने नहीं देखी है तो आज ही आर्डर भेजकर प्राप्त कर लें। नहीं पहिले की तरह से पछताना पड़ेगा मूल्य वही ६) रु० जिल्द ६।।।) पृष्ठ सख्या ६०० से ऊपर है।

दिवाली आ रही हैं ता: २२ अक्तूबर याद रखें।

भारत विख्यात पुस्तक "खजाना करामात" के ग्राहक ध्यान पूर्वक नोट करलें।

पुस्तक में पृष्ठ ६०८ पर जो (सर्व कार्य सिद्ध यंत्र) दिया है। वह दिवाली की रात में विधि अनुसार सिद्धकरके हर काम में सफलता प्राप्त करें। बिश्वास पूर्वक इसे जरूर अपने लिये बनाले फिर इस के अद्भुत चमत्कार देखकर आप को अश्चर्य होगा। धन, मान, रोजगार, में तरक्की, सन्तान का सुख, शत्रु पर विज्य सब ही बातें आपको प्राप्त होगी। प्रेम की भूल से पुस्तक पृष्ठ ६०९ पर इस यंत्र को सिद्धकरने वाला मंत्र छूट गया है। सो ग्राहक कों की जानकारी को यहाँ पर लिख देते हैं पुस्तक में नोट करलें इस यंत्र को लिखने के लिये 'अष्टगंध' बनाना पड़ता है हमारे हजारों ग्राहक अष्टगंध के बारे में पूछा करते हैं उन की जानकारी के लिये लिखा जाता है। कि अष्टगंध में ८ चीजें होती हैं। कस्तुरी, केशर, लाल चन्दन, अगर बीज छोटी इलायची, गऊ लोचन लौंग, काफूर यह सब असली चीजें बराबर भाग लेकर और सब पोस छान कर तैयार करलें फिर पानी मिलाकर रंग बनाले। इसी से यत्र को चमेली की कलम से लिखें। हमारे यहां अपने ग्राहकों के लिये बनाकर भी रखा जाता है। मूल्य २५) रु० तोला और एक माशा के २।।) लगते है। नोट नोट करलें और १००१ बार जाप करके यंत्र को सिद्ध करलें। पुस्तक में १०१ बार जपना छप गया है। भूल ठीक करलें।

मन्त्र यह है—**ओं, ह्रीं, क्लीं, कामेच्छा, देवी, सिद्ध, यन्त्रे, नमो, नमः।**

नोटः—यदि उपरोक्त यंत्र हमारे तांत्रिक फण्ड से सिद्ध किया हुआ प्राप्त करना करना चाहें। तो मूल्य तांबे के तावीज में १२।।) रु० चांदी के तावीज में १५) और सोने में ४०) लिये जाते हैं। रुपया पेशगी आने पर ही भेजा जावेगा पुस्तक "खजाना करामात" तथा रंगीला मुसाफिर के ग्राहकों को ≈) रु० रियायत होगी। दूसरों नहीं नोट करलें।

पता—राये साहब के० एल० शर्मा एन्ड सन्स रईस एन्ड बैंकर्स (R) जगाधरी (E.P.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—: खून की गंगोत्री :—

(सितम्बर मास पृष्ठ १५ से आगे देखें)

गये गांव की एक चिड़िया को भी गांव की चौहद्दी से बाहर जाने की सुविधा न मिल सकी वह मौत अकाल और महामारी और देवी प्रकोप से भी उग्र थी, वैसी मौत का खाका तमूरलंग और चगेजखां भी इस देश में आकर सचित्र नहीं कर पाए थे। इस मौतने राधापुरी पर आक्रमण करने वाले आततायियों को भी थोड़ी देरके लिये अपनी बेहोशी में दबोच लिया था। लेकिन वह मौत भी अपने घिनावने कृत्योंसे थक कर ठिठक गई, क्योंकि राधापुरी में अतिथि रुप में आये हुए यही २५ सन्यासी साधु जीवित बने रहे, धू-धू करते गांव के बीचो बीच जो मन्दिर था, उस में शिव-स्तोत्रका उच्च कंठसे जाप करते रहे। उस मन्दिर पर गोले बरस कर भी असहाय सिद्ध हुए। वे गोले उस दुःशासनकी तरह थे, जो मन्दिर ध्वजा के सतीत्वको चीर चीर न कर सके। उस मन्दिर के बाहर आग न लग सकी, क्योंकि उसके अन्दर यज्ञज्योति पूरी तरह ललक कर जल रही थी और गांव का मुखिया और उसकी पत्नी और उसका पांच वर्ष का बालक — यह तीनों रह रह कर घृतका अर्चन उस यज्ञ ज्योति को भेंट करने में सबसे अधिक उत्साहित थे। यह मन्दिर चार सौ मीलके इलाके में सब से बड़ा भैरों का मन्दर है।

इस समय सारे गांव में मकान और झोपड़े धू धू कर जल रहे थे और हर मकान अपने ही रहने वालों की एक एक सर्वग्रासिनी चिता बन गया था केवल मन्दिर में गांवके मुखिया चौधरी भुवन सिंह, उनकी धर्मपरायणा पत्नी बालेश्वरी देवी और उनका लाडला चन्दन यज्ञवेदी पर बैठे थे, पीछे २५ सन्यासियों का दल अपने अंग्रेज श्यामादास के साथ मौनभाव से मन्त्रोंका जाप कर रहा था। मन्दिर के पिछवाड़े लाल किले तीन शहजादियां भयसे त्रस्त भडारे में छिपी बैठी थी। देवमूर्तिके पीछे लालकिले की दो लाख की अमूल्य सम्पत्ति एक गठरी में अनाश्रित सी पड़ी थी। तोपों की गर्जन अब बन्द हो चुकी गाँवके दक्षिणी छोरपर अंग्रेजी टुकड़ीका सार्जेण्ट बारघम एक बरगदके पेड़के नीचे रात्रिके तीसरे पहरके अंधियारे में बैठा हुआ गांवके अग्निकाण्ड को हल्के २ मुस्कराते हुए देख रहा था। उसका सारा चेहरा पैशाचिक हंसीसे विकृत हो चुका था। वह सोच रहा था कि आज जो सम्पत्ति मिलेगी इस में से तीन चौथाई वह अपने पास रखेगा। उसने आज मात्रासे अधिक शराब पी थी। उसके पीछे मेरठ का एक गद्दार ठाकुर भीखासिंह खड़ा हुआ था। उसीने मेरठके देशप्रेमियों की निजी सम्पत्ति लुटवानेमें मदद दी थी और वही आज इस राधापुरी का कालदेवता बनकर आया था। उसने बड़ी चतुराई से श्यामादास की टोह पा ली थी पर उसकी इच्छाके विपरीत अंग्रेजोंने सारे गांव को जला दिया था। अन्यथा वह चाहता था कि राधापुरी उसे पूरी मिल जाए और वह यहीं पर अपना स्वर्ग बसाए ....

बरधामने अपने सभी देशी और अंग्रेजी सैनिकों को हुकम दिया कि सुबह तक कोई भी गांव के अन्दर न जाए। इधर मन्दिर का यज्ञ सुबह चार बजे पूरा हुआ तो श्यामादास ने कठोर मना अपने हाथमें खांडा लिया और अपने दल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को स्मितभाव से देखने लगा। सभी खड़े हो गए मन्दिर में एक भयंकर गर्जना हुई और छत परसे एक दूसरा खांडा श्यामादास के पैरों पर आ गिरा और धम धम खून से यही दस खांड़े और गिरे। एक खांड़ा तो भुवनसिंह और बालेश्वरीने संभाला और बाकी खांड़े उन सन्यासियों ने उठाए, जिन्हें श्यामादासका संकेत मिला। उन्होंने चन्दनकी यज्ञ वेदी के निकट ही बैठ रहने का आदेश दिया और सब मन्दिर के पिछवाड़े जाकर अंधियारे में अदृश्य हो गए। शहजादियां तो भयसे अर्द्धमृत सी बनी हुई कराहने की शक्ति भी खो बैठी थी। चन्दन इस अबोधावस्था में भी आंख बन्द किये भैरोंका स्तवन कर रहा था उस के चेहरे पर कहीं भी घबराहट नहीं थी।

बरघामकी इच्छा के विरुद्ध दो अंग्रेज मन्दिर पर सख्ती से पहरा दे रहे थे। जैसे ही दल के लोग बाहर निकले कि उन में से एक ने आगे बढ़कर उन्हें ललकारा। पर श्यामादास के एक खाड़े का आघात पाकर उसका सिर धड़से अलग जा गिरा। बस, अब वह भीखासिंह का रक्त भैरों जी के चरणोंमें और चढ़ाएगी।

श्यामादासने अब देखा, गांव के उस छोरपर तीन सौ सिपाहियों का आगे की पंक्ति में पंक्तिबद्ध खड़ा किए, अंग्रेज थोड़ा पीछे बैठे हुए दिन होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। वह गांव घेरा जाएगा, इस की सूचना श्यामादास को थी। उसने जानबूझकर भीखासिंह को दिल्ली की एक गली में जीवित छोड़ दिया था मेरठसे दिल्ली जानेवाले सिपाहियों ने अपना पहला घेरा राधापुरी में ही जमाया था गांववालों ने उनकी शाही दावतके साथ खातिर की थी। नाना साहबने अदृश्य होने से पूर्व बहादुर शाहके साथ यह व्यवस्था कर ली थी कि उसका वास्तविक कोष श्यामादास के हाथों में पहले राधापुरी में सुरक्षित रखा जाए. इस की चिन्ता बादमें की जाए। श्यामादास अपने सन्यासियों के दल के साथ यह काम बड़ी बहादुरी के साथ कर लाए थे। कर्नल टेलरके गुप्तचर किसी तरह श्यामादास का पता पा गये थे और उसी आधार पर उनका पीछा करते हुए आज राधापुरी को तहसनहस कर दिया गया था। गुप्त सूचना यहीथी कि दिल्ली और मेरठ का अत्यधिक शस्त्रागार यही गांवमें मौकेके लिये सुरक्षित रखा गया है। उसीके भयसे सारा गांव जला दिया गया था।

श्यामादासने अब अपनेदलसे कहा. 'साई' बस, हमारे पास दो घन्टे और हैं। सुबह होते ही दुशमन गांव में दल बलके साथछा जाएगा। पर राधापुरीअब श्मशान है श्मशानमेंयह दुशमन क्या जिन्दा रह सकेगा? वह तो बहादुर शाहका धन लेकर वापस लौट जायगा। पर हमतो श्मशान में ही जीवनकी साँस लेंगे। आजसे हम बस श्मशान का युद्ध लड़ेंगे। श्मशान का ही जीवन जियेंगे हमें संजीवनी इसी श्मशान में मिलेगी। साई, यह गांव अकेला नहीं जला है देश देशके हजारों गांवइन आततायियों के हाथों जले हैं पर इन गावों को जो आगजला रही है. वहतो हमारे घरों की आगहै। हमारे विश्वासघातकों के हाथों चुराई आगहै। लेकिन किसी दिन यह आग अपने आप प्रतिशोध लेगी। यह आग हमारे देश के साथ न्याय करेगी। पर इस आगको हमें समूचा पीना होगा अपने दिलों में भरकर मौकेके लिए बचाना होगा। बस, हम आगपीने का धर्म ग्रहण करें।......

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबतक भुवनसिंहने मृत अंग्रेजों की दोनों बन्दूकों को अपने हाथों में सम्भाल लिया था।

और श्यामादास ने खांडे से अपनी सीधी उंगलीसे जरा सा खून निकाल कर अपने साथियों के माथे पर टीका किया और कहा 'एक दिन राजा भागीरथ देश के जन मन की चिरपिपासा को शांत करने के लिए गंगाको पृथ्वीपर लाये थे आज देश की नसोंमें जैसे खूनका अकाल है। जो पुरखे पुरुषार्थी थे, वे फिरंगियों से लड़ते हुए खत्म हुए।हमारी आशाएं जिनमें केन्द्रित थी, वे भूनकर या फांसी पर लटकाकर शेष कर दिये गये जो नयी पीढ़ी है वह अपनी रगोंमें खून चाहती है तो आओ हस कर गंगोत्तरी का उद्गम खोल दें। और हमारा खून इसी लिए बहेगा कि हमारी खूनकी धारा बढ़े फैले और खूनकी भागीरथी बन कर सारे देश में छा जाए। फिरंगी जो भी खून बहा रहा हैं वह भी बेकार न जायगा।

एक ३० वर्षीय युवक गेरुआ वस्त्र में आगे बढ़ आया। श्यामादासने कहा 'साई' तुमहारे बाप ने दिल्ली और मेरठ में अपने ही भारतीयों को फांसीपर झुलाने का काम दुश्मनसे फी आदमी दो रुपया पाने के लोभ में किया है लेकिन जिस बरधामने जरा सा उत्तेजना में आकर तुम्हारे पिता का अपना किचेसे छद्रित कर दिया वह देखो सामने खड़ा है। उसी बहादुरशाह के बेटों को कबाबी बकरों सा जिबह किया है अपने होथों। यह मेरा खांडा लो। उसका शिकार आज तुम ही करोगे। हम सब के लिए वह त्याज्य रहेगा अस्पृश्य रहेगा।'

श्यामादास जरा रुका तो अर्द्ध मृतों और आग से जीवित झुलसने वालों का करुण क्रन्दन चारों और गांव में सुनाई पड़ने लगा। उसे सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते थे। पर यह सभी भविष्य की बात सोच रहे थे। साई का इशारा हुआ और बालेश्वरी को छोड़कर सब अपनी २ दिशा अदृश्य हो गये। बालेश्वरी ने कछारा कसा और मन्दिर पर चढ़ गयी वहांसे एक गुप्त झरोखे से वह अन्दर घुसकर अपने निश्चित स्थान पर जाकर बैठ गयी।

दक्षिणी छोड़ पर यही पचास पेड़थे और इस समय उनपर रहने वाले बन्दरों ने शोर-शरापा शुरू कर दिया था प्रेमा एक पेड़ पर चढ़ा और बन्दरों के शोर का लाभ उठाते हुए उस बरगद के पेड़पर जा रहा, जिसके नीचे बरधाम सूर्योदय की प्रतीक्षा में खड़ा था। वह सम्भाल कर नीचे उतर आया। उसने सुना भीखासिंह कह रहा था, 'साहब, यह मुल्क हिन्दुस्तान इन नवाबों और अमीर-उमरावों के बापदादों ने खरीदा नहीं था। वह हमारी मिल्कियत थी। हम उसे आप को देंगे तो अपने बापकी चीज देंगे। इस राधापुरी के मुखियाकी बेगम बालेश्वरी देवी हूर परियों के देश की है। खुदाने जैसे आजके लिए फकत आप के वास्ते उसे बचा छोड़ा है। मैं जानता हूं कि वह गोला बारीसे नहीं मरी होगी। उस मन्दिरमें वह छिपी होगी। साहब, आपको उसे एक रात अपनी मेहरबानी के साए में रखना होगा। कई लाख रुपये एक तरफ और वह बालेश्वरी एक तरफ ।'

प्रेमा अब जानपर खेलकर आहिस्ते से इतना नीचे उतर आया कि बरधाम की गर्दन उसके हाथों के नीचे थी। उस ने खांडा चलाया और बरधाम की गर्दन अलग जा पड़ी पलक झपकते पास में खड़े अंग्रेज सिपायियों ने भीखासिंह को किर्चो से घायल कर दिया। उन्होंने यही समझा

(शेष आगामी अंक में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां नरमुंडोंका शिकार खेला जाता है

—सरल—

फारमोसा ही एक ऐसा द्वीप है जो अपनी सुन्दरताके लिये प्रसिद्ध है। इस द्वीपके सुन्दर-सुन्दर दृश्य, अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य मनुष्य के मन को बरबस अपनी ओर खीच लेते हैं। दर्शक दूध जैसेसफेद पहाड़ी झरनों और मनोरम घाटी-यों को देख कर अपने आपको भूल सा जाता है। वहीं पर मैदानोंमें कुछ बस्तियां दिखाई दे जाती हैं जिनकी आबादी एक लाख बीस हजारके लगभग है। इन्हीं जंगली जातियों में नर घातकों की भी एक उपजाति है। इनकी सामाजिक अवस्थाका मूल आधार ही नरमुडों का आखेट है। इसे वे अपना मनोविनोद का एक साधन समझते हैं। ये लोग इतने खूंखार होते हैं। कि आपस में भी युद्ध करने लगते हैं। रहनेके लिए ये अपने मकानको बाँसों पर बनाते हैं। उन मकानों का प्रवेश द्वारा बहुत छोटा होना है। मजबूरी झुक्के उसमें घुसना पड़ता है। यदि कोई शत्रु उनके मकान में घुसने का यत्न करता है तो वह आसानी से भाग नहीं सकता है। बहुत से लोग जमीन के नीचे अपना घर बनाते हैं इनके सरदार अपना मकान जमीनसे काफी ऊंचा बनवाते है औरछप्पर भी डलवाते हैं।

फारमोसा द्वीपकी स्त्रियां वस्त्र बनानेके लिये प्रसिद्ध हैं। बिदेशी बड़े चावसे इनको इस्तेमाल करते हैं सच मुच ये पहनने में मुलायम और गर्म होते हैं खाने में ये बाजरा और चावल लेते हैं। घरका सारा प्रबन्ध स्त्रियों के हाथ में रहता है। ये लोग जानवर भी पालते हैं।

आपसी व्यवहार में ये लोगबड़े ईमानदार और अतिथि सत्कार में बड़े प्रवीण होते हैं। अतिथि की सेवामें ये जी जान लगा देते हैं। जब तक अतिथि रहता है इन लोगों का यही क्रम चलता है। वचन पालने में ये लोग इतने पक्के होते हैं कि प्राण रहते हुये उसे निभाते हैं।

ये लोग देवी देवता को नहीं मानते हैं। धर्म के स्थान पर ये अपने पूर्वजों की पूजा करते हैं इन का विश्वास है कि आत्मा को एक पुल पार करना होता है। जिस के नीचे काफी गहरा एक गडढा होता है और उस में जहरीले जीव जन्तु भरे रहते हैं।

उस गडढे को वही पार कर सकता है जिसने नरमुण्डों का शिकार खेला हो। जिस ने नरमुण्डों का शिकार नहीं किया हो उसकी आत्मा गडढे में गिर जायगी। उस गडढेके भीतरी भाग को ये नरक कह कर पुकारते हैं।

दुर्दिन या अकाल के समय ये लोग पहाड़ों पर गुफाओं में जाकर जोर जोर से गाते है और नृत्य करते हैं।

इन नरमुण्डों के शिकारियों में काटकर लाया हुआ मनुष्य का सिर बड़ा मूल्यवान समझा जाता है किसी भी पुरुषको विवाह करने का अधिकार नहीं है जब तक कि वह दो चार नरमु-डों का शिकार न कर ले। विवाह के अवसरपर पति अपनी पत्नी को नरमुण्डों को उपहारस्वरूप भेंट देता हैं। जिस किसी के परिवार में जितनी खोपड़ियां अधिक होती है वह परिवार उतना ही धनवान तथा वीर प्रतापी समझा जाता है।

ये लोग नये मकान में तब तक प्रवेश नहीं करते हैं जब तक कि उसकी नींव में चार पांच नरमुण्डे न डाले गये हों। अपने मकानकी दीवारों को ये नरमुण्डो से सजाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरमुंडों के शिकार को जानेसे पहले वे शकुन लेते हैं। स्त्रियां गांवसे बाहर एक ऊंचे स्थानपर अग्नि प्रज्वलित करती हैं, यदि अग्नि बुझ गई तो बड़ा अपशकुन समझा जाता है। उनके लौटने पर एक ग्राम सभा होती है। उनके लाये हुये नरमुंडों को सभा के मध्य में रखाजाता है। उन नर मुंडों के मुंह में खाना दिया जाता है और वे नृत्य करते हुये गाते हैं।

विवाह की प्रथा इन लोगों में बड़ी आसान है। वर कुछ नरमुंडों को एक पोटली में बांध कर बधूके घरपर छोड़ आता है। यदि वधूने उसे स्वीकार कर लियातो सगाई हो जाती है। विवाह केदीन वर तथा वधूके पैरो में छूरा मारकर रक्त निकाला जाता है। उसी समय एक भोज दिया जाता है और वधू वरके साथ अपनी सुसराल चली जाती है।

॥ कफ हरना ॥

यह हर प्रकार की खांसी के लिये अजीब औषधि है यदि आपको खांसी कीवजह से रात को नीद न आती हो तो आप इसे अवश्य सेवन करें पहली ही खुराक में अप इसका चमचत्कार देख कर दंग रह जायेंगे। मूल्य ४० गोली का १।) रू० पता—राय साहब के० एल० शर्मा एन्ड सन्स (R) जगाधरी (E. P.)

गांधी आओ अपने देश

—शिव प्रसाद 'कमल'—

देखो महा प्रलयकी ओर
विश्व हो रहा अग्रसर आज !
सभी जा रहे नाशकी ओर
आज विज्ञान रहा क्या साज
सत्यका मार्ग पुनः बतलाओ
दे दो फिर अपने उपदेश !
गांधी आओ अपने देश ?

आसुरी जमी नशेमें चूर
मार्ग में रहा न वह अलोक ?
आकर फैलाओ फिर ज्योति
मिटाओ मानवता का शोक ?
अहिंसा, सत्य, प्रेमका मन्त्र
मिटादे घर-घरका सब क्लेश ?
गांधी आओ अपने देश ?

देश को तुमने किया स्वतंत्र
स्वार्थ कर सके नफिर परतन्त्र ?
विश्वका बन कर मुकुट किरीट
सफल हो अपना शाशन तन्त्र !
गरीबों दलितों के दुःख-दर्द
रहें ना किसी दशामें शेष ?
गांधी आओ अपने देश ?

शेष १५ पृष्ठ का

वे मुझे घुमाया करते हैं,
मैं जी बहलाया करती हुं।
मन में कुछ धीरज धरती हूं॥
अब मेरे मित्र मिनिस्टर हैं, साथी सब ऊचे अफसर हैं।
जिन जिन से मुझे मिलातें हैं, वेसब मेरे अब अनुचर हैं॥
वे हाथ बढ़ायां करते हैं,
मैं हाथ मिलाया करती हूं।
मन में शरमाया करती हूं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एम० एल० ए० की पत्नी

(श्री कटु मधु)

मेरे पति जी एम० एल० ए० हैं, उन पर लीडर शिप की धुन है।
वे कहते कुछ करते कुछ हैं, बकवास बना उनका गुण हैं।
वे लेक्चर झाड़ा करते हैं।
मैं बैठी पगुराया करती हूं।
हुँ,हूं कर हामी भरती हूं।

जबसे चुनाव में आये हैं, कुछ सनके सनके लगते हैं।
बातें करते बहकी बहकी, सोते कम ज्यादा जगते हैं॥
वे करवट बदला करते हैं,
मैं चाय पिलाया करती हुँ।
कुछ कहने में भी डरती हूँ॥

कहते देखो मैं लीडर हुँ, एम० एल० ए० क्या अफसर हुं।
मंत्री मुझसे लेते सलाह, समझो मैं हाफ मिनिस्टर हुं॥
वे शान बघारा करते हैं,
मैं मन बहलाया करती हूं।
यों ही उनका दम भरती हूं॥

वे कार नयी ले आये हैं, रक्खा उसका चालक भी।
जो साफ किया करता गाड़ी, आया है नट खट बालक भी॥
वे खर्च बढ़ाया करते हैं,
मैं कर्ज सधाया करती हुँ।
कुछ कहने में भी डरती हुं।

कहते पहनों सलवार प्रिये, खुद हांको अपनी कार प्रिये॥
युग आगे है तुम पीछे हो, दो कदम बढ़ो इस बार प्रिये॥
वे सीख दिया करते मुझको,
मैं सिर खुजलाया करती हुँ।
हूं,हूँ, कर हामी भरती हूं॥

कहते हैं सीखो बोल डान्स, है सुन्दर तुमको मिला चान्स
इस बैक वार्ड भारत को तुम, दो बना स्विटजरलैंन्ड -फ्रास॥
मैं उनके इस पागलपन पर,
आंखें बरसाया करती हूं।
फिर भी हां कह दम भरती हुँ॥

कहते हैं मिलों मिनिस्टर से, ऊंचे ओहदे के अफसर से।
जिस ओर कार से निकल पडो, जनता कांपे थर थर डर से॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माला का सन् १९५७ का विशेषांक 'पद्मप्रभाकर'

यह ३०० वर्ष का प्रचीन ग्रन्थ है, विद्वान संग्रहकार ने ऐसे २ ग्रन्थों का संग्रह दिया है जिस के नाम भी सुनने को नहीं मिलते। ऐसे २ योग हैं जिन्हें वैद्यसमाज बिल्कुल नहीं जानता ऐसे सद्य फलप्रद हैं कि प्रयोग करने पर चकाचौंध होना पड़ता है इस में सभी रोगों पर सद्य फलप्रद योग दिये गये हैं जिन्हें जानने से वैद्य माला माल हो सकते हैं, व्यापारी पढ़ कर लखपती बन सकते हैं सद्गृहस्थ सैंकड़ों रुपयों को जो वैद्य डाक्टरों को देने पड़ते हैं, उन्हें बचा सकते हैं और बहुत काल तक की पीड़ा के सहन को हलका कर सकते हैं। मोतिया बिन्द, जलोदर कुष्ट प्रमेह के २० भेद तो ऐसे हैं जो देखे सुने नहीं जाते पर लक्षण देखे जाते हैं। बड़ी सुन्दर चिकित्सायें हैं।

प्रसंशापत्रों की भरमार है। इसके सिवाय कुष्ट चिकित्सा आश्रम के परीक्षित १२५ योग चार २ आने वाले भी निःसकोच दे दिये गये जिनकी जानने की फीस २॥-२॥ रुपया थी इस प्रकार ३२५ रु० के योग तो मिलही जाते हैं मुफ्त और सर्व रोगोंके चमत्कार के योग भी इस अंक का दाम २) है

पर माला के ग्राहकों को मुफ्त दिया जाता है इस प्रकार जनवरी का विशेषांक 'पद्मप्रभाकर २) रु० का फर्वरी का स्वर्ण बन्सत मालती अङ्क १) का इस प्रकार ३) रु० का माल दो अङ्कों में ही मिल जाता है १॥) रु० में १० अंक पढ़ने को मिलेगें इनमें काकचंडीश्वर तंत्र का सरल सुबोध हिन्दी भाष्य रहेगा जो ससांर से दरिद्रता मिटाने की गारंटी होगा। सोना-चांदी बनाने के योग देगा, एक अंक हजारों रुपयो का हो गा अतः आज ही ग्राहक बन जावें।

❀ "अनुभूत योगमाला" का स्वर्ण बसत मालती अंक ❀

इस अंक ने भारत वर्ष में क्रान्ति उपस्थित कर दी है। लोग देखते हैं वाह वाह कहते हैं आप भी देखीये—कितने बड़े अध्ययन औरमनन के बाद सैंकड़ों वर्षों से स्वर्ण बसन्त मालती लुप्त थी मनमाने ढंग से लोग इसे बनाते थे इस घोर अन्याय को दुर करने के लिये—

१—नवीत किसे कहते हैं ? दूध से निकले हुये को या दही से निकले हुये को।

२—नवनीत कितना तोल में डालना चाहिये ?

३—नीबू रस की मात्रा कितनी होनी चाहिये ?

४—काली मिर्च डालना या धुली हुई सफेद मिर्च ?

५—वैज्ञानिक ढंग से नवनीत और नीबू रस क्या प्रभाव करते हैं।

क्यों इसकी योजना शास्त्रकारों ने की है।

यदि आप को जानना है तो इस ग्रन्थ को पढ़ना चाहियें बड़े मार्के के साथ पद पर शास्त्रीय प्रमाणों से उपरोक्त विषय स्थापित किये गये हैं इस अंक का मूल्य १) रुपया है पर ग्राहकों को मुफ्त दिया जाता है आज ही४॥)रु० भेज कर ग्राहकों में नाम लिखा लीजिये वर्ना पछताना पड़ेगाइस अङ्ककी बड़ी भारी बिक्री है सम्भव है दूसरा सस्करण हमें निकालना पड़े तोआप प्रतीक्षा मेंही रहेंगे

मैनेजर—अनुभूत योगमाला आफिस बरालोकपुर, इटावा (यू. पी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगाने का पता–यू० पी० केमीकल वर्क्स, २० अलीगढ़ ।

112500

थर्मामिटर मुफ्त

नयन सुधार

❁ श्याम काजल ❁

भीम सैनी कपुर, ममीरा आदि आदि आंखों की बढ़ीया औषधियों से बना हुआ परीक्षित और रजिस्टर्ड है

आंखों का दुखना, चिपचिपाहट, रोहे, सुर्खी, खुजली, पानी का बहना, दर्द धुन्ध आदि नेत्रों के समस्त रोगों को दुर कर ज्योति बढ़ाने के काम में लाया जाता है। प्रति दिन लगाने से आंखों में कोइ रोग नहीं होने देता। छोटे बड़े सब के लिये लाभ दायक है। एक डिब्बी पूरी गृहस्थी को वर्षों काम देता हैं। अगर आप अपने बच्चों का नेत्र रोगों से बचाना चाहते हैं तो श्याम काजल लगाइये। आंखों को निरोग और सुन्दर बनाता है। मूल्य =) आना डि०, ३६ डिब्बा कमीशन काट कर कुल ५) रु० में दी जावेगी, और साथ में सच्चा आधी मि० का एक थर्मामिटर भी मुफ्त देंगे। २ रु० पेशगी भेजें

सुख मार्ग

❁मासिक पत्र ❁

सुख सम्पति पाने के लिये धार्मिक सामाजिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी सामयिक समस्याओं से ओत–प्रोत ३२ वर्ष से भारतियों में जागरण का शंखनाद करने वाले सचित्र ' सुखमार्ग को अवश्य पढ़ें यह बड़े २ विद्वानो के लेख लेकर हजारों की संख्या में छपता है। वार्षिक मूल्य केवल १) रु० नमूना मुफ्त।

व्यवस्थापक— सुखमार्ग कार्यालय, केमीकल प्रेस, मोहन गेट, अली गढ़ (U P)

अब तो अन्धे भी देखने लगे। कैसे ?

Netri नैत्री

से– नैत्री, एक अद्भुत शक्ति शाली आंखों के सब रोगों को जादू की तरह से उड़ाने वाली औषधि है धून्ध, जाला फोला के अलावा मोतिया बिन्द तक को बगैर औप्रेशन लाभ होता है दुखती आंखों को तो प्रथम दिन ही लाभ हो जाता है। थोड़े दिनों के व्यवहार में चशमा तक लगाने की आदत छूट जाती है। आंखों की ज्योति आश्चर्यजनक रुप से बढ़ती है स्त्री बच्चे बूढे सब ही सेवन कर सकते है प्रत्येक घर में हर समय रखने लायक अदभुत औषधि है। यह दो प्रकार हमारे यहां बनती है।

मुल्य इस प्रकार है — न० १ (स्पेशल) अमीरो के लिये जिसमें सोना मोती, ममीरा आदि मूल्यवान पदार्थ पडते हैं प्रति तोला १५) रु० ६ मासे ८) रु० ३ मासे नमुना ५)रु० तथा न० २ जिस में मूल्यवान जडी बुटियां है प्रति तोला ५) रु० महसूल ११) अलग है नोट — कम से कम ६ मासे न० १ वाली के साथ चांदी की सलाई मुफ्त दी जाती है न०२ के साथ यदि सलाई चाहोगे तो १) अधिक देना होगा। नोट कर लें।

पता:- रायसाहब के० एल शर्मा एण्ड सन्स रईस एण्ड बैंकर [R]जगाधरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार को चकित करने वाली दवा

'अमृत फल'

जिनके यहां कन्या ही पैदा होती हों वह एक बार परीक्षा करके देखें। गर्भ रहने पर चौथे मास से सेवन करावें–पुत्र होगा।

मूल्य मय एक यंत्र के २५) रु०।

... अविष्कृत

स्वप्नदोष नाशक

औषधि को सेवन करके अपने शरीर में लगे हुए घुन को नष्ट करिये। यह दवा ३५ साल से लाखों रोगियोंपर अपना जादू सा असर दिखा चुकी है। पूरा कोर्स २४ दिन का मूल्य ६॥) रु० आधा कोर्स ३॥) रु०

License to Post without Prepayment
License No. 10 Punjab

RANGILA MUSAFIR
Registered No. E P. 374

Monthly 'RANGILA MUSAFIR'
JAGADHRI (*Punjab*)

To
Shri... [illegible]
Vill...
P.O. Gurukul Kangri
Distt. (Hardwar)

खूनी और बादी

दोनों प्रकार की बवासीर से आयु पर्यन्त छुटकारा दिलाने वाली शक्तिशाली दवा

❀ बवासीरी ❀

पुरा कोर्स ३० दिन का मूल्य ६॥) रु०।

रोजगार नहीं केवल परोपकार

चित्रकूट बूटी ' दमा ' और पुरानी खांसी के रोगियों - आखिर कब तक तपड़ते रहोगे क्यों नहीं हमारी भारत विख्यात महौषधि चित्रकूट बूटी किसी भी पुर्णमाशी को आश्रम में आकर सैकड़ो रोगियों के साथ मुफ्त (धर्मार्थ) सेवन करके एक ही मात्रा में इस दुष्ट रोग से सदा के लिये पीछा छुड़ावे। यदि किसी कारण वश यहां न आसकें तो २॥) रु० मात्र विज्ञापन आदि खर्च मनी आर्डर से भेजकर तुरन्त मंगालें जिसमें आने वाली पूर्ण माशी को अपने घरपर ही सेवन करके पूरा २ लाभ उठा सकें। इस की वी० पी० नहीं भेजी जाती है नोट करलें। जल्दी करें जिस में पूर्ण माशी से पहले दवा मिल जावे

दर्द नाशक

यह एक आश्चर्य जनक अविष्कार है। शरीर के किसी भी अंग में पाव से लेकर सिर तक किसी प्रकार का दर्द हो जादू की तरह से दर्द को भगा देने में राम बाण है। इस आश्चर्य जनक औषधि की एक शीशी घर में रख लेनेसे समयपर दसों रुपयों का काम देती है मूल्य प्रति शीशी १।) रु० दर्जन का १५)रु० महसूल अलग।

नया रोग २४ घन्टे में साफ **"सुजाक नाशक"** का इस्ते माल पुराने से पुराने सुजाक को भी एक हफते में जड़ से उड़ा देता है अवश्य परीक्षा करें पुरा कोर्स १२ दिन का मूल्य ४) रु० महसूल अलग।

पता—राय साहब के० एल शर्मा एन्ड सन्स रईस एण्ड बैंकर्स (R) जगाधरी (E P.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पं० प्यारे लाल शर्मा सम्पादक प्रिंटर पब्लिशर 'रंगीला मुसाफिर' जगाधरी ने अशोक प्रिंटिंग प्रेस जगाधरी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्व धर्मान् परत्यज्य मामेक शरणं व्रज।
अहंत्वा सर्वपापेभ्यों मात्तयिष्यामि मा शुचः॥

संस्थापक:
राय साहब के० एल० शर्मा
एन्ड सन्स
जगाधरी।

संचालक:
पं० प्यारे लाल जी शर्मा
खानदानी वैद्य (रजि०)
रिटायर्ड सुपरवाइजिंग आफिसर
सर्वे डिपार्टमैन्ट

सफर ८ वार्षिक मूल्य २) रु० जगाधरी १५ नवम्बर १६५७ पड़ाव ४

१	वीर भोग्या वसुन्धरा	(गीत)	पृष्ठ १
२	खून की गंगोत्री	(कहानी)	” २
३	राष्ट्रपिता महात्मा गांधीं की अमर वाणी		” ४
४	हट का परिणाम	(कहानी)	” ५
५	दुनिया मुझ को याद करेगी	(गीत)	” ८
६	उल्टा चोर कोतवाल को डांटे	(कहानी)	” १२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(टी० बी०) 'तपेदिक' चाहे फेफड़ों का हो या अंतड़ियों का बड़ा भयंकर रोग है। (T.B.)

(१) पहली स्टेज	(२) दूसरी स्टेज	(३) तीसरी स्टेज	(४) चौथी स्टेज	अन्तिम स्टेज
मामूली ज्वर और खांसी	ज्वर खांसी की अधिकता	शरीर सूखना ज्वर खांसी की भयंकरता	सभी बातों की भयंकरता शरीर पर वर्म दस्त आदि का शुरु हो जाना	रोगी की मौत और भयंकर जर्मों का इधर उधर फैलना
जबरी	(JABRI)	जबरी	(JABRI)	

इस दुष्ट रोग पर भारत के पूज्य ऋषियों की अनोखी खोज 'जबरी' है।

क्या अभी तक आपने भारत विख्यात महौषधि "जबरी" का नाम नहीं सुना जो इस दुष्ट और भयंकर रोग से जिन्दगी और मौत की कशमकश में तड़प रहे हैं। देखिये भारत के कोने २ से लोग कया कहते हैं।

डाक्टर भी आश्चर्य करने लगे—श्री राम नाथ शर्मा Retd. A. .S. मोह० सुती (इटावा) से लिखते हैं कि हमारे साले श्री गजराज सिंह शर्मा सिगनल फिटर हापुड़ (मेरठ) को मैडिकल आफिसर मुरादाबाद ने टी० बी० बताया था। आपकी दवा जबरी के सेवन से वह बिल्कुल अच्छा हो गया। डाक्टर लोग इसे देख कर दङ्ग रह गये कि इतनी जल्दी कैसे अच्छा हो गया मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूं। और देखिये- (२) ला० कांशी प्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहाबाद) (३ बाबू मुन्ना लाल स्टोरकीपर सिंभावली शूगर मिल पो० बक्सर (मेरठ) (४) बाबू राम सिंह घर नं० ६१ रीठा मन्डी देहरादून (५) श्री तोसलहुसेन रईस मुकाम मुसेपुर पा० भरतकुण्ड जिला फैज़ाबाद) (६) डा० ठाकुर सिंह नेपाली मुकाम कटैया पा० हरलखी जिला दरभङ्गा (७ राम खेलावन राम भीखुराम पा० बाजार गुसाई जि० आजमगढ़ (८) चन्द्रमणि पांडे मुकाम कुरेहडा पो० महनाजपुर जि० आमजगढ़ आदि इसी प्रकार हजारों रोगियों का कहना है कि जबरी दवा नहीं है बल्कि रोगी को काल के भयंकर गाल से बचाने वाली ईश्वरीय शक्ति है। जबरी भारत के पूज्य लंगोट बन्द ऋषियों की अद्भुत खोज और आयुर्वेदिक विद्या का एक अनोखा चमत्कार है। यदि आप सब तरफ से नाउम्मेद हो चुके हों एक्सरे (X-Ray) आदि के बाद डाक्टरों हकीमों ने भी जवाब दे दिया हो तो भी एक बार परमात्मा का नाम ले कर 'जबरी' की परीक्षा जरुर करें परीक्षार्थ ही दस दिन का नमूना रखा गया है। जिस में तसल्ली हो सके।

(टी० बी०) तपेदिक और पराने ज्वर के हताश रोगियो ! अब भी समझो (T. B.)

अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत। इस लिये तुरन्त आडर देकर रोगी की जान बचावें। सैंकड़ों डाक्टर, हकीम वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं तार आदि के लिए हमारा पता केवल "जबरी" जगाधरी) लिख देना काफी है तार से यदि आडर दें तो अपना पूरा पता दें।

मूल्य इस प्रकार हैं: जबरी स्पेशल न० १ अमीरों के लिये जिस में साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिये सोना, मोती अभ्रक आदि की मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं। मूल्य पूरा कोर्स ७५) नमुना १० दिन के लिये २०) रु० जबरी न० २ जिस में मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं पूरा कोर्स २०) नमूना १० दिन के लिये ६) रु० महसूल आदि अलग है। आर्डर में पत्रका हवाला तथा जबरी न. १ या २ तथा अपना पता साफ २ लिखें पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिये मूल्य मनी आर्डर से भेजें। यदि Air mail से मंगवाना हो तो २) रु० खर्च अधिक भेजें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पता—राय साहब के० एल० शर्मा एन्ड सन्स रईस (R) जगाधरी (E.P.)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर भोग्या वसुन्धरा

—रचयिता: केदार नाथ बेकल एम. ए. एल. टी.

अमृत पुत्रो तुम आये हो इस दुनिया में जय पाने को,
अन्तर तम के कुत्सित नभ में एक दिव्य ज्योति फैलाने को।
तुम विश्व-नियन्ता ईश्वर की एक सर्वोत्कृष्ट विभूति हो,
उट्ठो! उट्ठो! चेतो! चेतो! कुछ काम करो, कुछ नाम करो।
क्यूं नियति को ठुकराते हो विपदाओं के आवाहन में,
मङ्गलमय शिव संकल्पों से, भर दो अनन्त-रस जीवन में।
तुम अपने भाग्य विधाता हो, तुम सफल सृष्टि निर्माता हो,
तुम सुख समृद्धि दाता के हो; दैवी वैभव के त्राता हो।
क्यूं दीन हीन निर्बल बन कर, दुर्लभ जन्म गंवाते हो,
अपने अन्तर बल को तोलो, फिर देखो क्या हो जाते हो।
जो थक कर पथ में बैठ रहा वह जीवित मृतक समान बना.
जो दुख से डर कर भाग गया, दुर्दैव का वह बलिदान बना।
दुतकारों के टुकड़े खाकर, कुत्ते भी यूं जी लेते है,
वीरों का मरना जीवन है, अमृत्व-सुधा पी लेते हैं।
तुम शेरों की सन्तानें हो तुम परम शक्ति की राशी हो,
तुम आत्मा हो, परमात्मा हो, अक्षय अनन्त अविनाशी हो।
मृत-प्राय बने हो क्यों चेतो! तुम दिव्य ज्योति के हो भण्डार,
मन की विद्युत उत्तेजित कर. कर नव जीवन का संचार।
आवर्ण अविद्या का तज दो, दृढ़ निष्ठा, दृढ़ विश्वास रहे,
सीधे जय पथ पर बढ़े चलो, हां चले चलो, जब है निश्चय।
तुम धीर, वीर, उत्साही हो, अघ ओघ. व्यथा हर सकते हो,
तुम महर्षियों के वंशज हो, जो कुछ चाहो कर सकते हो।
विपदाओं पर हँसना सीखो, उपकार सुधा पीना सीखो,
औरों के लिए मरना सीखो अपने बल पर जीना सीखो।
जीवन जटिल समस्यायें, पल भर में हल हो जायगी,
सब ऋद्धि सिद्धि आकर तुमको प्रतिभा सम्पन्न बनायेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—: खून की गंगोत्री :—

(अक्तूबर मास पृष्ठ १२ से आगे)

कि भीखासिंह ने ही बरधाम को मारा है। और वे उसे अपनी गोली का शिकार बनाने ही जा रहे थे कि ईकटी सरदार मारूराव ने 'नो किल' नो किल कर सब को रोक दिया और उसने समझाया कि इस गांव में भैरोजी का मन्दिर है उसकी खूनकी प्यास अभी मिटी नहीं है. हमें इस नराधमकी बलि उसी मन्दिर में देने दीजिये। भीखासिंह ने बधी हुई मुश्कों में भी चीखते हुए सातवें आसमान को सिर पर उठा लिया। वह कहता जा रहाथा कि मैंने नहीं मारा, मैंने नहीं मारा, पर हर बार चिल्लाने पर एक-न-एक अंग्रेज सिपाही उसे अपने बूटोंसे ठोकर मारता था और उसे अपनी किर्च से घायल करता था। चार हिन्दुस्तानी सिपाहियों ने उसे घसीटना शुरु किया। अब हल्का सा झुटपुटा ही रह गया था। लोग गांव में सदलबल आ गये और मन्दिर की ओर बढ़ने लगे। वहां देखा, दो अंग्रेज के सिर धड़से अलग पड़े हुए थे और उन के हाथों की बन्दूकें भी गायब थी। मौत का सरूर आततायियों की रगोंमें छा गया। पर मारूराव ने जैसे ही भीखासिंह की मुश्कें खोलकर उसकी बलि देने के लिए मन्दिर का द्वार खोला और पहले भीखा सिंह को खड़ाकर उसे अन्दर दाखिल किया कि अन्दर एक खांडा चला और भीखा सिंह की गर्दन अलग जा गिरी। मारूराव लड़खड़ा कर बाहर आ गिरा।

लेफ्टिनेण्ट हुडलने कड़क कर सारे मन्दिर को घेर लेने का हुक्म दिया। वे पांच सौ आततायी घेरा बनाकर मन्दिर के चारों तरफ छा गये कि पीछे से गोलियां आने लगी लगी और देखते २ यही सौ देशी-विदेशी सिपाही धराशायी होकर कलपने लगे। एक भगदड़ सी मची पर भुवनसिंह बन्दूक चलाने का अपना कमाल जैसे आज के लिए ही खेलनेको रख छोड़ा था। उस ने एक बार बन्दूक चलाने का काम जारी रखा। गांव की चौहद्दी से बाहर एक भी सिपाही न जा सका। यही बीस मिनट में सारे आदमखोरी आतताई ढेर कर दिये गए।

गांव अब भी धू-धू जल रहा था, जैसे उस की आत्मा अपने हाथों शरीर को चीर कर बाहर आई हो और आग की लपटों की शक्ल में चीख रही हो। उस पांच हजार की आबादी के गांव को श्मशान बनाने वाले आक्रामक अब इस तरह मृत पड़े हुए थे, मानों श्मशान में उल्टे लटकने वाले गिद्ध होश भूलकर जमीन पर चित्त पड़े हों।

श्याम दास ने 'भैरो की जय' बोलते हुए मन्दिर के द्वारपर सबको पुनः एकत्रित किया। बालेश्वरी देवी अपने लाडलेको गोदी में लिए बाहर निकल आई। वे शहजादियां अब होश में थी और स्वस्थ थी। श्यामा दास ने कहा 'साईं' हमें यह गांव अब छोड़ना होगा। जीनत बेगम का मैंने वचन दिया था कि तुम्हारे पोतों के हत्यारे बरधामको मैं जीता नहीं रहने दूंगा। तुम नहीं जानते, यह नराधम एक रात जीनत बेगम की अस्मत भी लेने पर उतारू हो गया था, पर लाल किले में आई हुई सभी मेमों ने उसका इस इरादे का डटकर मुकाबला किया था।

बालेश्वरी ने कहा 'साईं' आप सब जाओ। चन्दन आप के ही जिम्मे रहा। मैं इस मन्दिर में ही रहूंगी। औरत जात हो कर दर-दर की खाक छानना मुझे शोभा न देगा। आहुति इस कचन काया की चढ़नी है, तो यही चढ़ लेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्दन अब चीख उठा, 'मां........।'

बालेश्वरी अपना सारा माधुर्य उड़ेल कर कहा, बेटा तुम जिस घर में जाओगे, वहां ही तुम को एक मां मिलेगी। इस देश में मांओंकी कमी नहीं है, उनका अनका अकाल अभी इस देशमें नहीं आया है। और, साई, मेरी एक बात इस चन्दन को जरुर सिखा देना हम घृणा और द्वेष की आग से सारे जीवन न खेलें। नये जीवन की साधना में ही जुटें। उत्तजना और घृणा में तो हम परास्त होते जायेंगे खत्म होते जायेंगे। नई औलाद इस रास्ते अब और न चले!' और इतना कहकर उसने अपने पति के चरणों की धूल अपने माथे में लगाई। भुवन सिंह ने सिर्फ इतना ही कहा राधा' मैं जानता हूं, तुम जीवित रहोगी। यह गांव तुम्हारे हाथों के नीचे फिर हरियायेंगे।

बालेश्वरी अब अपने उद्वेगको न रोक सकी बोल ही तो उठा, जो यह देश पूरा श्मशान कब बना है यह गांव ही नहीं, जहां भी आग लगा है वहां जीवन की वर्षा तो होकर ही रहेगा। मेरी बहनों (शहजादियों से उसने कहा) साई की सेवा करना वह तुम्हारा सगा भाई है।

साई ने तत्काल ही उत्तरकी ओर कूच कर दिया। बालेश्वरी एक टक जानेवालों को देखती रही। फिर उसने इर्दगिर्द अतिताईयों की लाशों को देखा। जलते गांव को देखा। गांवके उस छोरपर खड़ी हुई तोपोंको और अस्त्रशस्त्रों के बक्सों कोदेखा। अब इधर क्षितिज पर उगते हुए सूर्य को देखा। वह एक रात इतना उन्माद लेकर क्यों आई। इसे क्या हाथ लगा? और उसने देखा सब घरों से आज कैसा मनहूस धुवां उठ रहा है। रोज तो गृहणियों के चूल्हे इस समय तक जल चुके होते थे ओह: आज सारा गांव एक बड़ा चूल्हा ही तो बन गया है, जिस में जीवित मनुष्य भूना गया है।

उसने शीघ्र शीघ्र मृत सिपाहियों की बन्दूकें और तलवारें एकत्र करना शुरु किया। बटोर २ कर वह उन्हें मन्दिर के गुप्तकक्ष में रखने लगी। पांच सौ सिपाहियों के शस्त्र एकत्र करते २ वह थक गई लेकिन आज उसमें एक नयी स्फूर्ति थी जसे ही उसने मारूराव की बन्दूक और तलवार खालोतो उसने हलकसे आंखें खोली। उसके प्राण अभी बचे थे। उसने कराहते हुए कहा, मां पानी एक तीव्र घृणासे, विद्वेष से उफनकर पहले उसने उस ओर देखा भी नहीं और जल्दी से वह मन्दिर में जाने को हुई। पर नहीं, वह रुकी अभी यही आध घण्टा पहले उसका लाडला चन्दन उससे बिदा होने से पहले मां कहकर चीख उठा था। यह ४५ वर्षका सिपाही जैसे चन्दनके स्वरमें ही मां बोल रहा है। उसने यथास्थान बन्दूक और तलवार रखकर मन्दिर से पानी ला कर उसे दिया अपने हाथों उसे घसीट कर एक पेड़की छाया में सुला दिया। दो सिपाहियों के कपड़े निकाल कर उसने घायल सिपाहीके सिरहाने तकिए बनाकर रख दिए। मारूराव ने रुक-रुक कर कहा, "मां, मैं जान गया था कि तुम्हारा ही खांडा नीलम सिंह को खा गया जरा अपना हाथ मेरे माथेपर रख दो तो मेरी सद्गति हो जाए।"

बालेश्वरी की आंखें गीली हो आई। उसने बलात अपना हाथ मारूराव के मस्तकपर रख दिया मारूरावने जैसे अपनी बात कही, मां तुम

(शेष आगामी अंक में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतोत्थान के सफल स्वप्नद्रष्टा—

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की अमरवाणी

त्याग का आदर्श

'जीवन-दान सर्वश्रेष्ठ दान है। जो व्यक्ति वास्तव में यह दान देता है। वह सारी शत्रुता को निरस्त्र कर देता है बलात् त्याग त्याग नहीं है।"

"जिस राष्ट्र में असीम त्याग की क्षमता होती है, वह निस्सीम शिखरतक उड़ने में समर्थ होती है। त्याग जितना ही विशुद्ध होता है, उतनी ही तेज उन्नति होती है।"

"किसी एक निरीह व्यक्ति का आत्म-त्याग ऐसे लाखों व्यक्तियों के त्याग से अधिक शक्तिशाली होता हैं, जो दूसरों को मारने में मर जाते हैं।"

"निरीह व्यक्ति का स्वेच्छा-प्रेरित उद्दण्ड निरंकुशता का सबसे शक्तिशाली प्रत्युत्तर है। इससे बढ़कर किसी अन्य प्रत्युत्तर की कल्पना परमात्मा या मनुष्य द्वारा अभी तक नहीं की जा सकी है।"

"जब तक त्याग खुशी से न किया जाये, वह व्यर्थ है। त्याग और उदासीनता का साथ नहीं। त्याग का अर्थ ही है— 'पवित्र करना'। जो अपने त्याग के लिए सहानुभूति की अपेक्षा करता है वह मानवता का निकृष्ट उदाहरण है अपने त्याग पर खेद नहीं करना चाहिये इसी तरह का त्याग अपनी पवित्रता खो देता है और दबाव पड़ने पर नष्ट हो जाता है अपने लिए हानिकारक वस्तुओं का ही त्याग किया जाता है, अतः त्याग करने के बाद आनन्द होना चाहिये।

सच्चे त्याग में सारा कष्ट केवल एक ही पक्ष में होता है। ऐसे त्यागी को दूसरों को मारे बगैर मर जाने, जीवन को खोकर जीवन पाने की कला में प्रवीण होना पड़ता है।"

'सत्याग्रही को सदैव अपने चेहरे पर मुस्कान लेकर बगैर प्रतिकार या खेद की भावना के साथ मृत्यु का आलिंगन करने के लिए तैयार रहना चाहिये।'

★ ★ ★

'भूदान-यज्ञ के' प्रवर्त्तक—

आचार्य विनोबा भावे का सन्देश

"ज्ञान-प्रचार तो तब होगा जब ज्ञानी लोग घूमेंगे। निरन्तर पर्यटन करने वाले गांव गांव जायेंगे तभी ज्ञान का प्रचार होगा। शहर में लोगों के पास पुस्तकें हैं, लेकिन अगर वे देहात में नही जायेंगे तो ज्ञान नहीं फैलेगा। छोटे गांव में जो पढ़ना लिखना जानता है, वह शहर की तरफ दौड़ता है। लेकिन असली ज्ञानी तो शहर में नही होते। ज्ञानी तो खुली हवा में, सूर्य की किरणों में रहते हैं। जहां ऊपर आसमान हैं, नीचे खेत है, जिसमें लक्ष्मी निर्माण हो रही है, जहां छोटे २ काश्तकार हैं, वहां ज्ञानी रहते है। तो जब देहात को उठाना है तो वहां सेवा के खयाल से लोगों को जाना चाहिये। हमारा दारोमदार इस लिये छोटे लोगों पर है, क्यों कि वे भक्त होते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-: हठ का परिणाम :-

— सुशीला शर्मा, नई सड़क, दिल्ली —

मोहनलाल और सोहन दो ग्रामीन भाई २ थे उनमें बाल्यकालसे ही भ्रातृ-प्रेम इतना अधिक था कि वे दोनों साथ साथ खाते पीते, पढ़ते-लिखते खेलते और साथ साथ ही सोते थे। अतः उन की शिक्षा-दीक्षा होने के कारण वे साथ साथ ही फौज में भरती हो गये और परिणाम स्वरुप वे रिटायर्ड भी साथ साथ ही हुए।

उन दोनों भाइयों में एक दूसरे के प्रति अधिक स्नेह था। परन्तु उनकी धर्म पत्नियों में तनिक भी न पटती थी और विशेष कर सोहन कीधर्मपत्नि अत्यन्त ही कुटिल थी। वह जब कभी उसका पति छुट्टी पर आता तो अपने ज्येष्ठ और ज्येष्ठानी के विरुद्ध उसके कान भरती रहती थी उस समय तो वह कुछ न कुछ कह कर टाल देता था परन्तु अब जब कि वह रिटायर्ड हो गया तो हर समय ही पत्नि उसे जायदाद का बटवारा करने के लिये उकसाती रहती थी। सोहन भी बेचारा प्रतिदिन अपनी पत्नि की सीख सुन-सुन कर तंग हो गया।

अतः उस ने एक दिन अपने ज्येष्ठ भाई मोहन से सलाह की, कि अब हमें जायदाद का बटवारा कर लेना चाहिये, क्योंकि हम दोनों को तो बटवारे की कोई परवाह नहीं है लेकिन हमारे पश्चात इन दोनों औरतों का निर्वाह होना कठिन है। चूंकि हम दोनों में भ्रातृ प्रेम अधिक है हम जायदाद का बटवारा जायदाद को आधा करके न करेंगे, क्योंकि इसमें एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या द्वेष होने का भय है।

चाहे मैं कुछ न कहूं परन्तु मेरी पत्नि की आंखों में सर्वदा यही खटकता रहेगा कि मेरे ज्येष्ठ जी के पास अधिक तथा अच्छा हिस्सा गया है और मेरे पास बुरा और कम। अतः हम जायदाद को नीलाम कर देंगे और जो कुछ रुपया आयेगा उसे आधा-आधा विभाजित कर लेंगे। इसके अतिरिक्त हम दोनों में जो कोई वस्तु लेना चाहेगा नीलामी में बोली देकर ले लेगा

हुआ भी ऐसा ही। घर की सारी वस्तुएं बिक गईं। अन्त में केवल एक घड़ी शेष रह गई। वह घड़ी उनके दादा की थी और उसको लेने की दोनों ही भाइयों की तीव्र इच्छा थी वे दोनों एक दूसरे से बढ़ कर बोली देने लगे। नौबत यहां तक आ गई कि बोली घड़ी के वास्तवि मूल्य से भी अधिक बढ़ गई। सोहन ने जब देखा कि मेरा भाई जिद पकड़े हुए है वह घड़ी लेकर ही छोड़ेगा तो उस ने रुष्ट हो कर कहा जा भाई मैंने बोली के आज से तेरा स्नेह भी त्याग दिया। भविष्य में मैं तेरी कभी सूरत भी नहीं देखूंगा।

उसी दिन से वे दोनों भाई अलग अलग कुछ दूर के फासले पर रहने लगे। उनमें उसी घड़ी के कारण तकरार इतनी बढ़ गई थी कि वे न एक दूसरे से मिलते, न बोलते और न ही घर जाते थे। यहां तक कि जब मोहन की पत्नि की मृत्यु हुई तब भी सोहन और उस की पत्नि उस के घर मातम मनाने नहीं गये

दूसरी ओर बटवारे के पश्चात सोहन पर भी कोई ग्रहचाल के आ जाने कारण मुकदमा चल गया ढोर डगर मर गये, यहां तक कि अब उसे खाने के भी लाले पड़ गये। इन सब बातों की भनक मोहन के कानों में पड़ती तो थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु उस में उस घड़ी के कारण इतनी झिझक हो गई थी कि वह भाई को अपना मुख दिखाते हुए डरता था।

एक दिन उसने अपना पक्का हृदय करके सोहन के यहां जाने की ठानी, परन्तु जब उस की दृष्टि घड़ी पर पड़ी तो वह फिर सहम गया उसे घड़ी से अब विष की भांति घृणा हो गई और वह किसी न किसी तरह उसे भाई को देकर उस से मुक्त होना चाहता था। अतः वह एक दिन रात्रि के समय सब काम काज से निवृत हो घड़ी को लेकर भाई को देने गया लेकिन दरवाजे पर पहुंचते ही यह विचार उसके मन में आया कि कहीं भाई मुझे फटकार न दे। अतः वह घर के पीछे की ओर गया जहां पर उसकी गाय भैंस बंधती थी और दियासलाई जलाकर घड़ी को रखने का उचित स्थान देखने लगा। इतने में उसे कुट्टी के कोठे में एक खूंटा दिखाई दी, उस पर उसने घड़ी को लटका दिया और सोचा कि प्रातः जब भाई गाय भैंस की कुछ कुट्टी सानी करने आयेगा तब घड़ी को देख कर अत्यन्त प्रसन्न होगा और वह घड़ी रख कर दबे पांव खिसक गया।

छः बजे वाला सिनेमा देखकर लोग वापिस घर को जा रहे थे। उस समय कुछ लोगों ने मोहन को वहां से निकल कर भागते देखा। कुछ समय के पश्चात आग लगने का शोर सुनाई दिया। सोहन ने अपने पिछवाड़े आकर देखा तो उसके कुट्टी के कोठे में आग लग रही थी और वह आधे से भी अधिक जल चुका था। कुछ लोगों ने कहा कि हमने मोहन को यहां से भागते हुए देखा था, लेकिन सोहन ने कहा कि मेरा भाई मेरे घर में आग लगाये यह कदापि नहीं हो सकता; यह तो मेरा दुर्भाग्य है। इसी की कसर रह गई थी चलो अब यह भी पूर्ण हुई।

दूसरे दिन पुलिस आई लेकिन सोहन ने स्पष्ट बयान दिया कि मुझे किसी पर सदेह नहीं है। इन सब कठिनाईयों का परिणाम यह हुआ कि सोहन को बहुत सदमा पहुँचा और वह बीमार हो गया।

दूसरी ओर मोहन डर कर कई दिन तक अपने घर से भी न निकला कि कहीं पुलिस मुझ को न पकड़ ले जाये। अन्त में जब सोहन को अपने बचने को कोई आशा न रही तो उसने अपनी पत्नि द्वारा अपने भाई को बुला भेजा।

मोहन तुरन्त उसकी बिमारी की सूचना सुन कर दोड़ा-दौड़ा अपने भाई से मिलने आया। और कहा कि मैं तो प्रति दिन यहां आने की सोचा करता था। परन्तु इस भय से कि कहीं तुम मुझे उलटी सीधी न सुनाओ मुझे यहां आने का साहस न हुआ। दूसरे मैंने तुम्हारे यहां आग नहीं लगाई मैं तो शुद्ध हृदय से घड़ी लौटाने आया था लेकिन दुर्भाग्य से कुट्टी के कोठे में लटकाने चला गया। मैं तुम्हारा भला सोच कर चला था और हो गया बुरा। मैंने तुम्हें बहुत कष्ट दिये हैं अब मैं उनके लिये जीवन पर्यन्त प्रायश्चित करता रहूंगा।

सोहन ने कहा, आरम्भ से हम दोनों में कितना स्नेह था लेकिन इस वृद्धावस्था में बचपन के विपरीत हो गया। खैर, अब मेरा समय निकट है। मेरी तीव्र इच्छा थी कि मरने से पहले एक बार तुम्हारे दर्शन कर लूं। यह कह कर वह सदा के लिये इस संसार से चल बसा।

मोहन अपने भाई के बच्चों और पत्नि को लेकर अपने घर आया और उनका प्रसन्नता से पालन-पोषण करने लगा।

★ ★ ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनियां मुझको याद करेगी !!

[श्री रमेश धाकर]

(१)

मेरे मिट जाने पर दुनियां हरदम मुझको याद करेगी ।
मुझे याद कर सिर पीटेगी, हरदिन ठण्ठी आह भरेगी ॥
आज मुझे गुमराह कह रहे दुनियां के मेरे प्रिय भाई ।
क्यों कि हमारे माग अलग हैं—मैं हूं जग को रिपूकी नाईं ॥

(२)

मेरे मिट जाने पर दुनियां जागेगी, मैं शत्रु नहीं था ।
केवल पाप और शोषण को मैं न झुका सकता था माथा ॥
मुझे बुरा कहते सब कोई, क्यों कि न्याय मुझको अति प्रिय है,
मुझे हीन कहते जग वाले, क्योंकि गरीबी मुझे अप्रिय है ॥

(३)

लोग मुझे गुमराह समझते, क्यों कि मैं न मन्दिर में जाता ।
मसजिद गिरजाघर न मुझे प्रिय, केवल मानव से है नाता ॥
हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी, बौद्ध—सब महजब वाले ।
मुझे बराबर ही दिखते हैं, मुझ को सम हैं गोरे-काले ॥

(४)

मैं न किसी को उच्च समझता, नीच किसी को नहीं मानता ।
जाति, धर्म, कुल, देश आदि के भेदों को मैं नहीं जानता ।
मुझको तो इन्सान सभी अच्छे लगते हैं, प्रिय लगते हैं ।
हाय, जिन्हें जग रक्षक कहता, वे ही दुनियां को ग्रसते हैं ॥

(५)

जिनको हम धर्मी कहते हैं, वे अधर्म का पाठ पढ़ाते ।
जाति धर्म का भेद बढ़ा कर शूली पर हैं हमें चढ़ाते ॥
बड़े बड़े देशों के नेता, जो हैं कर्णधार कहलाते ।
प्रलय मचाते, युद्ध मचाते, रक्त सिंधु में नाव चलाते ॥

(६)

जिनको धन कुबेर कह कर हम डरते-डरते शीश नवाते ।
वे हमको दिन-रात लूटते, हम अपना सर्वस्व गंवाते ॥
रक्त पात का, शोषण का सब अत्याचारों का दुश्मन मैं ।
जब अत्याचारी मुसकाते तब करता रहता क्रन्दन मैं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माला का सन् १९५७ का विशेषांक 'पद्मप्रभाकर'

यह ३०० वर्ष का प्राचीन ग्रन्थ है, विद्वान सग्रहकार ने ऐसे २ ग्रन्थों का सग्रह दिया है जिस के नाम भी सुनने को नहीं मिलते। ऐसे २ योग हैं जिन्हें वैद्यसमाज बिल्कुल नहीं जानता ऐसे सद्य फलप्रद हैं कि प्रयोग करने पर चकाचौंध होना पड़ता है इस में सभी रोगों पर सद्य फलप्रद योग दिये गये हैं जिन्हें जानने से वैद्य माला माल हो सकते हैं, व्यापारी पढ़ कर लखपती बन सकते हैं सद्गृहस्त सैंकड़ों रुपयों को जो वैद्य डाक्टरों को देने पड़ते हैं, उन्हें बचा सकते हैं और बहुत काल तक की पीड़ा के सहन को हलका कर सकत हैं। मोतिया बिन्द, जलोदर कुष्ट प्रमेह के २० भेद तो ऐसे हैं जो देखे सुने नहीं जाते पर लक्षण देखे जाते हैं। बड़ी सुन्दर चिकित्सायें हैं।

प्रसशापत्रों की भरमार है। इसके सिवाय कुष्ट चिकित्सा आश्रम के परीक्षित १२५ योग चार २ आने वाले भी निःसकोच दे दिये गये जिन की जानने की फीस २॥-२॥ रुपया थी इस प्रकार ३२५ रु० के योग तो मिल ही जाते हैं मुफ्त और सर्व रोगों के चमत्कार के योग भी इस अक का दाम १) है। पर माला के ग्राहक क मुफ्त दिया जाता है इस प्रकार जनवरी का विशेषांक पद्मप्रभाकर २) रु० का फर्वरी का स्वर्ण बन्सत मालती अङ्क १) का, इस प्रकार ३) रू० का माल दो अङ्कों में ही मिल जाता है १॥) रू० में १० अङ्क पढ़ने को मिलेगें इनमें काकचडीश्वर तंत्र का सरल सुबोध हिन्दी भाष्य रहेगा जो संसार से दरिद्रता मिटाने की गारटी होगी। सोना चांदी बनाने के योग देगा, एक अङ्क हजारों रूपयों का होगा अतः आज ही ग्राहक बन जावें।

❀ "अनुभूत योगमाला" का स्वर्ण बंसत मालती अङ्क ❀

इस अङ्क ने भारत वर्ष में क्रान्ति उपस्थित कर दी है। लोग देखते हैं वाह वाह कहते हैं आप भी देखिये- कितने बड़े अध्ययन और मनन के बाद सैंकड़ों वर्षों से स्वर्ण बसन्त मालती कृतिलुप्त थी मनमाने ढग से लोग इसे बनाते थे इस घोर अन्याय को दूर करने के लिये—

१—नवीत किसे कहते! दूध से निकले हुये को या दही से निकले हुए को।

२ नवनीत कितना तोल में डालना चाहिये?

३—नीबू रस की मात्रा कितनी होनी चाहिये?

४—काली मिर्च डालना या धुली हुई सफेद मिर्च?

५—वैज्ञानिक ढंग से नवनीत और नीबू रस क्या प्रभाव करते हैं?

क्यों इसकी योजना शास्त्रकारों ने की है।

यदि आप को जानना हैं तो इस ग्रन्थ को पढ़ना चाहिये बड़े मार्के के साथ पद पर शास्त्रीय प्रमाणों से उपरोक्त विषय स्थापित किये गये हैं इस अक का मूल्य १) रुपया है पर ग्राहकों को मुफ्त दिया जाता आज ही ४॥ रू० भेज कर ग्राहकों में नाम लिखालिजिये वनो पछताना पड़ेगा इस अङ्क की बड़ी भारी बिक्री है सम्भव है दूसरा सस्करण हमें निकालना पड़े तो आप प्रतीक्षा में ही रहेंगे।

मैनेजर—अनुभूत योगमाला आफिस बरालोकपुर, इटावा [यू. पी.]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७)

अत्याचार, युद्ध के गर्जन में मेरा क्रन्दन दब जाता।
यह विद्रोही गीत आततायी के पास नहीं जा पाता॥
पर, ये मेरे गीत अमर हैं, इनको छिपी हुई चिनगारी।
आग लगा देगी महलों में, कांप उठेंगे अत्याचारी॥

(८)

मैं न रहूंगा, पर दुनियां में मेरी चाहें अमर रहेंगी।
मेरे गीत नहीं मिट सकते, मेरी आहें अमर रहेंगी॥
मेरे स्वप्नों को दुनियां की बर्बरता बर्बाद करेगी।
पर, मेरे मिट जाने पर यह दुनियां मुझ को याद करेगी॥

डिप्टी का लड़का — कलकते के मशहूर बाग इंडियन गार्डेन में एक दर्द नाक दिल को हिला देने वाली सच्ची घटना है जिस को पढ़कर आप के रोंगटे खड़े हो जाये गे। केवल ।=) का स्टाम्प भेज कर मंगावें।

पता—राय साहब के० एल० शर्मा, 'जवरी आफिस' जगाधरी

सन् १९५७ 1957

रहस्यमय बातें तथा शक्ति शाली [सर्व कार्य सिद्ध यंत्र] मालूम करने के लिए केवल =) के स्टाम्प भेज कर जवरी जन्त्री मुफ्त मंगाकर मनो कामनाएं पूर्ण करें। जल्दी करें स्टाक कम है।

पता—जवरी आफिस (१८) जगाधरी ई० पी०)

❁ "रेलवे मैन अजमेर के ग्राहक बनिये ❁"

रेलवे मैन सप्ताहिक पत्र दरबार प्रेस से प्रकाशित होता है। इस में रेलवे सम्बन्धी सब समाचार होते हैं। रेलवे कर्मचारियों व्यापारियों व यात्रियों की कठिनाइयों को दूर कराने व सरकार को उचित परामर्श देना इस का लक्ष्य है हर विभाग का रेलवे कर्मचारियों का व्यापारियों व रेलवे यात्रियों तथा वाचनालयों को इस के ग्राहक बनकर अपनी कठिनाइयों को दूर कराना चाहिये।

मैनेजर—
'रेलवे मैन'
पोस्ट बाक्स नं० ११०
अजमेर

कार्यालय—
दैनिक दरबार
अजमेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ चित्रकूट बूटी ❀

दमा (Asthma) और पुरानी खांसी की हमारी जगत विख्यात महौषधि "चित्रकूट बूटी" के बारे में कुछ जरूरी बातें।

(१) इस दवा से पूरा लाभ उठाने के लिये दिन भर 'पूर्णमाशी' को व्रत रखना और रातभर जाग कर परमात्मा का भजन करना जरूरी है अन्यथा पूरा लाभ न होगा इस बात को अच्छी तरह नोट करलें। रात भर जाग कर प्रातः ४ बजे (अर्थात अगले दिन) दवा खाना होगा जैसे किसी मास ता० २० की पूणमाशी है तो दिन और रात उपवास रखकर ता० २१ में प्रातः दवा खाना चाहिये दवा खाने के ६ घन्टे बाद भोजन करना चाहिए बाकी सब बातें साथ की सेवन बिधि में पढ़ लें। यदि जाड़े का मौसिम हो तो खाने से पहले खीर को गरम कर लें फिर दवा मिला कर सेवन करें. गरम पहिले करलें दवा खाते समय मिलाव

(२) इस अद्भुत और शक्तिशाली औषधि की सेवन विधिमें जो व्रत (उपवास) करना तथा रात भर जागना लिखा है सो ऐसा क्यों कराया जाता है इस बारे में बहुत से रोगी पत्र द्वारा पूछा करते हैं। सो यह एक साइंटफिक रहस्यमय बात है हम अपने ग्राहकों को पूर्ण रूप से समझाते हैं असल बात यह है कि "दमा" और "तपेदिक" (टी० बी० दोनों ही फेफड़ों से सम्बन्धित रोग हैं इन दोनों ही रोगों के जरासीम (Germs) किटाणु होते हैं। जो शरीर के प्रत्येक भाग रक्त में फैले रहते हैं। 'दमा' रोग के जर्म भी पुराने पड़ने से भयंकर और 'तपेदिक' (टी० बी०) रोग का शकल में बदल जाते हैं। फिर रोगी को ज्वर भी होने लगता है 'दमा' रोग के जर्म जो रक्त में फैले रहते हैं। व्रत (उपवास) करने से जब उन को भोजन नहीं मिलता तो भूख के कारण तड़फने लगते हैं। फिर रात भर जागने से शरीर के रक्त में और भी गर्मी (तेजी) हो जाती है। जिस से वह सब जर्म और भी घबरा उठते हैं, और समझते हैं कि न मालूम आज क्या आफत आ गई है। रक्त की गर्मी से घबरा कर वह सब फेफड़ों में अपने आप को छुपा लेते हैं। क्योंकि फेफड़े मनुष्य के शरीरमें एक प्रकार का किला हैं जैसे बाहर से जब कोई शत्रु आक्रमण करता है तो सब व्यक्ति एक जगह किले में जमा हो जाते हैं ठीक उसी प्रकार वह सब जर्म फेफड़ों में जमा हो जाते हैं। बस यह दवा अन्दर पहुंचते ही उन को नष्ट कर देती है। यह दवा उन सब जर्मों (कीटाणुओं) के लिये एक प्रकार का भयंकर बिष है। जब वह सब जर्म जो एक जगह इकट्ठे होते हैं। मर जाते हैं तो ईश्वरीय नियमानुसार मरी हुई वस्तु जानदार के अन्दर नहीं रह सकती है वह किसी न किसी प्रकार शरीर से बाहर होती है। बस दवा खाने के ६ घन्टे के अन्दर ही अन्दर किसी को एक दो कैय और किसी को दस्त होता है। कैय या दस्त द्वारा सब मरे हुए जर्म शरीर से बाहर होकर रोग नष्ट हो जाता है कैय या दस्त होने से घबराना नहीं चाहिए। यदि किसी ताकतवर व्यक्ति को कैय या दस्त न भी हो तो भी मरे हुए जर्म २-४ दिन तक धीरे धीरे पाखाना (टट्टी) आदि में निकलते रहते हैं। यदि कुछ जर्म इधर उधर रह जाते हैं तो दूसरी तीसरी मात्रा में सब नष्ट हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी से ३ बार, यह दवा सेवन करने का नियम है। जिस में सब कीटाणु (जर्म) नष्ट हो जावे, और यह रोग जड़ से कट जावे; आप को कम से कम ३ खुराक अवश्य सेवन करना उचित है

(३) आशा है कि आप भूखा रहने और रात भर जागने के बारे में सब बातें समझ गये होंगे, अब यदि कोई व्यक्ति अधिक कमजोर रोगी आदि हो और पूर्ण रूप से भूखा न रह सके तो वह एक दो बार थोड़ी चाय, दूध अथवा पानी आदि पी सकता है। अंगूर आदि रसदार फल भी खा सकता है परन्तु अन्न की कोई वस्तु न खावे, अन्न की वस्तुओं में तो २४ घन्टे के अन्दर वही खीर खाना होगा, जो औषधि मिला कर प्रातः ४ बजे खाना होगा ध्यान पूर्वक नोट करलें

(४) बहुत से आदमी पूछा करते हैं कि खीर कितने दूध की बनाई जावे इस का कोई नियम नहीं है आप जितनी खा सकें, बना सकते हैं मामूली रूपसे एक रोगी के लिए आध सेर दूध में ५ तोले उत्तम चावल की खीर पर्याप्त होती है वैसे चाहे १ सेर दूध की बना लें यह तो अपनी इच्छा है

(५) औषधि की एक खुराक-सारी खीर में न मिलावें बल्कि थोड़ी सी खीर में मिला कर खा लें। ऊपर से अच्छी खीर खा सकते हैं। खीर खा कर थोड़ी देर टहलना चाहिये, फिर चाहें तो सो सकते हैं रोटी आदि ६ घन्टे बाद खा सकते हैं।

(६) गर्भवती स्त्री तथा १२ साल से कम उमर वाले बच्चों के लिये इस दवा का सेवन करना मना है क्यों कि दवा तेज है। कम उमर के बच्चे ठीक से विधि का पालन भी न कर सकेंगे। हां १२ साल से कम उमर के बच्चों को एक खुराक यदि थोड़ी २ शहद आदि में मिला कर ३-४ दिन चटावें तो भी लाभ जरुर होता है सैंकड़ों जगह परीक्षा हो चुकी है परन्तु थोड़ी मात्रा में आयु के अनुसार एक खुराक में ५-६ दिन तक चटा सकते हैं।

(७) यह दवा "पूर्णमांशी" की रात में खाई जाती 'पूर्ण चन्द्रमा' की ज्योति रात भर या कम से कम ५-६ घन्टे खीर पर पड़ना जरूरी है इस बात का एक गूढ़ साईंटिफिक रहस्य है। भारत के पूज्य ऋषियों का यह एक अद्भुत चमत्कार है यह दवा किस महात्मा से किस प्रकार प्राप्त हुई। यदि पूरा भेद जानने की इच्छा हो तो ६) रु० खर्च कर भारत विख्यात पुस्तक "खजाना करामात" एक प्रति जरुर मंगावें। फिर आपको यही दवा नहीं बल्कि सैंकड़ों प्रकार के अद्भुत प्रयोग प्राप्त हो सकेंगे जिन को जान कर आप दुनियां में नाम पैदा कर के धन दौलत तथा जनता की भलाई और उपकार भी कर सकते हैं अधिक और क्या लिखा जावे आशा है कि इस महौषधि "चित्रकूट बूटी" के बारे में आप सब बातें भली प्रकार समझ गये होंगे। इस पर भी यदि कोई बात पूछना चाहें तो सहर्ष पूछ सकते हैं; हम सदा बगैर किसी जाति भेद भाव के मनुष्य मात्र की सेवा को अपना मुख्य धर्म समझते हैं। जब ही तो कार्यालय के भगवान की कृपा से लाखों ग्राहक दुनिया के कोने कोने में मौजूद हैं। परन्तु जल्द उत्तर प्राप्त करने के लिये अपने पते का लिफाफा या =) का स्टाम्प साथ आना जरुरी है।

पताः—राय साहब के एल शर्मा एण्ड सन्स रईस एण्ड बैंकर्स R) जगाधरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्टा चोर कोतवाल को डांटे

ले० —डा० भवानी प्रसाद गुप्त अध्यक्ष लक्ष्मण मेडीकल हाल, रसड़ा (बलिया)

भारतीय स्वातन्त्र संग्राम में सभी धर्म एवं सम्प्रदाय के व्यक्तियों ने त्याग किया जेल गये। और यन्त्रणाएं सहन की तथा आवश्यक होने पर सहर्ष सूली के तख्ते पर चढ़ गये। वे कांग्रेसी नहीं थे उन्होंने जो कुछ किया देश जाति और धर्म को स्वतंत्र बनाने के लिये कर्तव्य समझा। उनकी तथा सर्व साधारण की धारणा थी कि देश आज़ाद होगा तो अपनी भाषा सभ्यता एवं संस्कृति का पुनरुद्धार होगा। जन जीवन सुख मय होगा और सर्व साधारण का स्थान एक होगा सरकार और सरकारी कर्मचारी अपने को जन सेवक समझेंगे। अनाचार। दुराचार व्यभिचार और भ्रष्टाचार का विनाश होगा। मगर हुआठीक उसके विपरीत और ठीक उसका उल्टा

अंग्रेज दक्ष व्यवसायिक थे उन्होंने जो कुछ भी भारत में किया व्यवसाय की दृष्टि से ही किया जिस नीति चातुरी से अपनी भाषा सभ्यता और संस्कृति का प्रचार किया उसका परिणाम देश को आज भी भुगतना पड़ रहा है। हिन्दी, उर्दू पास व्यक्तियों को भर्ती कर वकालत, ऑफीसरी डाक्टरी की शिक्षा देकर अदालत और हास्पिटलों की स्थापना की स्कूल खोले और अंग्रेजी पढ़ने के लिये विवस कर दिया। परिणाम स्वरुप आज भी वह परतन्त्रता के औपसर्गिक रोग के कीटाणु देश की पवित्रता पर आक्रमण कर रहे हैं।

डाक्टरी के शिक्षार्थियों को उस समय माइनर (साधारण) सर्जरी का ज्ञान कराकर आयुर्वेद का अङ्ग छेदन करना आरम्भ कर दिया इस नीति चातुरी और मेडिकल विधान ने देशी इलाज को मीठा विष देना प्रारम्भ कर दिया। अन्त: गत्वा अष्टांग आयुर्वेद के शल्य शालाक्य अंग को काट डाला। अब बड़े बड़े सर्जरी के काम सरकारी होस्पिटलों में होने लगे यह आकर्षण का एक प्रधान अंग बन गया। अर्क प्रकाश एवं आसवादि की वस्तुओं के प्रस्तुत करण पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। मृत सञ्जीवनी की पूर्ण शक्ति प्रस्तुत करने का आज भी आर्डर नहीं है। अंग्रेजों ने तो समझा कि पूर्ण रूपेण प्रस्तुत मृत सञ्जीवनी सुरा विदेशी सुरा के व्यवसायिक द्वार को बन्द करदेगी। मगर देशी सरकार की धारणा को विद्वान स्वयं समझ सकते हैं। वास्तविक दृष्टि से विचार करने और देखने पर वर्तमान सरकार पूर्णतः अंग्रेजी है। अन्यथा हिन्दी में ही वैद्यवर्ग को पूर्ण सर्जरी का ज्ञान प्राप्त करा आयुर्वेदिक औषधियों को पूर्ण रूप से तैयार करने में प्रोत्साहन देकर सदा के लिये विदेशी चिकित्सा को दफना देने का अवसर प्रदान करती। और जनता अकाल मृत्यु एवं अपव्यय से बचजाती।

शायद ही कोई वानस्पतिक खनिज और प्राणिज वस्तुएं वैसी बची होंगी। जो वर्तमान फार्माकोपिया में प्रवेश न पाई हों। अब वे सब वस्तुएं एलोपैथिक की मान ली गई हैं और धीरे २ व्यवहृत करने से हम रोके जा रहे हैं उदाहरणार्थ अनेक मुकद्दमें चल रहे हैं। इधर दो मुकद्दमें सामने हैं जो निम्न प्रकार के हैं। एक हकीम जी हैं जिन का मतब मऊनाथ भञ्जन जिला आजमगढ़ में है। उनका शर्बत अञ्जीर जब्त कर लिया गया है और एनालिस्ट के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिपोर्ट में बताया गया है कि शर्बत में सेक्रो है। यह उल्टी खोपड़ी का निर्णय है कारण बिना सैक्री के शर्बत का बनना असम्भव है चीनी (शर्करा) का आधुनिक नाम सैक्रो है अब यह स्पष्ट हो गया कि कोई औषधि यूनानी या आयुर्वेदिक वैसी नहीं बनाई जा सकती जिसमें शर्करा की आवश्यकता न हो, विद्वान भली-भांति विचार करें और विरोध में अपनी सारी शक्ति व्यय करदें।

यहां (रसड़ा-बलिया) में कुछ लोग गत १८ वर्षों से आंखों का अञ्जन बेच रहे हैं जो ड्रग इन-पेक्टर के दोस्त हैं वे आज भी स्वतन्त्रता पूर्वक कर रहे हैं और जो भ्रष्टाचार को सहन करने में असमर्थ हैं उनकी रोटी पर कुठाराघात हो गया है। उनके अञ्जन जप्त कर लिये गये हैं। और उनपर मुकद्दमें चल रहे हैं। इन अञ्जनों का एक ही योग है जो निम्न प्रकार है—

तूतिया, फिटकरी, चौकिया सोहागा, जवा-हड़ लौंग, झण्डा मारका रंग और वैसलीन। एनालिस्ट का रिपोर्ट है कि इस में एलम-बोराक्स सल्फेट आफ कापर और टेनिन है अब पाठक विचार करें कि इन्हीं देशी नामों का अंग्रेजी नाम मात्र है, जितनी भी कषाय वस्तुएं हैं न्यून धिक टेनिन तो होगा ही, लौंग और हड़ में टैनिन का अंश अधिक होता ही है। जितनी भी देशी औषधियां हैं प्रायः सभी फार्माकोपिया में दाखिल हो गई हैं तो क्या वे सभी एलोपे-थिक हो गई और देशी चिकित्सक उसका व्यवहार नहीं कर सकते? समस्या तो कुछ भी नहीं है, केवल इतना ही कि देशी चिकित्सा को दफना देना है। इस उल्टी खोपड़ी की रिपोर्ट और मुकद्दमें का दूसरा अर्थ ही क्या हो सकता है? घी के स्थान पर वेसलीन का सहारा लिया जाता है। और वैसलीन ड्रग कानून से परे हैं फिर उस का नाम लेने का क्या अर्थ होता है? अभी अभी सर्पगंधा को एलोपैथिक ने अपनाया है अब वह भी मेरे हाथ से गई जान पड़ती है थोड़े ही दिनों में जीरा, मिर्च धनिया आदि मसाले भी शाक और दाल के लिये नहीं मिलेंगे क्योंकि वे सभी फार्माकोपिया में दाखिल हैं। शृंगार की वस्तुओं में रगगंध मिला फेस वेस-लीन और हेयर वेसलीन के नाम से बिकती है वसलीन मशीनरियों में लगाई जाती है, होमियो पैथिक में भी मरहम बनाने के काम में ली जाती है वैसलीन इनकी वस्तु नहीं है बल्कि कमर्सियल की वस्तुएं हैं बेजनी रंग झण्डी छाप का अब भी कपड़ा रंगने के काम में खुला बिकता है। भ्रष्टाचार के युग में डांका मारिये। कोई पूछने वाला नहीं है। जिस लेबल पर स्पष्ट रूप में आयुर्वेदिक छपा रहता है उसको भी जप्त कर लिया जाता है। और मुकद्दमा कायम कर दिया जाता है। कारण जो मेटेरिया मेडिका में देशी औषधियां हैं वह अब देशी नहीं रह गई हैं। सरकार को विभाग खोलने तो आता है, मगर उसके अधिकारियों द्वारा जनता की अकारण ही परेशानियां बढ़ जाती हैं। उस पर ध्यान दिया नहीं जाता है। अब यदि यह कहा जाए कि वर्तमान शासन देश के लिये अभिशाप है, तो इसमें अनौचित्य क्या होगा? एक मुकद्दमें में मेरी गवाही हुई है, मैंने सर्व प्रकार सिद्ध कर दिया है कि यह मुकद्दमा नहीं है बल्कि देशी चिकित्सकों के लिये चैलेञ्ज है। और इस प्रकार की कार्यवाही का विरोध अखिल भारतीयसभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा भी करेगी। गवाही के पश्चात जो जिरह हुई वह निम्न प्रकार है—

प्रश्न—तूतिया कैसे बनती हैं, उत्तर—यह प्राकृतिक रूप से भूगर्भ से प्राप्त होती हैं और मिट्टी के रूप में मिलती है जिसे वायु द्वारा पृथक कर लेते हैं। प्रश्न—भूगर्भ में प्रकृति किन पदार्थों के मिश्रण से तूतियां बनाती हैं उत्तर—ताम्र १ भाग अम्लत्व १ भाग, शुद्धवायु ४ भाग इन शब्दों का अधुनिक रूप दे सकते हैं उत्तर—एसिडसफर १ भाग, कापर १ भाम, अक्सीजन ४ भाग। प्रश्न—आधुनिक रसायन शास्त्र का ज्ञान है उत्तर—मेरे पूवजों को योगिक ज्ञान था और रजत स्वर्ण निर्माण (रसायन) शास्त्र का ज्ञान है प्रश्न—वेद से ही विदेशों ने ज्ञान प्राप्त कर अनर्थ करना अरमभ किया है, और इश्वरीय सत्ताको भी विनष्ट करने का डोंग हांकते हैं प्रश्न—आप किस प्रणाली से मुख्यतः इलाज करते हैं। उत्तर—आयुर्वैदिक। प्रश्न—आप किन चिकित्साओं का ज्ञान रखते हैं। उत्तर—विश्व की समस्त चिकित्सा पद्धतियों की जननी आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा ही समस्त चिकित्सा पद्धतियों का ज्ञानार्जन होता है। मैं विशुद्ध आयुर्वेदिक हूं और आयुवदीय इन्जेक्शन का आविष्कारक हूं। प्रश्न—आपकी रजिस्ट्री तो होमियो पैथिक मेडिसिन बोर्ड को है। उत्तर—मेरी अपनी दृष्टि में सभी पथिक वा पद्धतियां अपनी ही हैं। किसी से भी दुराव नहीं है आप की दृष्टि में दुराव हो सकता है, क्योंकि आप अपने को स्वय भू समझते हैं। मगर यह स्वयं सत्यास्पष्ट है सृष्टि के आदि कल से प्रकाशित आयुर्वेद मार्तण्ड की रश्मियों से युनानी युनानी से एलापेथक का जन्म हुआ है एलापेथिक से होमियो पैथिक, होमियों पैथिक से बायाकोमिक और इलेक्ट्रो होमियो पैथिक का सृजन हुआ है। जिसे आप एटली और जर्मनी आदि का आविष्कार समझते हैं वे सभीं आयुर्वेद महासागर के श्रोत मात्र हैं। केवल जल चिकित्सा और सूर्य रश्मि चिकित्साओं का अधुनिक नाम Hydro pathic और cromo pathic देकर अपनी बनाने से हिचिक नहीं की गई। वेद मत्रों में इस चिकित्साओं का पूर्ण प्रकाश है। क्या यह सिद्ध नहीं हुआ कि सबल चोर कोतवाल को डांटे प्रश्न—आप कितने दिनों से प्रेक्टिश कर रहे हैं, उत्तर—४२ वर्षों से। प्रश्न—आपने कहां पढ़ा है उत्तर—गुरु मुख शास्त्र द्वारा, उपाधि प्राप्त स्थान वद्यमनीषी, सस्कृत कार्यालय अयोध्या, भिषग्रत्न विद्या मन्दिर वैद्यशास्त्री गुलाम भारत होम मिनिस्टर स्वर्गीय नवाब छतारी साहब के कर कमलों द्वारा सस्थापित ए० एन्ड एच० मिडिकल कालेज अलीगढ़। प्रश्न—आपने एलोपेथिक की शिक्षा ग्रहन की है, उत्तर—जी हां। प्रश्न—किस कालेज में, उत्तर—स्वर्गीय डाक्टर पूरन मल साहब इन्चार्ज रसड़ा हास्पिटल और डाक्टर बिहारीलाल साहब बनारसी इन्चार्ज गोहना हास्पिटल (आजमगढ़) द्वारा प्रेक्टिकल शिक्षा पाई है। प्रशन—होमियो पैथिक की शिक्षा कहां से ली है, वर्मा कालेज आरा, डाक्टर एल० राय मेडिकल कालेज पटना (इन्जेक्शन) M. B. M. P., M. B. S. H., M. B. B T., और B. Sc E. H., ल्हेरिया सराय। प्रश्न—आप ने युनानी भी पढ़ा है, उत्तर—स्वर्गीय मेहदीसन साहब बनारसी द्वारा, उपाधि स्थान कलकत्ता "हकीम हाजिक"। मैंने R. D. H मेडिकल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालेज पटना में प्रोफ़ेसरी भी की है। मैं आल इन्डिया होमियोपैथिक मेडिकल रिसर्च बोर्ड का मेम्बर भी हूँ। प्रश्न—अच्छा यह बताइये कि आप मजटा को क्या समझते हैं। उत्तर—एक प्रकार का कपड़े र ने का बाजारू रंग, प्रश्न—क्या इसका प्रयोग नेत्र रोगों पर भी होता है। उत्तर—जी हां। प्रशन—आपने कभी व्यवहार में लाया है। उत्तर-नहीं इस लिये कि शास्त्र सगत नहीं है मगर मैंने जब से होश सम्भाला है देखता आया हूँ और बचपन में मेरी आंख उठ आई थी तो घर वालों ने बाह्य प्रयोग किया था मगर अब थोड़े दिनों से नेत्रोपयोगी शावत होने पर फार्माकोपिया B.P.C. में दाखिल किया गया है खेद है कि इस भारत की देन नहीं माना गया बल्कि अपना मान कर हमें इससे वंचित किया जा रहा है और भारतीय व्यवसायिक जीवन पर हमला किया जा रहा है, अब यह प्रत्यक्ष है कि उल्टे चोर कोतवाल को डाटे। प्रशन—खनिज स्नेहन पदार्थ और पेट्रोलियन का एक अंश इस की जांच में जो पदार्थ मिलता है वही घी और बानस्पतिक तेलों में भी मिल सकता है। घी और वेशलीन में हाइड्रोजन होने से मुन्ज मिला होता है।

प्रशन—क्या आप केमिकल और मेकनिकल का ज्ञान भी रखते हैं। उत्तर—मेरे जीवन की कमाई साहित्य सचय और गुरु सेवा ही है इस लिये औद्योगिक कला का ज्ञान रखता हूँ सन् १९५८ का विशेषांक 'औद्योगिक कलांक" माला का प्रकाशन मेरे सम्पादन में होने जा रहा है जिस के द्वारा आप मेरी जानकारी का ज्ञानार्जन कर सकते हैं। प्रशन—वासलिन किस रोग की दवा है। उत्तर-न्युट्रल है और ड्रग (औषधि) नहीं है। इस लिये ड्रग कानून से बाहर की वस्तु है। प्रशन—आप की इल्मी लियाकत क्या है। उत्तर—केवल हिन्दी की "अ" कक्षा की हसी प्रशन—रजिस्ट्रेशन नम्बर क्या है। उत्तर—२७६२ H प्रशन—इन्डियन मेडिसिन बोर्ड द्वारा रजिस्ट्री न होने का कारण क्या है प्रशन—ठीक वर्तमान रजिस्ट्रेशन होमियो पैथिक सही था, जिस में योग्य की जांच नहीं थी केवल ५ वर्षों से काम करने वालों का रजिस्ट्रेशन होता था यह रास्ता उचित नहीं जचा और मेरे दिये हुए रोगियों के प्रमाण पत्र स्वीकृत होने में रुकावट नहीं थी। मगर जब अदालती मान्यता रजिस्टर्ड प्रेक्टिशनर को ही मिलने लगी तब अभी हाल में होमियो पैथिक का रजिस्टेशन कर लिया है।

नोट—इजहार दिलचस्प था अथः दर्शक प्लीडर और न्याय धीश सब ही आनन्द ले रहे थे मेरे इजहार और जिरह का कितना अंश लिखा गया है कहना कठिन है क्योंकि मैं भी आनन्द विभोर था। नकल की प्रार्थना की गई है प्रतिलिपि मिलते ही अक्षरसः प्रकाशनार्थ भेज दिया जायगा। और फैसले की प्रतिलिपि भी भेजदी जाएगी।

आप बड़े ही निर्भीक उत्साही और ज्ञानवान चतुर कार्यकर्त्ता है आप के ही हाथों "औद्योगिक कलांक" माला का जनवरी १९५८ का अंक निकल रहा है। अभी से अपनी २ प्रति बुक करा वार्षिक मूल्य भेजना आरंभ कर दें।

सम्पादक

(अनुभूत योग माला से धन्यवाद पूर्वक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगाने का पताः—यू० पी० कैमीकल वर्क्स, २० अलीगढ़ ।

॥ थर्मामेटर मुफ्त ॥

नयन सुधार ❀ श्याम काजल ❀

भीम सेनी कपुर, ममीरा आदि आदि आंखों की बढ़ीया औषधियों से बना हुआ परीक्षित और रजिस्टड है। आखों का दुखना, चिपचिपाहट, रोहे, खुजली, पानी का बहना, दर्द धुन्ध आदि नेत्रों के समस्त रोगों को दुर कर ज्योति बढ़ाने के काम में लाया जाता है। प्रति दिन लगाने से आखों में कोई रोग नहीं होने देता। छोटे बड़े सब के लिये लाभ दायक है। एक डिब्बी पूरी गृहस्थी को वर्षों काम देता है। अगर आपने बच्चों का नेत्र रोगों से बचाना चाहते हैं तो श्याम काजल मगाइये। आखों को निरोग और सुन्दर बनाता है। मूल्य ≡ आना डि०, ३६ डिब्बा कमीशन काट कर कुल ५) रु० में दी जावेगी, और साथ में सच्चा आधी मि० का एक धर्मामेटर भी मुफ्त देंगे २) रु० पेशगी भेजें।

* सुख मार्ग * ✭ मासिक पत्र ✭

सुख सम्पत्ति पाने के लिये धार्मिक सामाजिक एव स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी सामाजिक समस्याओं से ओत-प्रोत ३२ वर्ष से भारतियों में जागरण का शखनाद करने वाले सचित्र सुखमार्ग को अवश्य पढ़े, यह बड़े २ विद्वानों के लेख लेकर हजारों की सख्या में छपता है। वार्षिक मूल्य केवल १) रु० नमूना मुफ्त।

व्यवस्थापक—सुखमार्ग कार्यालय, केमीकल प्रेस, मोहन गेट, अली गढ़ (यू. पी.

अब तो अन्धे भी देखने लगे। कैसे ?

NETRI नैत्री

से नेत्री एक अद्भुत शक्ति शाली आखों के सब रोगों को जादू की तरह से उड़ाने वाली औषधि है धून्ध, जाला फौला के अलावा मोतिया बिन्द तक को बगैर औप्रेशन लाभ होता है दुखती आंखों को तो प्रथम दिन ही लाभ हो जाता है। थोड़े दिनों के व्यवहार में चशमा तक लगाने की आदत छूट जाती है। आंखों की ज्योति आश्चर्यजनक रुप से बड़ती है स्त्री बच्चे बूढ़े सबही सेवन कर सकते हैं प्रत्येक घर में हर समय रखने लायक अदभुत औषधि है। यह दो प्रकार हमारे यहां बनता है। मूल्य इस प्रकार है—न० १ (स्पेशल) अमीरो के लिये जिसमें सोना मोती, ममीरा आदि मूल्य वान पदार्थ पड़ते हैं प्रति तोला १५) रु० ६ मासे ८) रु० ३ मासे नमुना ५) रु० तथा न० २ जिस में मूल्य वान जड़ी बुटियां हैं प्रति तोला ५) रु० महसूल १।।) अलग है।

नोट—कम से कम ६ मासे न० १ वाली के साथ चांदी की सलाई मुफ्त दी जाती है न० २ के साथ यदि सलाई चाहोगे तो १) अधिक देना होगा नोट कर लें।

पताः—राय साहब के एल शर्मा एण्ड सन्स रईस एण्ड बैंकर्स (R) जगाधरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोज़गार नहीं केवल परोपकार है ?

भारत के पूज्य ऋषियों की अद्‌भुत खोज

"दमा" पुरानी खांसी के रोगियो

जाड़े का मौसम आपके लिये बड़ा ही दुखदाई है। आप इस दुष्ट रोग से कब तक तड़फते रहोगे ? क्यों नहीं आने वाली किसी भी "पूर्णमासी" को यहां आश्रम में आकर सैंकड़ों रोगियों के साथ हमारी भारत विख्यात महौषधि (चित्रकूट बूटी) जिसने दुनिया के कोने कोने में हजारों रोगियों के प्राण बचाकर एक प्रकार की हलचल सी मचा दी है। मुफ्त (धर्मार्थ सेवन करके एक ही खुराक में चमत्कार देखे। यदि किसी कारण वश यहां न आ सकें तो केवल विज्ञापन आदि खर्च २।।।) मनीआर्डर से भेज कर तुरन्त मंगा लें और अपने घर पर ही आराम से सेवन कर के इस दुष्ट रोग से सदा के लिए पीछा छुड़ावें।

यदि रोग अधिक पुराना हो तो लगातार ३ खुराक सेवन करें जिसमें जड़ कट जावें ३ खुराक (पूरा कोर्स) यदि एक बार मंगावें तो ७) भेजें। इस दवा की वी० पी० नहीं नहीं भेजी जाती। क्योंकि वी० पी० कभी २ बहुत देर में मिलती है। सैंकड़ों अमीर आदमी गरीबों को धमर्थ देने के लिए दर्जनों पैकट मंगाते हैं उनके लिए खास रियायती रेट १२ पैकट २५) रु० है नोट कर लें।

सावधान— हमारी भारत विख्यात महौषधि ("चित्रकूट बूटी") किस तरह पर किस महात्मा से प्राप्त हुई मूल्य है यदि आप पूरा हाल जानना चाहते हैं, तो भारत विख्यात पुस्तक 'खज़ाना करामात' मूल्य ६) रु० सजिल्द ६।।।) तथा डाक खर्च १।) भेजकर जरूर मंगावें, उसमें इस प्रकार के अनेक महात्माओं से प्राप्त प्रयोग आपको मिलेंगे, जिनको मालूम करके आप अनेकों की भलाई करते हुए दुनिया में नाम पैदा कर सकते हैं—हमारा कार्यालय चित्रकूट' के नाम पर ठगों का कार्यालय नहीं हैं। जिनके विज्ञापन आप दिन रात समाचार पत्रों में पढ़ते हैं और जब यह सोच कर कि दवा मुफ्त में आ जावेगी वहां पत्र भेज देते हैं। क्योंकि समाचार पत्रों में धोका देने के लिये ऐसा ही सकेत रहता है कि दवा मुफ्त में मिलती है। परन्तु आप आश्चर्य में पड़ जाते होंगे। जब किसी को ६) या ७) रुपया की वी० पी० पहुँच जाती है, अनेक विचारे तो वापस कर देते हैं। बहुत से सज्जन यह समझ कर छुड़ा लेते हैं कि चलो अब तो दवा आ ही गई है ले लो शायद रोग को आराम हो जावेगा। परन्तु जब सेवन करके कुछ नहीं होता तो पछताते हैं और 'चित्रकूट बूटी' को बदनाम करते हैं। सैंकड़ों पत्र हमारे पास इस प्रकार धोकाबाजी के शिकायतें आते हैं। हम अपने हजारों पाठकों को सावधान करते हैं। यहां यह सब धोखाबाजी का काम नहीं है। केवल हमारे कार्यालय में ही आने पर प्रत्येक 'पूर्णमासी' को दवा मुफ्त दी जाती है। चाहे जितने आदमी आवें परन्तु बाहर मंगाने पर किसी को मुफ्त नहीं भेजी जाती है। उनसे विज्ञापन तथा पोस्ट खर्च २।।।) और ३ खुराक.पूरे कोर्स के ७) लिये जाते हैं। आने वाली 'पूर्णमासी' ता० ७ दिसम्बर फिर ५ जनवरी ५८ की है. नोट कर लें, जल्दी करें।

जिसमें 'पूर्णमासी' से पहिले दवा मिल जावे अन्यथा पछतावेंगे।

पता-राय साहब के० एल० शर्मा रईस आश्रम (*R*) "जगाधरी" (*E. Punjab*)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार की चकित करने वाली दवा

'अमृत फल'

जिनके यहां कन्या ही पैदा होती हों वह एक बार परीक्षा करके देखें। गर्भ रहने पर चौथे मास से सेवन करावें–पुत्र होगा। मूल्य सब एक यंत्र के २५) रू०।

License to Post without Prepayment
License No. 10 Punjab

RANGILA MUSAFIR
Registered No. E P. 374

Monthly 'RANGILA MUSAFIR"
JAGADHRI (*Punjab*)

To
Shri... Gurukul Patrika
Vill.......................
P.O.... Gurukul Kangri
Distt........ (Hardwar)

दर्द नाशक

यह एक आश्चर्य जनक अविष्कार है। शरीर के किसी भी अंग में पांव से लेकर सिर तक किसी प्रकार का दर्द हो जादू की तरह से दर्द को भगा देने में राम बाण है। इस आश्चर्य जनक औषधि की एक शीशी घर में रख लेनेसे समयपर दसों रुपयों का काम देती है मूल्य प्रति शीशी १।) रु० दर्जन का १२) रु० महसूल अलग।

हकीमी खास अविष्कृत

स्वप्नदोष नाशक

औषधि को सेवन करके अपने शरीर में लगे हुए घुन को नष्ट करिये। यह दवा ३५ साल से लाखों रोगियोंपर अपना जादू सा असर दिखा चुकी है। पूरा कोर्स २४ दिन का मूल्य ६।।) रु० आधा कोर्स ३।।) रू०

खूनी और बादी

दोनो प्रकार की बवासीर से आयु पर्यन्त छुटकारा दिलाने वाली शक्तिशाली दवा

❋ बवासीरी ❋

पुरा कोर्स ३० दिन का मूल्य ६।।) रु०।

।। कफ हरना ।।

यह हर प्रकार की खांसी के लिये अजीब औषधि है। यदि आपको खांसी की वजह से रात को नींद न आती हो तो आप इसे अवश्य सेवन करें। पहली ही खुराक में आप इसका चम-त्कार देख कर दंग रह जायेंगे। मूल्य ४० गोली का १।) रु० है।

अजूबा यह भी स्त्रियों के लिए खास चीज है। मासिक धर्मका कम या अधिक होना, कमर पेडू में एंठेन आदि रोगों में जादू की तरह से काम करने वाली शक्तिशाली दवा है। प्रत्येक घर में हर समय एक शीशी जरूर रखें। मूल्य प्रति शीशी २।।) रु० महसूल अलग है।

नया रोग २४ घन्टे में साफ **"सुजाक नाशक"**

का इस्ते माल पुराने से पुराने सुजाक को भी एक हफ्ते में जड़ से उड़ा देता है अवश्य प्रीक्षा करें पुरा कोर्स १२ दिन का मूल्य ४) रु० महसूल अलग।

पता—राय साहब के० एल शर्मा एन्ड सन्स रईस एण्ड बैंकर्स (R) जगाधरी (E P.)

पं० प्यारे लाल शर्मा सम्पादक प्रिंटर पब्लिशर 'रंगीला मुसाफिर' जगाधरी ने अशोक प्रिंटिंग प्रेस जगाधरी में ला० परमा नन्द के प्रबन्ध द्वारा छपवा कर रंगीला मुसाफिर कार्यालय से प्रकाशित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

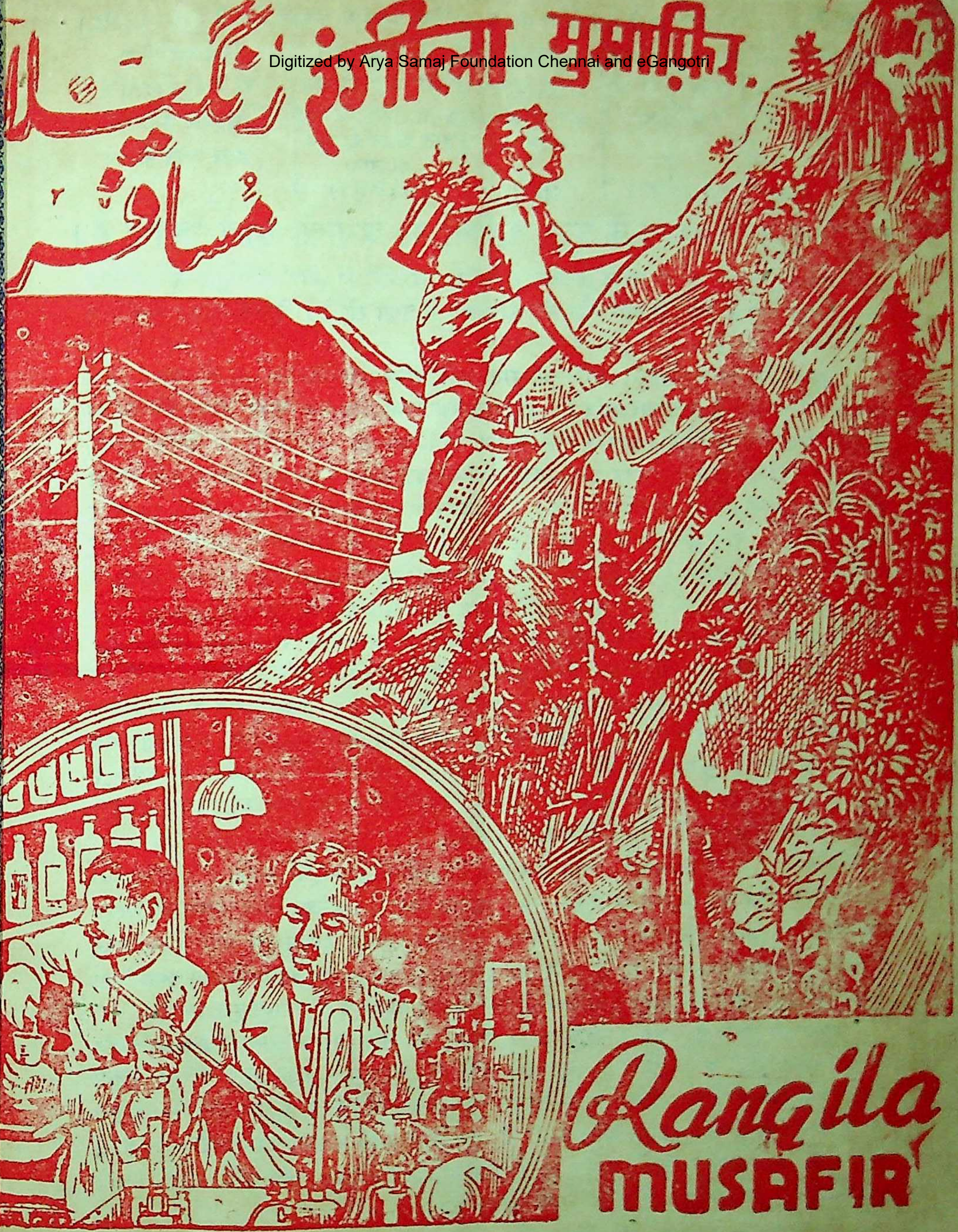

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(टी० बी०) 'तपेदिक' चाहे फेफड़ों का हो या अंतड़ियों का बड़ा भयंकर रोग है। (T.B.)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) पहली स्टेज	(२) दूसरी स्टेज	(३) तीसरी स्टेज	(४) चौथी स्टेज	अन्तिम स्टेज
मामूली ज्वर और खांसी	ज्वर खांसी की अधिकता	शरीर सूखना ज्वर खांसी की भयंकरता	सभी बातों की भयंकरता शरीर पर वर्म दस्त आदि का शुरु हो जाना	रोगी की मौत और भयंकर जर्मों का इधर उधर फैलना
जबरी	(JABRI)	जबरी	(JABRI)	

इस दुष्ट रोग पर भारत के पूज्य ऋषियों की अनोखी खोज 'जबरी' है।

क्या अभी तक आपने भारत विख्यात महौषधि "जबरी" का नाम नहीं सुना जो इस दुष्ट और भयंकर रोग से जिन्दगी और मौत की कशमकश में तड़प रहे हैं। देखिये भारत के कोने २ से लोग क्या कहते हैं।

डाक्टर भी आश्चर्य करने लगे—श्री राम नाथ शर्मा Retd. A. . S. मोह० सुती (इटावा) से लिखते हैं कि हमारे साले श्री गजराज सिंह शर्मा सिगनल फिटर हापुड़ (मेरठ) को मैडिकल आफिसर मुरादाबाद ने टी० बी० बताया था। आपकी दया जबरी के सेवन से वह बिल्कुल अच्छा हो गया। डाक्टर लोग इसे देख कर दङ्ग रह गये कि इतनी जल्दी कैसे अच्छा हो गया मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूं। और देखिये- (२) ला० काशी प्रसाद वैश्य दारानगर (इलाहाबाद) (३ बाबू मुन्ना लाल स्टोरकीपर सिंभावली शूगर मिल पो० बक्सर (मेरठ) (४) बाबू राम सिंह घर नं० ६१ रोठा मन्डी देहरादून (५) श्री तोसलहुसेन रईस मुकाम मुसेपुर पो० भरतकुण्ड (जिला फैजाबाद) (६) डा० ठाकुर सिंह नेपाली मुकाम कटेया पा० हरलखी जिला दरभङ्गा (७ राम खेलावन राम भीखुराम पा० बाजार गुसाई जि० आजमगढ़ (८) चन्द्रमणि पांडे मुकाम कुरेहड़ा पो० महनाजपुर जि० आमजगढ़ आदि इसी प्रकार हजारों रोगियों का कहना है कि जबरी दवा नहीं है बल्कि रोगी को काल के भयंकर गाल से बचाने वाली ईश्वरीय शक्ति है। जबरी भारत के पूज्य लंगोट बन्द ऋषियों की अद्भुत खोज और आयुर्वेदिक विद्या का एक अनोखा चमत्कार है। यदि आप सब तरफ से नाउम्मेद हो चुके हों एक्सरे (X-Ray) आदि के बाद डाक्टरों हकीमों ने भी जवाब दे दिया हो तो भी एक बार परमात्मा का नाम ले कर 'जबरी' की परीक्षा जरुर करें परीक्षार्थ ही दस दिन का नमूना रखा गया है। जिस में तसल्ली हो सके।

(टी० बी०) तपेदिक और पराने ज्वर के हताश रोगियों! अब भी समझो (T. B.)

अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत। इस लिये तुरन्त आडर देकर रोगी की जान बचावें। सैंकड़ों डाक्टर, हकीम वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं तार आदि के लिए हमारा पता केवल "जबरी" जगाधरी लिख देना काफी है तार से यदि आर्डर दें तो अपना पूरा पता दें।

मूल्य इस प्रकार हैं: जबरी स्पेशल न० १ अमीरों के लिये जिस में साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिये सोना, मोती अभ्रक आदि की मूल्यवान भस्में भी पड़ती हैं। मूल्य पूरा कोर्स ७५) नमुना १० दिन के लिये २०) रु० जबरी न० २ जिस में मूल्यवान जड़ी बूटियां हैं पूरा कोर्स २०) नमूना १० दिन के लिये ६) रु० महसूल आदि अलग है। आर्डर में पत्रका हवाला तथा जबरी न. १ या २ तथा अपना पता साफ २ लिखें पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिये मूल्य मनी आर्डर से भेजें। यदि Air mail से मंगवाना हो तो २) रु० खर्च अधिक भेजें।

पता—राय साहब के० एल० शर्मा एन्ड सन्स रईस (R) जगाधरी (E.P.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माला का सन् १९५७ का विशेषांक 'पद्मप्रभाकर,

यह ३०० वर्ष का प्राचीन ग्रन्थ है, विद्वान संग्रहकार ने ऐसे २ ग्रन्थों का संग्रह दिया है जिस के नाम भी सुनने को नहीं मिलते। ऐसे २ योग हैं जिन्हें वैद्यसमाज बिल्कुल नहीं जानता ऐसे सद्य फलप्रद हैं कि प्रयोग करने पर चकाचौंद होना पड़ता हैं इनमें सभी रोगों पर सद्य फलप्रद योग दिये गये है जिन्हें जानने से वैद्य माला माल हो सकते है व्यापारी पढ़ लखपती बन सकते है सदग्रहस्त सैकड़ों रुपयों का वैद्य डाक्टरों को देने पड़ते है, उन्हें बचा सकते हैं और बहुत काल तक की पीड़ा को हल्का कर सकते है मोतिया बिन्द, जलोदर कुष्ट प्रमेह के २० भेद तो ऐसे हैं जो देखे सुने नहीं जाते पर लक्षण देखे जाते हैं। बड़ी सुन्दर चिकित्सायें हैं।

प्रसंशापत्रों की भरमार है। इसके सिवाय कुछ चिकित्सा आश्रम के परीक्षित १२५ योग चार २ आने वाले भी नि:सकोच दे दिये गये जिनकी जानने की फीस २।।—२।। रुपया थी इस प्रकार ३२५ रु० के योग तो मिलही जाते हैं मुफ्त और सर्व रोगों के चमत्कार हैं इस अंक का दाम १) है पर माला के ग्राहकों को मुफ्त दिया जाता है इस प्रकार जनवरी की विशेषांक प्रभाकर २ रु० का का फरवरी का स्वर्ण बसन्त मालती अंक १] का इस प्रकार ३०] का माल दो अकों में ही मिल जाता है ४।।] में १० अंक पढ़ने को मिलेंगे इनमें श्री कचरडीश्वर तन्त्र का सरल सुबोध हिंदी भाष्य रहेगा जो संसार से दरिद्रता मिटाने की गारन्टी होगा। सोना चांदी बनाने के योग देगा, एक अंक हजारों रुपयों का होगा अत: आज ही ग्राहक बन जायें।

❀'अनुभूत योगमाला का स्वर्ण बसंत मालती अंक❀

इस अक ने भारत वर्ष में क्रांति उपस्थित करदी है। लोग देखते हैं वाह वाह कहते हैं आप भी देखिये—कितने बड़े अध्ययन और मनन के बाद सैकड़ों वर्षों से स्वर्ण बसन्त मालती क्रतिलुप्त थी मनमाने ढंग से लोग इसे बनाते थे इस घोर अन्याय को दुर करने के लिये—

१—नवीत किसे कहते हैं? दूध निकले हुये को वा दही से निकले हुये को।

२—नवनीत कितना तौल में डालना चाहिये?

३—नींबू रस की मात्रा कितनी होनी चाहिये?

४—काली मिर्च डालना था धुली हुई सफेद मिर्च?

५—वैज्ञानिक ढग से नवनीत और नींबू रस क्या प्रभाव करते है: क्यों इसकी योजना शास्त्रकारों ने की है।

यदि आपको जानना है तो इस ग्रन्थ को पढ़ना चाहिये बड़े मार्के के साथ पद पर शास्त्रीय प्रमाणों से उपरोक्त विषय स्थापित किये गये है। इस अक का मूल्य १)० है पर ग्राहकों को मुफ्त दिया जाता है आज ही ४।।) भेजकर ग्राहकों में नाम लिख लीजिये वरना पछताना पड़ेगा इस अक की भारी बिक्री है सम्भव है दूसरा संस्करण हमें निकालना पड़े तो आप प्रतीक्षा में ही रहेंगे

मैनेजर—अनुभूत योगमाला आफिस बरालोकपुर, इटावा (यू.प.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोटर कार

कुमारी सुशीला, देहली।

पंजाब के एक प्रसिद्ध नगर में एक पुलिस इन्स्पैक्टर रहता था। एक दिन वह एक स्थानीय अधिकारी की तहकीकात के सम्बन्ध में. जिस पर रिश्वत का अभियोग चल रहा था उसके घर गया। तहकीकात करते समय एक नवयुवक उनके सामने आया। पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह उसी अफसर का पुत्र है। लड़का इन्सपेक्टर की आंखों में जंच गया।

जब इन्सपेक्टर साहब संध्या समय घर पहुंचे तो अपनी धर्म पत्नी को बतलाया कि आज मैं जिनके यहां मुकदमें की तहकीकात के लिये गया था उनके यहां पचीस छबीस वर्ष का लडका है। घर अच्छा है तथा लड़का भी अच्छा सुसिक्षित, सुशील तथा प्रभाव शाली है। क्या ही अच्छा हो कि हमारी लड़की का सन्बन्ध उनके लड़के से निश्चित हो जाये। यह सुन कर धर्मपत्नी ने उत्सुकता से कहा कि देर क्यों करते हो, विवाह सम्बन्धी बात चीत उनके उनके साथ शीघ्र आरम्भ कर दीजिये। अभी तो मुकदमा चल रहा है वे इसके दबाव में आकर अपने लड़के के साथ विवाह करना स्वीकार कर लेंगे। यही सोचकर इन्स्पेक्टर ने रिपोर्ट सरकारी अफसर के पक्ष में लिख कर डिप्टी सुपरेन्टेन्ट पुलिस को पहुंचा दी और इस प्रकार सरकारी अफसर मुकदमा जीत गया।

मुकदमे में विजयी होने कीप्रशन्नता में वह अफसर पुलिस इन्सपेक्टर को कुछ रुपये और मिठाई इत्यादि देने गया। यह देखकर इन्सपेक्टर ने कहा कि यह सौगात लेने का मुझे कोई अधिकार नही क्योंकि मैंने आपके साथ कोई विशेष रियायत नहीं की। आप निर्दोष थे अता आपके पक्ष में रिपोर्ट देना मेरा कर्तव्य था। हाँ एक बात है जो मैं इस उचित अवसर पर कहना चाहता हूं। वह यह कि ईश्वर प्रेरणा से हमारा सम्पर्क हुआ है. इसकी वृद्धि के लिये क्या ही अच्छा हो कि यदि मेरी लड़की का पाणि-ग्रहण संस्कार आपके सुपुत्र के साथ होना निश्चित हो जाये हमारे लिये यह बात अत्यन्त प्रशन्नता की होगी।

चूंकि यह अधिकारी एक प्रकार से उनका आभारी था अतः वह अस्वीकार न कर सका और यह कह कर कि अच्छा मैं अपने घर में सलाह करके आपको सूचित करूंगा, चला गया फलतः बातचीत होते होते कुछ दिनों पश्चात सम्बन्ध पक्का होने पर सगुन की रस्म भी हो गई।

जब विवाह की तिथि निकट आई तो लड़के के पिता एक दिन पुलिस इन्सपेक्टर के घर पहुंचे। उन्होंने विवाह सम्बन्धी बातचीत करते समय इंस्पक्टर साहब से. कहा कि वैसे तो कोई बात नहीं जो आप देंगे स्वीकार है परन्तु लड़के की कामना है कि आप उसे चाहें और कुछ दें या न दें, आपको एक मोटर कार देनी होगी। यह सुनकर इन्स्पैक्टर अत्यन्त चकित हुए और कहा कि मोटर कार देना तो मेरी हैसियत के बाहर है क्यों कि मेरा एक ही लड़की होती तो शायद मोटर कार देने के लिये प्रयत्न करता। दूसरे अब मैं रिटायर होने वाला हुं। उस समय लड़के का पिता चला गया परन्तु वह चुप होकर न बैठा। उतने दूसरे लोगों के द्वारा फिर इंस्पेक्टर साहब से मोटर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध में कहला भेजा। इस बार इन्स्पेक्टर साहब ने उनसे कहा कि मैं नई मोटर तो नहीं दे सकता। यदि तुम इसी बात पर अड़ गए हो तो यह हो सकता है कि मैं आपको अपनी मोटर पर रंग करवा कर दे दूं। मैं यह सोच लूंगा कि मेरे स्थान पर मेरे दामाद ने मोटर कार काम में ले ली। परन्तु कुछ दिन पश्चात जब इन्स्पेक्टर साहब को यह ज्ञात हुआ लड़के के पिता का ख्याल नई मोटर कार लेने का है तो उसने तग होकर स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि यदि यही बात है तो अपने लड़के के विवाह के लिए कोई और घर देख लें जो आप को मोटर कार दे सके।

इन्स्पेक्टर साहब की यह बात सरकारी अफसर को अत्यन्त भद्दी लगी परन्तु यह सोच कर कि दोनों पक्षों तथा इष्ट मित्रों के सम्मुख मुझे लज्जित होना पड़ेगा अपने लड़के का विवाह इन्स्पेक्टर साहब की लड़की के साथ करने को उद्यत हो गया। उसने उस समय तो मन मार लिया परन्तु मोटर की प्रबल इच्छा मिट न सकी उसने विचार कर लिया था कि विवाह के पश्चात इन्स्पेक्टर साहब का ऐसा तग करूंगा कि उन को छटी का दूध याद आ जायेगा।

विवाह के पश्चात जब पुष्पों से सजी मोटर में बैठ घर पहुँचे ही थे कि चारों ओर से बधू पर व्यंग होने आरम्भ हो गये।

एक ने कहा कि तुम तो कहते थे कि वे मोटर कार नहीं देते यह मोटर कार नहीं तो क्या है। दूसरी बोली कि यह कार तो हमारे पड़ोसी सेठ की है इसका बाप कार क्या देगा।

एक वृद्धा स्त्री इतने में बोल उठी कि इसमें चर्चा करने की क्या आवश्यकता पड़ी अब न दो तो फिर दे देंगे। जिसने लड़की दे दी उसने सब कुछ दे दिया। इस एक और नातेदार बोला कि लड़की देना तो साधारण बात है लेकिन कार तो दिल वाले ही देते हैं।

ऐसे कटु व्यंग सुनकर जब वधु पिता के घर लौटी तो उसका हृदय टूक टूक हो गया था। माता पिता के पूछने पर भी वह कुछ न कह सकी हां अपने हृदय की व्यथा उसने अपनी सखी से कह कर जी हल्का किया। सखी ने जब उसके दुःख का का कारण उसके माता पिता को बतलाया तो उन्हें अत्यन्त दुःख हुआ और उन्होंने जामाता से जब वह लड़की को लेने आया तो कहा कि जो कुछ भी मोटर कार के बारे में आप को कहना था हमसे कहना चाहिये था। आपने लड़की को क्यों व्यर्थ तंग किया। लड़की तो निर्दोष है। जामाता को यह बात बहुत बुरी लगी और जब वह अपनी धर्म पत्नि को ले कर अपने घर पहुंचा तो उसने माता पिता तथा बहन को बतलाया कि बहू ने पीहर जाकर हमारी निन्दा की है। इतना कहना था क सास और ननद सब के सब बहू पर क्रोधित हो उठे और कहने गये कि वह सवत्र निन्दा करके हमारे घर का मान घटाती है उसका निर्वाह किसी भी प्रकार हमारे यहां नहीं हो सकता। बहू ने कहा कि उस ने अपने माता पिता के अतिरिक्त और किसी दूसरे व्यक्ति को कुछ भी नहीं बतलाया और उनको भी इसलिए बतला दिया था कि वे आप की मोटर कार की इच्छा पूरी कर दें।

परन्तु वह क्लेश दो तीन मास तक भी दूर न हुआ तो तग आकर लड़की फिर अपने पिता के यहां चली गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ समय पश्चात जब सूसराल वालों ने सुना कि बहू के बाल-बच्चा होने वाला है, तो लड़का होने की सम्भावना में बहू को फिर बुला लिया। परन्तु दुर्भाग्य से हो गई लड़की। सुसराल वाले और भी विरुद्ध हो गये और कहने लगे कि हमने तो सोचा था कि लड़का होगा तो अपनी सुसराल से मोटर-कार लायेगा और अब तो हम को मोटरकार देनी पड़ेगी। यह तो बहु बहुत कुलच्छणी आई जब से घर में पैर रखा है हमने एक दिन भी सुख से नहीं खाना खाया है। हम तो अपने लड़के का दूसरा विवाह करेंगे।

दुःख से ४० दिन व्यतीत करने के पश्चात लड़की पिता के यहां आई। १ वर्ष से अधिक व्यतीत हो गया परन्तु सुसराल वालों ने लड़की को न बुलाया। अन्त में पचायत बैठी। वधू पक्ष के व्यक्तियों ने लड़के से लड़की को रखने का आग्रह किया और अन्त में निर्णय भी यही हुआ

* गीत *

—बख्शी संतोश कुमार अर्जुन—

मैं क्यों जग पर विश्वास करूं,
जिसने पग पग पर छला मुझे,
लूटी सुन्दर काया पल में,
ऐसे संदिग्ध जगत में अब किस
किस पर अनुराग करूं।

जग सदा स्वार्थ परिपूर्ण रहा
अपने मद में ही चूर रहा,
इस स्वार्थ पूर्ण दूभर जग का,
क्यों नहीं आज अपमान करूं।

भूले कहते जग को अपना,
पर मैं कहता जग को सपना,
फिर सपनों के झूठे जग में,
किसे से अपनी पहचान करू।

—धरती का भगवान—

दाना एक परिश्रम का ही होता सदा महान है।
श्रम कर जीने वालों को ही मिलता जग में मान है
कठिन परिश्रम करने वालों का देते सब साथ हैं,
श्रम से बढ़ने वाले पैरों पर झुकता हर माथ है,
श्रम के बिना नचल सकता इस जगका कोई खेलहै
श्रम से ही निकाल सकते हम बालू से भी तेल है,
श्रम के बल पर ही भू देती नित्य स्वर्ण का दान है
आलस करता पतन और श्रम ही देता वरदान है
श्रम के बल पर दुनिया जीती बनते कितने काम है
वे ही जग में कुछ कर पाते जिनकी नींद हराम है
स्वप्न सजीले सत्य बना करते हैं श्रम के मोल पर
चढ़े सभी उन्नति के गिरि पर जय २ श्रमकी बोल
श्रम के बल पर ही धरती से उपजाते हम धान हैं
जिससे दीन दुखी मानवता का होता कल्याण है
यहां अजन्ता और एलोरा की क्या अनुपम शानहै
ताज महल की शोभा जिस पर हर मानव कुर्बानहै
और भाखरा नगल देखो जिस का जग में मान है
लाल किले की सुन्दरता कर सकता कौन बखान है
श्रम के संचि तस्वेद बिन्दु का करते सब गुणगानहैं
श्रम के बल पर ही पूजा जाता देखो पाषण है
श्रम ही है इतिहास बनाता निज स्वदेश उत्थान क
श्रम ही होता सहयोग हर मानव के निर्माण क
श्रम करने वाला जीता है धरती पर सम्मान से
पथ पर रुक जाने वाला कब जी सकता अभिमानसे
श्रम से ही बनता मनुष्य इस धरती का भगवान है
इसी लिए तो श्रेष्ठ धरा परहोता श्रम का दान है

—प्रेमनारायण गौड़—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थानी भाषा में पूर्णावत लिखित कहानी

रा ज पु ता णी

अनुवादक, श्री धनपति टुकलिया

(१)

रेत के टीले जल रहे हैं। लू इतनी गर्म-गर्म चल रही है कि कानों के बालों को जलाती हुई निकल रही है। नीचे पृथ्वी तप रही है और ऊपर आकाश जल रहा है। खेजड़े की छाया में बैठा हुआ सौटा युवक अन्दर व बाहर दोनों तरफ से दावानल में धधक रहा है। दुपहर केसूर्य की मुंह पर सीधी पड़ने वाली किरणें आंखों में चका चौंद कर रही हैं किन्तु उसे इसका ध्यान नहीं यह तो गहरे विचारों में ऐसा डूबा हुआ है कि उसे चारों दिशायें एक सी लग रही हैं।

आज उसके होने वाले सुसराल से ससुर का संदेश लेकर एक व्यक्ति आया है; जिस ने कहा है कि शादी करनी है तो पन्द्रह सौ रुपये तीन दिन में आ कर गिनवा जावो, नहीं तो आखा तीज को तुम्हारी होने वाली मांग का दूसरे के साथ विवाह कर दिया जायेगा। सदेश सुनते ही सोढा युवक की आंखों में खून चमक गया, अपने आप हो हाथ तलवार की मूठ पर जा जमा और दांतों से होठों को काटने लगा। उसकी मांग दूसरे की हो जायगी जिस की गोद उसकी मां ने रुपया नारियल से भरी थी और जिस के विवाह के स्वप्न देखते उसके माता पिता मृत्यु के ग्रास हो गये, घर उजड़ गया। कौन खेतीवाड़ी, गाय भैंस सम्हालता।

घर में तंगी होने लगी. एक-एक कर खेत, ऊँट, गाय, बैल, घर गृहस्थी का सामान सब गांव के बोहरा बनियों के हाथ में जमा हो गये। अब १५०० रुपये कहाँ से आवें? यह रुपये दिये बिना उसकी मांग दूसरे की हो जायगी, जिसके सपने दस वर्ष से यह देखता रहा वह मांग आने वाली आखा तीज को दूसरों के साथ कर दी जायगी?

सोढा युवक के चेहरे पर खून दौड़ गया आज तक कभी ऐसा हुआ है? मांग के लिये तो सिर कट जाते हैं, मैं जीवत रहूँ और मांग का दूसरे के साथ विवाह हो. कभी नहीं कभी नहीं।

[२]

'बोहरा काका मेरी कुल शर्म तुम्हारे हाथों में है। शर्म तो हमने बहुत रखी है, किन्तु अब तू ही बता कि किन खेतों पर तुझ को १५०० रु० गिन दूं अब क्या रखेगा?

मेरे पास अब है ही क्या? राजपूत की शान एक तलवार अब मेरे पास बची है।

तो भाई किसी दूसरे बोहरे का दरवाजा देख

सोढा बेचैन हो उठा, 'देखो काका तुम ने हमारे घर की सींक सींक झूठे सच्चे हिसाब लिख कर ले ली है। मेरे घर में तो ठीकरी भी नहीं छोड़ी है। मैंने तुन्हें सब कुछ दिया और भी जो मांगो देने के लिये तैय्यार हूँ। किन्तु इस समय मेरी मेरे घर की शर्म रख लो। जिस की मांग दूसरे के साथ चली जाय वह पुरुष तो जीवित भी मृतक के मयान ही है। इस तलवार जगदम्बा को सिर पर लगा कर सौगन्ध खाता हूं कि तुम्हारा पैसा पैसा दूध के समान धोकर चुका दूंगा। तुम्हारी इच्छा हो उतना व्याज लग लेना। इस समय मुझे रुपये गिन दो।

राजपूत का जन्मा है तो ऐसा कर जो मैं खत में लिखूं तू उस पर दस्तखत कर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर चाहो तो दे दूंगा किन्तु इस समय मेरी शर्म रख लो।'

बनिये ने खत लिख कर आगे किया, कान पर रखी कलम को निकाल उसे पकड़ाई, और कहा पढ़ लो और सच्चा राजपूत है तो दस्तखत कर दे।

सोढा ने पत्र पढ़ा? लिखा हुआ था, यह रुपये व्याज सहित जब तक नहीं चुकाऊं तब तक अपनी विवाहता पत्नी को बहिन के बराबर समझूंगा।

होठों को दांतों से दबाते, लाल लाल धधकती आंखों से देखते उसने हस्ताक्षर कर दिये।

[३]

वर्षों के पश्चात आज सोढा का सूना पड़ा हुआ घर पुनः सजीवन हुआ, आज उसके दरवाजे पर दीप जला। दीमकों से पीड़ित, गन्दगी से भरा उस का घर आज लिप-पुत जाने पर मुस्करा रहा था। बड़े दिनों के बाद उसने आज अपने घर में घुँघरु की छम छम सुनी थी। सोढा के ससुराल से पत्नी के साथ आये गाड़ी भरे समान से गृहस्थी को पुनः जमाया। सोढा भोजन करने के लिये बैठा, पत्नी हाथ से बनाई हुई चीजों की पखों से हवा करने लगी। हाथी दांत की चूड़ियाँ पखा के साथ हिलते हाथ में मृदुल झंकार कर रही थी और उन्हीं हाथों से वह अपने पति को परोस रही थी। राजपुताणी के नयनों से प्रेम उमड़ रहा था किन्तु सोढा की आँखें गम्भीर थी। वह परोसती रही यह खाता रहा। सोढा चाहते हुए भी बोल नहीं पाता यह तो आगे होकर बोले ही कैसे? भोजन समाप्त कर कुल्ले करने लगा, राजपुताणी जल्दी उठ कर लोटे से हाथों पर जल डालने लगी, सोढा की नजर लम्बे घूंघट के अन्दर पसीने से चमकते हुए चेहरे पर पड़ी उस की आँखों के आगे बनिये का कागज पत्थर की चट्टान के समान आकर खड़ा हो गया, उसके हाथ कांप गये। लोटे से गिरने वाली पानी की धार भूमि पर पढ नाल में बह गई।

रात हुई—सुहाग रात की बेला आई ससुराल से आये पलंग पर सोये किन्तु सोढा मियान से तलवार निकाल अपने दोनों के बीच रख मुंह फेर सो गया।

राजपुताणी सहम गई—यह क्यों, मेरे से नाराज हो क्या?

एक, दो, तीन, दस पद्रह रातें निकल गई। बड़ी तलवार काली नागिन के समान उनके मध्य पड़ी रहती। दिन में बातें होती, बात करते समय तो सोढा के मुंह से अमृत बहता आँखों से प्रेम टपकता, किन्तु रात पड़ते ही उस के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकता वे हो आँखें सामने की तरफ देखती भी नहीं। रात भर इतने समीप रहते हुए भी ऐसा लगता मानों दोनों बहुत दूर हैं और दिन में दूर रहते हुए भी ऐसा लगता मानों बहुत ही समीप हैं।

राजपुताणी ने बारीकी से सोढा के व्यवहार देख गहराई से सोच विचार किया। किन्तु उस से रहा नहीं गया ज्यों ही सोढा तलवार निकाल पलंग पर सोने लगा तो उसने झुक कर उसके पांव पकड़ लिये और बोली—मेरे से क्या गलती हुई है मेरे से नाराज क्यों हो? गलती तो मेरे पिता ने की है जो रुपयों के लिये तुम्हें कष्ट दिया, और आँखों से ढल ढल कर आंसू सोढा के पांव पर जा पड़े। और सोढा ने सारा कारण बताते हुए कहा लो इस कागज को पढ़ लो। तो वह बत्ती की रौशनी में पढ़ने लगी। ज्यों ज्यों वह कागज पढ़ती गई त्यों-त्यों उस के मुँह पर गम्भीरता आती गई और असमंजस व संतोष से उसका मुँह चमकने लगा। कागज को लौटाती बेफिक्री की सांस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेती हुई वह बोली—'इसकी चिंता नहीं मुझे तो डर तुम्हारी नाराजगी का था। व्रत का पालन बड़ा सरल है।'

प्रातः होते ही, अपने छोटे-मोटे गहने आदि सामान गांठ में बांध सोढा के सामने रख उसने कहा—'इनको बेचकर घोड़े खरीदो, कर्जा उतारना सर्व प्रथम धर्म है। घर बैठे किसान लोग अच्छे लगते हैं। राजपूत तो सेवा से शोभा देते हैं। चल कर किसी राजा की सेवा करेंगे।'

'तो तुम्हें पीहर में छोड़ दूं? तुम कहा रहोगी? 'पीहर में क्यों? जहां तुम वहीं मैं। दो घोड़े ले आओ।'

किंतु तुम साथ निभोगी कैसे!

'क्यों नहीं? क्या मैं राजपूत की जन्मी नहीं हूँ? मुझे भी तुम्हारे समान तलवार बांधना आता है। मैंने भी अपने पिता के घर घोड़े दौड़ाये हैं।'

'तुम्हारी इच्छा और सोच लो।'

'सोचा ही है।' तेज से दमकते हुये मुंह को देखकर सोढा चकित रह गया।

[४]

सूर्य करीब आकाश में सवा हाथ ऊपर चढ़ा होगा। चित्तौड़ की तहलटी की ओर दो घोड़े तेज चाल से दौड़ रहे थे। दोनो पर बैठे युवक एक ही उम्र के और एक ही पोशाक पहिने है। उनके हाथ के भाले सूर्य की किरणों से चमक-चमक रहे हैं, कमर में बंधी हुई तलवारे घोड़े के दौड़ने के साथ साथ रगड़ खा रही हैं। उनको देख कर कौन कह सकता है कि इनमें से एक महिला भी है। राजपुत्राणी इस समय एक अधेड़ युवक-सी लग रही है। हाथी दांत का चूड़ा पहनने वाली पतली कलाइयों के मजबूत हाथ आज भाला जकड़ कर पकड़े हुए है। लज्जा के साथ धीरे-धीरे कोयल के समान बोलने वाली ने आज अपना कंठ शूरवीर का सा कर लिया है। घूंघट के अन्दर शर्म के मारे रक्तिम हो जाने वाले कपोल भी आज नहीं रहे। आज तो वह सूर्य के समान दमक रहे हैं और आत्म विश्वास व साहस की किरणें उनसे फूट रही हैं। घोड़े दौड़ाते हुए वे एक मिनट में चित्तौड़ की तलहट पैर पहुंचे। उधर से राणाजी दरवाजे से बाहर निकले—उन युवकों के रूप को देख कर उनकी नजर उन पर जम गई और उन्होंने घोड़े की लगाम खींच कर पूछा कौन से राजपूत हो?

'सोढा।'

इधर क्यों आये?

सेर बाजरे के लिए, अन्नदाता।

'शिकार में हमारे साथ हो आओ।

मुजरा करके दोनों जवानों ने घोड़ा को मोड़ कर राणाजी के साथ घोड़े किये सूअरों के साथ घुड़दौड़ हुई। आगे आगे सूअर और उन के साथ हाथ में भाले लिए सरदार घोड़ें को बेतहाशा भगा रहे हैं। इन में से एक सूअर घोड़ों के घेर को चीरता हुआ आगे निकला, सब चिल्लाये--'एक गया-गया, जाने न पाये मारो २

सब घोड़ों की लगामें उस की ओर मुड़ी, इतने तो एक घोड़ा बिजली की तरह आगे आया सवार ने भाले का वार किया और व[illegible] अंतड़ियों को चीरता हुआ आर पार निकल [illegible] राणाजी दूर से देखते ही शाबास! शाबास!! चिल्ला पड़े। पसीना पोंछता हुआ सवार नीचे उतर, मुजरा कर वापिस घोड़े पर बैठ गया कौन कहे और कौन कल्पना कर सकता है कि भाले के एक वार में सूअर को समाप्त करने वाली एक औरत थी।

राणा जी ने प्रसन्न हो कर आज्ञा दी कि - आपलोग वीर हो, आज से आप दोनों हमारे महल पर पहरेदार का काम करें दोनों ने—क्षमा अन्नदाता कह कर सेवा स्वीकार कर ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[५]

सावन के महीने की काली रात, बाहर कल-कल करते नाले वह रहे हैं। ऊपर आकाश में काले बादल छाये हुए हैं और ऐसे गजते हैं मानो पृथ्वी को ही पीस देंगे, उधर बिजली ऐसी चमकती है कि देख कर आंखे मिच जाती हैं और खोलने पर भी नहीं खुलती। अंधेरा इतना है कि हाथ से हाथ नहीं दिखता। राणा जी तो सो रहे हैं और दोनों राजपूत पहरा दे रहे हैं दोनों के हाथों नगी तलवारें हैं। बिजली की चमक के साथ वे भी चमकती है करीब आधी रात का समय होगा, राणा को नीद आ गई है किन्तु राणी के आंखों में नीद नहीं है। वह लेटी लेटी प्रकृति के अद्भुत दृश्यों को देख रही है।

दोनों राजपूत तलवारें निकाले महल के के बाहर पहरा दे रहे हैं। उत्तर में बिजली चमकी, राजपुताणी को याद आया, हमारे देश की ओर चमक रही है। इस याद के कई अन्य साथ की बातें भी स्मृति पटल पर अकित हो गई आज यह कमाई के लिये मरदाना वेश धारण करके विदेश में आधी रात के समय पहरादे रही है। अन्य कई स्त्रिया घरों के कमरे बन्द कर सो रही हैं। वह नगीं तलवार लिये खड़ी रात काट रही है। इतने में ही कहीं पास से एक पक्षी बोला—'—'पी पी' नारी हृदय की दुर्बलता जाग्रत हुई। पिया कहां हैं ? बहुत ही पास है फिर भी दूर हैं मेरी गिनती न तो संयोगिनी में है और न बियोगिनी में हम से तो चकवे चकवा अच्छे हैं जो जी दुर-दूर बैठे बियोग सहन कर रहे हैं। मैं तो रात दिन साथ रहने पर भी वियोगिनी सी दुर हूं उसका बांध टूट गया। उसने पास जाकर सोढा के कन्धे पर हाथ रखा, हाथ का स्पर्श होते ही ऐसा लगा मानों बिजली छू गई हो, दोनों कांप गये। सोढा सचेत हुआ राज पुताणी भी सचेत हुई और निस्वास छोड़ते इसने कहा—

देश विया घर पारका, पिय बाँधव रे भेस
जिण दिन जास्यां देस में बांधव पीव करेस ॥

(अर्थात—देश छूट गया, परदेश में हैं। पति साथ में है किन्तु वह भाई के रूप में है, जब इस देश से जायेंगे तब उसे पति बनायेंगे।)

रानी लेटी-लेटी यह सब लीला देख रही थी। प्रातः होते ही उसने राणा जी से कहा—'इन सोडा भाइयों में तो कोई भेद है।'

क्यों क्या बात है ? सिर तोड़ दूं।"

"तोड़ने की नहीं जोड़ने की आवश्यकता है। इनमें एक नारी है।"

रानी बोली बात मत करो। यह शक्ल यह आँखों के तौर, मरदानी निशानियां कभी औरतों में होती भी हैं।'

"आप मानों चाहे मत मानों। इसमें एक औरत है और कोई आफत में है।"

'इसका पता कैसे लगायें ?'

'इसकी परीक्षा मैं करूंगी। आप महल में बैठ जांय और देखते रहिये।'

उन दोनों को बुलाकर रानी ने चुल्हे पर दूध चढ़ा दिया और बाहर निकल आई। ईशारे से दासी को भी बाहर बुला लिया। थोड़ी देर में दूध गर्म हो उफनने लगा।

सोटा राज पुतानी की तरफ आंख से इशारा करे इतने में तो रानी ने आकर पूछा 'बेटी, सच बता तू कौन है ? मेरे से छिपा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(शेष पृष्ट ८ का)

मत।" राजपुताणी ने आंखो को हाथ से ढक कर रानी जी की छाती में मुंह छिपा लिया।

सोढा ने सारी कहानी सुना दी। राणाजी कहानी सुन कर अति प्रसन्न हो गये और कहा, 'तुम्हारे कर्ज के लिये रुपये व्याज सहित मैं अपने सवार के हाथ तुम्हारे गाँव भिजवाता हुँ। तुम यहां रहो और अपनी गृहस्थी जमाओ। सोढा ने हाथ जोड़ कहा—"अन्नदाता की आज्ञा शिरधार्य है किन्तु जब तक मैं स्वयं जाकर कर्ण नहीं चुकाऊ तथा कागज को अपने हाथ से फाड नहीं डालू' तब तक क्षमा चाहता हूं। हमको विदा दीजिये।'

राणा जी ने कर्जे के रुपये और गृहस्थी जमाने के लिये बहुत सारा सामान आदि देकर उनको बिदा किया।

(दक्षिण भारती से)

=★=★=★

॥ कफ हरना ॥

यह हर प्रकार की खांसी के लिये अजीब औषधि है। यदि आपको खांसी की वजह से रात को नींद न आती हो तो आप इसे अवश्य सेवन करें पहल ही खुराक में आप इसका चमत्कार देख कर दंग रह जायेंगे। मूल्य ४० गोली का १।) रु०

॥— डिप्टी का लड़का —॥

कलकत्ते के मशहूर बाग इडान गार्डन में एक दर्द नाक दिल को हिला देने वाली सच्ची घटना हैं जिसको पड़कर आप के रोंगटे खडे हो जायेंगे केवल ।≈) का स्टाम्प भेजकर मंगावें।

पता:—

राय साहब के० एल० शर्मा एन्ड सन्स
(R) जगाधरी [E.P.]

"रेलवे मैन अजमेर के ग्राहक बनिये"

रेलवे मैन सप्ताहिक पत्र दरबार प्रेस से प्रकाशित होता है। इस में रेलवे सम्बन्धी सभी समाचार होते हैं। रेलवे कर्मचारियों व्यापारियों व यात्रियों की कठिनाइयों को दूर कराने व सरकार को उचित परामर्श देना इस का लक्ष्य है हर विभाग का रेलवे कर्मचारियों को व्यापारियों व रेलवे यात्रीयों तथा वाचनालयों को इस के ग्राहक बनकर अपनी कठिनाइयों को दूर कराना चाहिये।

कार्यालय—
दैनिक दरबार
अजमेर

मैनेजर—
'रेलवे मैन'
पोस्ट बाक्स न० ११०
अजमेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ बड़ी खुशामद की माया है ॥

श्री भगवती लाल 'मधुकर' देहली

जादू टोना, जन्तर मन्तर,
असर नही दिखलाएं प्यारे,
साला फूफा या बहनोई
अकड़ जाएं अक्कल के मारे।

सास, ससुर कुप्पा हो जाएं,
घर वाली घुड़की बतलाए,
रोज रोज दफ्तर में अफसर,
लाल लाल आंखे दिखलाए।

तिकड़म तीर सभी हो जाए,
चतुराई चक्कर खा जाए,
हथकण्डे हथियार डाल दें,
बात न कैसे भी बन पाए।

दूर तरक्की जब रहती हो,
सम्पादक से दाल न गलती,
लाख लिखो तुम बढ़िया कविता,
पड़ी पड़ी घर में ही सड़ती।

फिर भी तनिक उदास न होना,
मेरे कहने को अज़माना,
करो खुशामद, करो खुशामद,
चापलूस का आज ज़माना।

काला अक्षर भैंस बराबर,
खाक नही तुमको आता हो,
मोटी अक्कल भौंडी सूरत,
कार्टून भी शरमाता हो।

नहीं सलीका है कपड़ों का,
अटन बटन सब शन्ट हुऐ हैं,
सिर्फ चापलूसी के बल पर,
बुद्धू भी अब चन्ट हूऐ हैं।

इसी चापलूसी के बल पर,
सिल बिल श्रीमा कहलाते,
बड़े बड़े मूरख अज्ञानी,
महा पुरुष बतलाए जाते।

चूहे चाचा बने बिलौटा,
गीदड़ शेरौ तर गुर्राते,
और चापलूसी के बल पर
'पूंजिए' नेता बन जाते।

भौंदू बने बड़े लाला जी,
बुद्धू बुद्ध सिंह कहलाते है,
तेल नमक आटे का बेचा,
धन्ना सेठ बताए जाते।

प्यादे फर्जी हो उठते हैं,
फर्जी बन जाते हैं असली
बिना खुशामद की पालिश के,
असली बन जाते हैं नकली।

चिकनी चुपड़ी परम खुशामद,
से होती दिन दूनी आमद,
इस दुनियाँ में असल यही है,
जिसने मानी बड़ी खुशामद।

इसकी नही पढ़ाई होती,
कही न इसकी कक्षा लगती,
रोज़ रोज़ ठोकर खाने से,
श्रधा भक्ति स्वयं ही जगती।

इतिहासो में इसका गौरव,
स्वर्णाक्षर में जड़ा हुआ हैं,
मंत्र चापलूसी का भाई,
राम नाम से चढ़ा हुआ हैं।

वेद पुराण, महा मुनियों का
यही कथन हैं, यही तंत्र है,
उन्नति के पथ पर ले जाने,
वाला केवल यही मंत्र है।

इसी लिये तो मैंने भाई,
इसका पावन यश गाया है,
समझदार लोगों का कहना,
बड़ी खुशामद की माया है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी से (३ बार) यह दवा सेवन करने का नियम है। जिस में सब कीटाणु (जर्म नष्ट हो जावें, और यह रोग जड़ से कट जावे; आप को कम से कम ३ खुराक अवश्य सेवन करना उचित है

(३) आशा है कि आप भूखा रहने और रात भर जागने के बारे में सब बातें समझ गये होंगे. अब यदि कोई व्यक्ति अधिक कमजोर रोगी आदि हो और पूर्ण रूप से भूखा न रह सके तो वह एक दो बार थोड़ी चाय, दूध अथवा पानी आदि पी सकता है। अंगूर आदि रसदार फल भी खा सकता है, परन्तु अन्न की कोई वस्तु न खावे, अन्न की वस्तुओं में तो २४ घन्टे के अन्दर वही खीर खाना होगा, जो औषधि मिला कर प्रातः ४ बजे खाना होगा. ध्यान पूर्वक नोट करलें

(४) बहुत से आदमी पूछा करते हैं कि खीर कितने दूध की बनाई जावे इस का कोई नियम नहीं है आप जितनी खा सकें, बना सकते हैं मामूली रूपसे एक रोगी के लिए आध सेर दूध में ५ तोले उत्तम चावल की खीर पर्याप्त होती है वैसे चाहे १ सेर दूध की बना लें यह तो अपनी इच्छा है

(५) औषधि की एक खुराक-सारी खीर में न मिलावें बल्कि थोड़ी सी खीर में मिला कर खा लें ऊपर से अच्छी खीर खा सकते हैं। खीर खा कर थोड़ी देर टहलना चाहिये. फिर चाहें तो सो सकते हैं रोटी आदि ६ घन्टे बाद खा सकते हैं।

(६) गर्भवती स्त्री तथा १२ साल से कम उमर वाले बच्चों के लिये इस दवा का सेवन करना मना है क्यों कि दवा तेज है। कम उमर के बच्चे ठीक से विधि का पालन भी न कर सकेंगे। हां १२ साल से कम उमर के बच्चों को एक खुराक यदि थोड़ी २ शहद आदि में मिला कर ३-४ दिन चटावें तो भी लाभ जरूर होता है सैंकड़ों जगह परीक्षा हो चुकी है परन्तु थोड़ी मात्रा में आयु के अनुसार एक खुराक में ५-६ दिन तक चटा सकते हैं।

(७) यह दवा "पूर्णमाशी" की रात में खाई जाती 'पूर्ण चन्द्रमा' की ज्योति रात भर या कम से कम ५-६ घन्टे खीर पर पड़ना जरूरी है इस बात का एक गूढ़ साईंटिफिक रहस्य है। भारत के पूज्य ऋषियों का यह एक अद्भुत चमत्कार है यह दवा किस महात्मा से किस प्रकार प्राप्त हुई। यदि पूरा भेद जानने की इच्छा हो तो ६) रु० खर्च कर भारत विख्यात पुस्तक "खजाना करामात" एक प्रति जरूर मंगावें। फिर आपको यही दवा नहीं बल्कि सैंकड़ों प्रकार के अद्भुत प्रयोग प्राप्त हो सकेंगे जिन को जान कर आप दुनियां में नाम पैदा कर के धन दौलत तथा जनता की भलाई और उपकार भी कर सकते हैं अधिक और क्या लिखा जावे आशा है कि इस महौषधि "चित्रकूट बूटी" के बारे में आप सब बातें भली प्रकार समझ गये होंगे। इस पर भी यदि कोई बात पूछना चाहें तो सहर्ष पूछ सकते हैं हम सदा बगैर किसी जाति भेद भाव के मनुष्य मात्र की सेवा को अपना मुख्य धर्म समझते हैं। जब ही तो कार्यालय के भगवान की कृपा से लाखों ग्राहक दुनिया के कोने कोने में मौजूद हैं। परन्तु जल्द उत्तर प्राप्त करने के लिये अपने पते का लिफाफा या =) का स्टाम्प साथ आना जरूरी है।

पता:—राय साहब के एल शर्मा एण्ड सन्स रईस एण्ड बैंकर्स R जगाधरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ चित्रकूट बूटी ❀

दमा (Asthma) और पुरानी खांसी की हमारी जगत विख्यात महौषधि "चित्रकूट बूटी" के बारे में कुछ जरुरी बातें।

(१) इस दवा से पूरा लाभ उठाने के लिये दिन भर 'पूर्णमाशी' को व्रत रखना और रातभर जाग कर परमात्मा का भजन करना जरूरी है अन्यथा पूरा लाभ न होगा, इस बात को अच्छी तरह नोट करलें! रात भर जाग कर प्रातः ४ बजे (अर्थात अगले दिन) दवा खाना होगा जैसे किसी मास ता० २० की पूर्णमाशी है तो दिन और रात उपवास रखकर ता० २१ में प्रातः दवा खाना चाहिये दवा खाने के ६ घन्टे बाद भोजन करना चाहिए बाकी सब बातें साथ की सेवन विधि में पढ़ लें। यदि जाड़े का मौसिम हो तो खाने से पहले खीर को गरम कर लें फिर दवा मिला कर सेवन करें, गरम पहिले करलें दवा खाते समय मिलाव

(२) इस अद्भुत और शक्तिशाली औषधि की सेवन विधिमें जो व्रत (उपवास) करना तथा रात भर जागना लिखा है सो ऐसा क्यों कराया जाता है इस बारे में बहुत से रोगी पत्र द्वारा पूछा करते हैं। सो यह एक साइटफिक रहस्यमय बात है हम अपने ग्राहकों को पूर्ण रूप से समझाते हैं असल बात यह है कि "दमा" और "तपेदिक" (टी० बी० दानों ही फेफड़ों से सम्बन्धित रोग हैं इन दोनों ही रोगों के जरासीम (Germs) किटाणु होते हैं। जो शरीर के प्रत्येक भाग रक्त में फैले रहते हैं। 'दमा' रोग के जर्म भी पुराने पड़ने से भयंकर और 'तपदिक' (टी० बी०) रोग काशक्ल में बदल जाते हैं। फिर रोगी को ज्वर भी होने लगता है 'दमा' रोग के जर्म जो रक्त में फैले रहते हैं। व्रत (उपवास) करने से जब उन को भोजन नहीं मिलता तो भूख के कारण तड़फने लगते हैं। फिर रात भर जागने से शरीर के रक्त में और भी गर्मी (तेजी) हो जाती है। जिस से वह सब जर्म और भी घबरा उठते हैं, और समझते हैं कि न मालूम आज क्या आफत आ गई है। रक्त की गर्मी से घबरा कर वह सब फेफड़ों में अपने आप को छुपा लेते हैं। क्योंकि फेफड़े मनुष्य के शरीरमें एक प्रकार का किला है जैसे बाहर से जब कोई शत्रु आक्रमण करता है तो सब व्यक्ति एक जगह किले में जमा हो जाते हैं ठीक उसी प्रकार वह सब जर्म फेफड़ में जमा हो जाते हैं। बस यह दवा अन्दर पहुंचते ही उन को नष्ट कर देती है। यह दवा उन सब जर्मों (कीटाणुओं) के लिये एक प्रकार का भयंकर विष है। जब वह सब जर्म जो एक जगह इकट्ठे होते हैं। मर जाते हैं तो ईश्वरीय नियमानुसार मरी हुई वस्तु जानदार के अन्दर नहीं रह सकती है वह किसी न किसी प्रकार शरीर से बाहर होती है। बस दवा खाने के ६ घन्टे के अन्दर ही अन्दर किसी को एक दो कैय और किसी को दस्त होता है। कैय या दस्त द्वारा सब मरे हुए जर्म शरीर से बाहर होकर रोग नष्ट हो जाता है कैय या दस्त होने से घबराना नहीं चाहिए। यदि किसी ताकतवर व्यक्ति को कैय या दस्त न भी हो तो भी मरे हुए जर्म २-४ दिन तक धीरे धीरे पखाना (टट्टी) आदि में निकलते रहते हैं। यदि कुछ जर्म इधर उधर रह जाते हैं तो दूसरी तीसरी मात्रा में सब नष्ट हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोज़गार नहीं केवल परोपकार है ?

भारत के पूज्य ऋषियों की अद्भुत खोज

"दमा" पुरानी खांसी के रोगियो

जाड़े का मौसम आपके लिये बड़ा ही दुखदाई है। आप इस दुष्ट रोग से कब तक तड़फते रहोगे ? क्यों नहीं आने वाली किसी भी "पूर्णमासी" को यहां आश्रम में आकर सैंकड़ों रोगियों के साथ हमारी भारत विख्यात महौषधि (चित्रकूट बूटी) जिसने दुनिया के कोने कोने में हजारों रोगियों के प्राण बचाकर एक प्रकार की हलचल सी मचा दी है। मुफ्त (धर्मार्थ सेवन करके एक ही खुराक में चमत्कार देखें। यदि किसी कारण वश यहां न आ सकें तो केवल विज्ञापन आदि खर्च २॥) मनीआर्डर से भेज कर तुरन्त मंगा लें और अपने घर पर ही आराम से सेवन कर के इस दुष्ट रोग से सदा के लिए पीछा छुड़ावें।

यदि रोग अधिक पुराना हो तो लगातार ३ खुराक सेवन करें जिसमें जड़ कट जावें ३ खुराक (पूरा कोर्स) यदि एक बार मंगावें तो ७) भेजें। इस दवा की वी० पी० नहीं नहीं भेजी जाती। क्योंकि वी० पी० कभी २ बहुत देर में मिलती है। सैंकड़ों अमीर आदमी गरीबों को धमर्थ देने के लिए दर्जनों पैकट मंगाते हैं उनके लिए खास रियायती रेट १२ पैकट २४) रु० है नोट कर लें।

सावधान—: हमारी भारत विख्यात महौषधि ("चित्रकूट बूटी") किस तरह पर किस महात्मा से प्राप्त हुई मूल्य है यदि आप पूरा हाल जानना चाहते हैं, तो भारत विख्यात पुस्तक 'खजाना करामात' मूल्य ६) रु० सजिल्द ६॥) तथा डाक खर्च १।) भेजकर जरूर मंगावें, उसमें इस प्रकार के अनेक महात्माओं से प्राप्त प्रयोग आपको मिलेंगे, जिनको मालूम करके आप अनेकों की भलाई करते हुए दुनिया में नाम पैदा कर सकते हैं—हमारा कार्यालय 'चित्रकूट' के नाम पर ठगों का कार्यालय नहीं हैं। जिनके विज्ञापन आप दिन रात समाचार पत्रों में पढ़ते हैं और जब यह सोच कर कि दवा मुफ्त में आ जावेगी वहां पत्र भेज देते हैं। क्योंकि समाचार पत्रों में धोका देने के लिये ऐसा ही संकेत रहता है कि दवा मुफ्त में मिलती है। परन्तु आप आश्चर्य में पड़ जाते होंगे। जब किसी को ६) या ७) रुपया की वी० पी० पहुँच जाती है, अनेक विचारे तो वापस कर देते हैं। बहुत से सज्जन यह समझ कर छुड़ा लेते हैं कि चलो अब तो दवा आ ही गई है ले लो शायद रोग को आराम हो जावेगा। परन्तु जब सेवन करके कुछ नहीं होता तो पछताते हैं और 'चित्रकूट बूटी' को बदनाम करते हैं। सैंकड़ों पत्र हमारे पास इस प्रकार धोकाबाजी के शिकायती आते हैं। हम अपने हजारों पाठकों को सावधान करते हैं। यहां यह सब धोखाबाजी का काम नहीं है। केवल हमारे कार्यालय में ही आने पर प्रत्येक 'पूर्णमासी' को दवा मुफ्त दी जाती है। चाहे जितने आदमी आवें परन्तु बाहर मंगाने पर किसी को मुफ्त नहीं भेजी जाती है। उनसे विज्ञापन तथा पोस्ट खर्च २॥) और ३ खुराक पूरे कोर्स के ७) लिये जाते हैं। आने वाली 'पूर्णमासी' ता० ७ दिसम्बर फिर ५ जनवरी ५८ की है, नोट कर लें, जल्दी करें।

जिसमें 'पूर्णमासी' से पहिले दवा मिल जावे अन्यथा पछतावेंगे।

पता-राय साहब के० एल० शर्मा रईस आश्रम (*R*) "जगाधरी" (*E. Punjab*)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार को चकित करने वाली दवा

'अमृत फल'

जिनके यहां कन्या ही पैदा होती हों वह एक बार परीक्षा करके देखें। गर्भ रहने पर चौथे मास से सेवन करावें-पुत्र होगा।

मूल्य मय एक यंत्र के २५) रू०।

हमारी खास अविष्कृत

स्वप्नदोष नाशक

औषधि को सेवन करके अपने शरीर में लगे हुए घुन को नष्ट करिये। यह दवा ३५ साल से लाखों रोगियोंपर अपना जादू सा असर दिखा चुकी है। पूरा कोर्स २४ दिन का मूल्य ६॥) रु० आधा कोर्स ३॥) रू०

खूनी और बादी

दोनो प्रकार की बवासीर से आयु पर्यन्त छुटकारा दिलाने वाली शक्तिशाली दवा।

❋ बवासीरी ❋

पुरा कोर्स ३० दिन का मूल्य ६॥) रु०।

License to Post without Prepayment License No. 10 Punjab

RANGILA MUSAFIR Registered No. E.P. 374

Monthly 'RANGILA MUSAFIR' JAGADHRI (Punjab)

To

Shri..........

Vill..........

P.O.....Kangri.....

Distt.....Hardwar U.P.

॥ कफ हरना ॥

यह हर प्रकार की खांसी के लिये अजीब औषधि है। यदि आपको खांसी की वजह से रात को नींद न आती हो तो आप इसे अवश्य सेवन करें। पहली ही खुराक में आप इसका चमत्कार देख कर दंग रह जायेंगे। मूल्य ४० गोली का १।) रु० है।

दर्द नाशक

यह एक आश्चर्य जनक अविष्कार है। शरीर के किसी भी अंग में पाव से लेकर सिर तक किसी प्रकार का दर्द हो जादू की तरह से दर्द को भगा देने में राम बाण है। इस आश्चर्य जनक औषधि की एक शीशी घर में रख लेनेसे समयपर दसों रुपयों का काम देती है मूल्य प्रति शीशी १।) रु० दर्जन का १४)रु० महसूल अलग।

अजूबा यह भी स्त्रियों के लिए खास चीज है। मासिक धर्म का कम या अधिक होना, कमर पेडू में एठेन आदि रोगों में जादू की तरह से काम करने वाली शक्तिशाली दवा है। प्रत्येक घर में हर समय एक शीशी जरूर रखें। मूल्य प्रति शीशी २॥)रु० महसूल अलग है।

नया रोग २४ घन्टे में साफ **"सुजाक नाशक"** का इस्तेमाल पुराने से पुराने सुजाक को भी एक हफते में जड़ से [illegible] देता है अवश्य परीक्षा करें पुरा कोर्स १२ दिन का मूल्य ४) रु० महसूल अलग।

पता—राय साहब के० एल शर्मा एन्ड सन्स रईस एण्ड बैंकर्स (R) जगाधरी (E P.)

प० प्यारे लाल शर्मा सम्पादक प्रिंटर पब्लिशर 'रंगीला मुसाफिर' जगाधरी ने अशोक प्रिंटिंग प्रेस जगाधरी में ला० परमा नन्द के प्रबन्ध द्वारा छपवा कर रंगीला मुसाफिर कार्यालय से प्रकाशित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥

संस्थापकः
राय साहब के० एल० शर्मा
एन्ड सन्स
जगाधरी ।

सचालकः
पं० प्यारे लाल जी शर्मा
खानदानी वैद्य (रजि०)
मैनेजिंग डायरेक्टर
राय साहब के० एल० शर्मा एन्ड सन्स

सफर ६ वार्षिक मूल्य ३) रु० जगाधरी १५ अप्रैल १९५८ पड़ाव ८

१	जागो भारत वासी जागो	(कविता)	पृष्ठ १
२	आयुर्वेद का गौरव	(लेख)	” २
३	संत विनोभा	(कविता)	” ४
४	आयुर्वेद और ब्रह्म विज्ञान	(लेख)	” ६
५	अंग्रेजी फैशन वालों से	(कविता)	” ८
६	सिफारिश	(कहानी)	” ९
७	मुझे रुपया चाहिये	”	” १२
८	अनजान द्वीप बदनाम घाटी	”	” १५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों के लिये आयुर्वेद शास्त्र का शक्तिशाली स्त्री सम्बन्धी सब रोगों में लाभ दायक
स्वयं बना कर लाभ उठावें

रतिवल्लभ पूंगी पाक "माजून (सुपारी)"

दक्षिणी चिकनी सुपारी, सवाबार, आंवला, आध आध सेर। तीनों को पानी में डाल कर आग पर चढ़ावें। तीन घन्टे आंच देने के पीछे उतार लें और सुपारियों को काट कर छाया में सुखा कर कूट छान कर चूर्ण बनावें। इस चूर्ण को चार सेर दूध में डाल कर मदी आंच से खोवा बनावें। फिर आध सेर घी में भून कर और उसमें मिश्री की चाशनी कर के खोवे को उसमें मिलावें और उसके साथ ही नीचे लिखी औषधियों को भी मिला दें।

छोटी इलायची, गंगेरन, खरेंटी, पीपल, जायफल, लौंग सोंठ, जावित्री, तेजपात तालीसपत्र, दारचीनी खशखाश, सोगधबाला, नागरमोथा, त्रिफला, गिरी कौंचबीज इलायची बड़ी, मुनक्का, तालमखाना, जटामांसी, गोखरू छुहारा, खिरनी, तबाशीर, धानयां, केसेरू सूखे सिंघाड़े, मुलेठी, जीरा, कलौंजी, अजवायन गिरी कवलगट्टा, बाल छाड़, सौंफ, मेथी, बिदारीकन्द, मुसली काली, आसगंध, कचूर, नागकेशर, काली मिर्च, चिरौंजी, बीज सेमल गजपीपल, सफेद और लाल चन्दन, सूसली सफेद। इन चीजों को अलग अलग कूट छान कर फिर चार चार तोला वजन करके मिला लो और चाशनी में डाल कर खूब मिलाओ। फिर नीचे लिखी अच्छी भस्में आदि सब खरल करके मिला दो। भस्म कलई, शीशा, पारा, फौलाद, अभ्रक स्याह, एक एक तोला, कस्तूरी, ६ माशे, भीमसेनी काफूर ३ माशे केशर एक तोला मिला कर केएक एक तोला के लड्डू या माजून को तरह साफ बरतन में रख लो। खूराक बल अनुसार एक तोला तक दूध से सेवन करें। तीन मास परहेज से खाने पर दूसरी औषधि की दरकार न रहेगी। स्त्रीयोंके लिये अमृत तुल्य है। बांझ को भी सन्तान होने की शक्ति इसमें है, परन्तु स्त्री पुरुष दोनों को सेवन करना चाहिये। यह औषधि हमारे कार्यालय में भी तैयार होती है

न: १ - स्पेशल (खास) अमीरों के लिये जिसमें मोती सोना चांदी की भस्म वर्क, कस्तूरी आदि मूल्य वान पदार्थ पड़ते हैं। इसका मूल्य १० तोले ६॥) २० तोले १२) ४० तोले २३) ८० तोले ४५) है. इसकी खुराक दोनों समय ३ से ६ माशे तक है।

न: २—इसमें भस्मों को छोड़कर बाकी सब औषधियां आदि ऊपर के अनुसार ही हैं। मूल्य एक पाव का ३।) और एक सेर का ११) है। इसकी खुराक २ तोले तक है।

नोट—सुपारी पाक को स्त्री और पुरुष दोनों ही सेवन कर सकते हैं। सन्तान की इच्छा रखने वाले स्त्री और पुरुष दोनों ही को इसका सेवन करना चहिये।

❀ आयुर्वेद शास्त्र का चमत्कार ❀

नेत्री सोना मोती, ममीरा आदि और दसों प्रकार की जड़ी बूटियों से तैय्यार होने वाली आँखों के सब रोगों को नष्ट करके ज्योति को बढ़ाने वाली एक चमत्कारिक मूल्यवान दवा है एक बार की परीक्षा आप को आश्चर्य में डाल देगी, मूल्य एक तोला १५) रु० ६ माशा ८ रु० साथ में चाँदी की सलाई मुफ्त दी जाती है। पता—राय साहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स जगाधरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागो भारतवासी जागो

(रचयिता श्री गिरजाशंकर शुक्ल)

बहुत दिनों तक सोकर तुमने—
स्वत्व गंवाया, प्रण बिसराया,
वीर भूमि के रहने वालो—
फिर भी तुम ने सुयश न पाया

अब भी जागो देश के लालो,
त्यागो निद्रा हिम्मत वालो,
जागो भारत भूमि नौनिहालो,
जागो देश प्रेम मतवालो,

'जागो वसुन्धरा के स्वामी, जागो नव-पथ के अनुगामी—
नव - संसार बसाने वालो—स्वतन्त्रता अभिलाषी जागो।

नवल - उषा की भव्य अरुणिमा—
स्वर्ग धरा पर लाने आयी,
कलित कालिमा पी जाने को—
नव - प्रभात - वेला मुसकायी,

सकल देश के [illegible] जागो,
कष्टों के अभ्यासी जागो,
बंग - भंग के वीरो जागो,
हिंसा के विद्रोही जागो,

जागो मध्यम वर्ग किसानों, मजदूरो निर्धन धनवानो—
जागो ओ । निर्बल बलवानों—कंटक—पथ—प्रवासी जागो।

तोड़ पुरातन की कारा को—
है नूतन संसार बसाना,
व्यापक जड़ता के खंडहरों—
में फिर से परिवर्तन लाना,

जागो अब नव-ज्योति निराली,
हंस खेली मरु में हरियाली,
जागो तपः पूत वैशाली,
जागो सोमनाथ भर लाली,

जागो भर प्रकाश निशि काली—जागो वसुधा के बन-माली—
सत्य शिव सुन्दरम जागो—जागो घट-घट वासी जागो।

(नया भारत से धन्यवाद पूर्वक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद का गौरव

(सिलसले के लिये रंगीला मुसाफिर पृष्ट ७ से आगे देखें)

आयुर्वेद मूलभूत एवं आदि काल से प्रचलित प्राकृतिक चिकित्सा है, यह वेद से विनिहित है वेद भगवान से पैदा हुये हैं अस्यविश्वसित वेदा। भगवान का विश्वास ही वेद हुये और उसी वेद का यह उपांग आयुर्वेद है इससे यह प्राकृतिक है इस लिये सदा स्थाई रहेगा भले ही लोग कुछ काल मजाक करलें आवेंगे सब इसी के नीचे. बड़े हर्ष का विषय है कि लोग अपने २ बनावटी वानों को फाड़ २ फेंक कर वही आयुर्वेदीय वाना पहिनने को उत्सुक हो रहे हैं।

एलोपैथिक औषधियों और चिकित्सा विज्ञान से यूरोपीय जनता का विश्वास उठ गया है इस लिये वह प्योर जड़ी बूटियों के प्रयाग को पसन्द करने लगी हैं। इङ्गलैंड में औषधियों (जड़ी बूटियों) जो कूः पीस चूर्ण बना बेचा जाने लगा है जैसे-भारत में सुदर्शन, तालीसादि त्रिफलादि चूर्ण इङ्गलैंड में इन्हें (Herb Formulae) के नाम से पुकारा जाता है इङ्गलैंड में एसे चूर्ण बेचने वाली २४८ दुकानें हैं केवल लन्दन में ४५ हैं। इन चूर्ण की बिक्री एन्टी बायोटिक्स, सल्फाड्रग्स और एस्प्रीन योगों के विरुद्ध खुला विद्रोह है।

इसी प्रकार एक कम्पनी औषधियां बनाती है उसका नाम बायोगोल्ड मैडिसन्ज है यह औषधि केवल खाई जाने वाली वनस्पतियों के सूखे स्वरस होते हैं कि उनके विटामिन नष्ट न हुये हों यह प्रयोग भी आयुर्वेदीय चिकित्सा में व्यवहृत. स्वरस शीतकषाय, फांट, क्वाथ एव चुर्ण जैसा प्रयाग है।

उदर में वायु अम्लता, अनिद्रा, रक्तालपता, सुस्ती, मस्तिष्क का चकराना, आंखों में सोथ आदि रोगों में गाजर का बायोगोल्ड अर्थात सूखा स्वरस दिया जाता है। (मुरब्बा गाजर व हलवा गाजर का दूसरा रूप है)। कोष्टबद्धता में पालक का बायोगोल्ड, फोड़ा-फुन्सी, मोटापा, एग्जीमा, खारिश, चम्बल आदि में खीरे का बायोगोल्ड। ऐसे ही बायोगोल्ड उसने बनाये हैं (त्रेता युग में अर्क प्रकाश में जो कुछ लंकापति रावण ने लिखा था उसका कुछ भाग, इस बीसवी शताब्दी में, इङ्गलेंड में प्रकाश में आ रहा है।)

इसका कारण

संसार एलोपैथिक पेटेन्ट औषधि निर्माताओं के प्रोपेगन्डा के कारण एन्टीबायोटिक्स सल्फाड्रग्ज और एस्प्रीन के योगों की चकाचौंध में डूब गया और चिकित्सकों की बिना राये के भी स्वयं दुकानों से मोल लेकर इस्तेमाल करने लगा। वेदना नाश के सर्वत्र एस्प्रीन का व्यवहार होने लगा और लोग वेदना निग्रह आदि नामों से बेचने भी लगे इस कारण से तथा पेंसलीन आदि के कारण लोगों में अनेक रोगों की उत्पत्ति हो गई।

अमेरिका में जनगणना के अनुसार गणना करने पर रोगियों की संख्या दो करोड़ निकली यानी कुल जनसंख्या का छठा रोगाक्रान्त निकला अर्थात ३० लाख पगु, १५ लाख शैय्या शायी हो रहे हैं इन कष्टसाध्य रोगों में हृद्रोग रक्तचाप, स्नायविक, मानसिक रोग, मूत्रयन्त्र की खराबियां केन्सर, मधुमेह, दमा, गांठों की सूजन आदि हैं अमेरिका में १ करोड़ १ लाख व्यक्ति गठिया से पीड़ित हैं इसलिये अमेरिका अब एलोपै-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थिक सिस्टम की दुर्बलता को स्वीकार करने के लिये बाध्य हुआ है।

सन् १९१५ से दूनी मृत्युयें वहां (अमेरिका) में सन् १९५१ में हुईं कैंसर से इस में २ लाख आदमी मरे।

कैंसर बढ़ाने में एस्प्रीन तथा उसके योग बहुत सहायता करते हैं इन औषधियों के अधिक सेवन से संचित हुआ विष जब बाहर निकलना चाहता है जब यह पाचक रसों के साथ आमाशय में पहूंचता है तब आमाशयिक कैंसर, लाला ग्रंथियों के रस के साथ मुख कैंसर, दुग्ध द्वारा स्तनों में पहुँच स्तन कैंसर, मासिक रक्त द्वारा योनि में पहुँच कर योनि कैंसर इसी प्रकार यकृत और वृक्कों में पहुंच वहां का कैंसर पैदा कर देता है।

यही कारण है कि अब हालैण्ड, जर्मनी, फ्रांस, इङ्गलैण्ड के लोग इन एलोपैथिक दवाईयों से पीछा छुटनाने की ओर हैं। और उनका वनौषधियों की तरफ ध्यान गया है। इसी से जर्मनी के अखबारों में आपको देखने को मिलेगा केवल जड़ी बूटियों के ताजे स्वरस द्वारा निर्मित औषधयां—

पेरिस के एक स्वास्थ्य सङ्घ की रिपोर्ट कहती है।

कि प्रति २०० अमेरिकनों में १ व्यक्ति और फ्रांसीसियों में प्रति ३०० लोगों में १ व्यक्ति पागल है भारत की यद्यपि कोई रिपोर्ट नहीं है फिर भी मालूम होता है कि सौराष्ट्र और यू०पी में पागलों की सख्या अधिक बढ़ी है भारतीय तीन पागल खानों में १३६१ रोगियों का प्रबन्ध था। पर गत वर्ष उन में १९०६ रोगियों को रखा गया अब गोरखपुर में एक और पागलखाने के खोलने पर विचार है ताकि पागलों को अच्छी तरह प्रवेश मिल सके। १६-१०-५७ की प्रताप की सूचना निम्न है।

पश्चिमी बङ्गाल में तपेदिक के २ लाख रोगी हैं। पश्चिमी बंगाल के अस्पतालों में ३००० बिस्तर यक्ष्मियों के लिये हैं इन भी भारी संख्या पुलिस, फौज, सरकारी कर्मचारियों के लिये सुरक्षित रहती है। इस बात की चर्चा कलकत्ता कोर्पोरेशन के कौंसलर डा० अमीर जोश ने की है यू० पी० के पागल खानों में भी अवश्य फौज पुलिस और अन्य सर्विसों के लिये सुरक्षित बिस्तर होंगे। और अगर उन में २००० के लग भग पागलों को रखा गया है तो यू० पी० में १५०,००० पागलपन के रोगी समझने चाहिये और इन में वह पागल जो थोड़े पागल हैं भी सम्मिलित कर लिये जयें तो यू० पी० में पागल ३००,००० समझने चाहिये। यदि यू० पी० में सभी प्रकार के पागल मिलाकर ३००,००० हों तो समस्त भारत में पागलों की सख्या कितनी है? इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं। यू० पी० की ही एक अन्य सूचना भी पढ़िये।

यू० पी० एसेम्बली में एक प्रश्न का उत्तर देते हुये होम मिनिस्टर ने बताया कि पिछले २८ मास में ४००० व्यक्तियों ने आत्महत्या की है। यह आंकडे सरकारी हैं। सरकार के ज्ञान के बिना जिन लोगों ने आत्महत्यायें की, और उन की आत्महत्या की सूचना को हैजा व अन्य किसी व्याधि का नाम देकर छुपा दिया गया, यदि वह आंकड़े भी प्राप्त हो सकें तो पागलों की संख्या वृद्धि की यह रोमञ्चकारी कहानी है।

अमेरिका में यह पागलपन क्यों बढ़ रहा है, भारत में इसके प्रसार में क्या कारण है? यह समझना कठिन नहीं। वेदनाहर एस्प्रीन के योग, सल्फाड्रग्ज तथा विषैले इञ्जैक्शनों का इस में

(शेष पृष्ठ ५ पर देखें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्त विनोबा

भारत-जननी के सुपुत्र, मानव-जीवन के त्राता!
'होता' हो भूदान - यज्ञके, नवयुग के निर्माता!
योग पुरातन स्वयं प्रभूने सविता को बतलाया।
'साम्य-योग' समभाव आज श्री गुरु ने है दर्शाया,
'कांचन - मुक्ति' के प्रयोग में लीन हुए तुम योगी,
भक्त - शिरोमणि, ज्ञानी-विज्ञानी, उदार, उद्योगी!
ज्ञान, भक्ति अरु कर्म-त्रिवेणी का संगम शुचि पावन,
जो प्रवाह बह चले तभी आया हो मानो सावन!
सदा अध्ययन - अध्यापन में रत रहते हो ध्यानी,
त्रिभुवन का सम्मान निछावर अखिल विश्व अभिमानी!
किये अनेक प्रयोग, प्रचार विचारों का नित नूतन,
है प्रतीक 'पावन-रहाट' सम स्वधर्म--चक्र--प्रवतन!
परम धाम में आश्रम पावन पञ्चम तीरथ धारा,
बापू के स्मरणा में अर्पित जीवन साधन सारा!
परिवर्तन हो रहा जमाने का समाज जीवन का,
जगा रहे जगदीश्वर को, जाग्रत कर मन जन जनका
गांव गांव में 'राम राज्य' संदेश सुनाने आये,
'सर्वोदय गौरव' गुरु - कुंजी आप साथ ही लाए!
मन्त्र 'चरैवेति' सम सत्शिव सुन्दर जन हितकारी,
'चलता यात्री ही पाता है मंजिल मंगल कारी!
नीद छोड़ कर जाग, बैठ उठ खड़े, असख्य अनारी,
'भाग्योदय' के गीत गा रहे प्रेम - मगन नर नारी!
मांग रहें भू - दान भूमि - पुत्रों से हे जन त्राता!
छटा पुत्र बन मात - पिता का, और कहीं बन भ्राता!
हवा और पानी सम धरती पर हक सबका होगा,
समता सूर्य प्रकाश जनित जन मन में स्नेह बहेगा।
करें सभी सेवा भू-माकी आ-जीवन समता से,
आशिष देगी भारत माता, आस यही जनता से,
आज धन्य हम हुए अकिञ्चन दर्शन पावन पाया,
रहे न कोई दीन दुखीसम भाव हृदय में छाया।

(...से धन्यवाद पूर्वक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत अधिक हाथ है। शुद्ध आयुर्वेद द्वारा ही इस पागलपन की मुक्ति प्राप्त की जा सकती है और राज्य पागलखाने खोलने के सिरदर्द से बच सकता है। ता० ६—९—५७ को पत्रों में एक सूचना छपी जो इस प्रकार थी—

'सीलोन रेडियो ने एक युवक की जान ली चम्बल गान्धी सागर में एक युवक नित्य प्रति सीलोन रेडियो से सुना करता था शिर पीड़ा और ज्वर में प्रत्येक ३ घन्टे के बाद - —नाम की टिकियां खाओ दर्द गायब हो जायगा, उस ने ४५ दिनों में ८० गोलियां खा लीं इससे उस की अवस्था बिगड़ गई। यकृत में घाव पड़ गया और अस्पताल में १५०) रु० व्यय करने पर भी वह न बचसका।

एक सीलोन रेडियो क्या, एस्प्रीन के योगों के इश्तहार प्रत्येक भाषा के पत्रों में छप रहे हैं इन के प्रभाव से प्रत्येक व्यक्ति इन आना दो आना के पैकटों को खरीद कर खा रहा है एक गान्धी सागर का युवक क्या लाखों और करोड़ों की संख्या में लोगों का स्वास्थ्य नष्ट हो रहा है। परन्तु राज्य इनकी रोक-थाम के लिये कुछ नहीं कर रहा।

ऐस्प्रो, अनासीन, ऐस्प्रीन, आदि के योग आमाशय के घावों को घटाते हैं। शिर व मूत्राशय की रक्त नलिकाओं से रक्त जारी करते हैं। यह हृद रोग, हाई ब्लडप्रेशर, लो ब्लड प्रेशर, कौरोनरी अम्बोसिज, सब इन की उपज हैं। स्नायविक रोग और मस्तिष्क के रोग इन ही के प्रयोग से बिगड़ते हैं। नव रोग दबते और कष्ट साध्य रोग उत्पन्न होते हैं।

आयुर्वेद का पञ्चामृत

गुडूची गोक्षुर चैव मुसली मुण्डिका तथा।
शतावरी च पञ्चानां योगः पञ्चामृताभिधः॥

इन पांच वस्तुओं का चूर्ण शर्बत, टिकियां, आसव बना उपयोग करें यह समस्त रोगों में और निर्बलता, वीर्य विकार आदि में बहुत उपकारी साबित हुई हैं। मुसली से काली मूसली लें यह रक्तविकार की मूत्र कृच्छ्र एव गठिया को भी लाभकर है यदि शास्त्र सम्मत इन पर समझाया जाय तो एक पुस्तक ही तैयार हो जावेगी वैद्यजन तो प्रत्येक के गुणधर्म से परिचित है ही अतः हमने सूक्ष्म में इशारा कर दिया है।

—❀—❀—

जबलपुर शहडोल व सतना जिलों में
अतिशय लोकप्रिय
भारती साप्ताहिक पत्र
कटनी (म० प्र०)
में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये।
❀ लोक समस्याओं पर प्रगतिशील उग्रलेख
❀ चौराहे की बात, स्तम्भ में चुटीले व्यंग।
❀ कटनी मडी के भावताव इसकी विशेषतायें हैं।
पता:— भारती साप्ताहिक पत्र कटनी (म० प्र०)
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद और ब्रह्म विज्ञान

लेखकः-- श्री सुषेणजी वैद्य।

विद्याविहीन व्यक्ति ही नहीं, कभी कभी साधारणतः पढ़े लिखे सज्जन भी यह कहते सुने जाते हैं कि अयुर्वेद-ईश्वर या ब्रह्म को नहीं मानता। पर वास्तव में यह कहना बड़ी भारी भूल है यदि कहा जाय कि आयुर्वेद-भाग्य वाद को नहीं मानता। तो किन्हीं अंशो में ठीक भी हो सकता है। पर अथर्व वेद का उपाङ्ग आयुर्वेद "ब्रह्म" की अवहेलना कैसे करता है। ऐसा कहना तो अनभिज्ञता का प्रमाण-पत्र ही होगा। प्रस्तुत लेख में यही बताने का प्रयास प्रमाणों द्वारा किया गया है।

भगवान शेष का इच्छावतार चरक के रूप में हुआ है और उन्हीं महर्षि पतञ्जलि के अभिनन्दन स्वरूप निम्न श्लोक की रचना हुई है।

"योगेन चित्तस्य पदेन वाचां,
मलं शरीरस्य च वैद्य केन।
अपा करोद्यः प्रवरं मुनीनां,
पतञ्जलि प्राञ्जलि रानतोऽस्मि॥

भावार्थ—योगदर्शन द्वारा चित्त (जीवात्मा) का तथा व्याकरण 'अष्टाध्यायी पर महाभाष्य द्वारा वाणी का मल दूर करने के लिए सुन्दर साहित्य का निर्माण किया उन्हीं महर्षि ने शरीर के मलों को दूर करने के लिये चरक सहिता का निर्माण किया। ऐसे प्रवर मुनि पतञ्जलि को हाथ जोड़ कर नमस्कार करता हूँ। इसी चरक संहिता में सूत्र स्थान अध्याय-में आत्मा का लक्षण इस प्रकार बताया है यथा—

निर्विकारः परस्त्वात्मा सत्वभूतगुणेन्द्रियैः।
चैतन्ये कारण नित्यो द्रष्टा पश्यतिहि क्रिया॥

आत्मा निर्विकार है, सबसे श्रेष्ट है। और मन भूत गुण (शब्द स्पर्शादि) और इन्द्रिय (श्रोत्रादि) इनके सहयोग से चैतन्य में कारण है नित्य (सदैव) करने वाला है द्रष्टा है सब क्रियाओं को देखता है॥५४॥

और भी इसी सूत्र स्थान में आयुर्वेदावतरण बताते हुये लिखा है :—

दीर्घ जीवितमन्विच्छ भरद्वाज उपागन्त्।
इन्द्र मुग्रतया बुद्धा शरण्य ममरेश्वरम्॥१॥

अथोत—दीर्घ जीवन की लोकोपकारी इच्छा करते हुये तपोबलशाली महात्मा भरद्वाज देवताओं के पति इन्द्र के पास इस कार्य की सिद्धी के योग्य समझ कर गये। आगे अंगिरा, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप भृगु, आत्रेय गौतम, पुलस्त्य नारद, विश्वामित्र आदि अनेक महर्षियों के ब्रह्मज्ञान की चर्चा करते हुए इसी स्थान पर बताया है कि—

ब्रह्म ज्ञानस्य निधियो दमस्य नियमस्य च।
तपसा तेजसा दीप्ता हूयमाना इवाग्नयः॥१२॥

अर्थात—यह सब महात्मा ब्रह्म के जानने में और इन्द्रियों के दमन करने में तथा नियमों के पालने में समुद्र थे। तप और तेज के प्रभाव से हवन करने से प्रज्वलित अग्नि के समान प्रकाशमान हो रहे थे। इसी प्रकरण में आयुर्वेद का अधिकरण बताते हुय निम्न प्रकार विवेचन दिया है। यथा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यमात्मा शरीरं च त्रय मेतत्त्रिदण्डवत ।
लोकस्तिष्ठति संयोगात्तत्र सर्व्वं प्रतिष्ठितम् ॥४४॥
स पुमांश्चेतन तच्च कच्चाधि करणां स्मृतम ।
वेदस्यास्य तदर्थं हि वेदोऽयं सम्प्रकाशितः ।४५॥

मन, शरीर आत्मा, इन तीनों का तीन दण्डों की समान परस्पर सम्बन्ध है इन तीनों के सम्बन्ध को वैद्यक शास्त्र में पुरुष कहा जाता है सम्पूर्ण संसार इन तीनों के सम्बन्ध से ही है इस पुरुष को ही पुमान, चेतन और आयुर्वेद का अधिकरण माना है ।

यावत विश्व ब्रह्माण्ड में दृश्यमान, अनुभव गम्य एवं ज्ञातव्य तीन ही तत्व बताये गये हैं। ईश्वर, जीव और प्रकृति । सृष्टि निर्माण के प्रधान उपकरण सत् रज तम त्रगुण ही प्रकृति का बुद्धिगम्य स्वरूप है। और प्रकृति ही आयुर्वेद का कार्यक्षेत्र है। आयुर्वेद के ममज्ञ महर्षि सुश्रुत के शब्दों में सुनिये:—

न चायुर्वेद शास्त्रेषूपदिश्यन्ते सर्वं गताः क्षेत्रज्ञाः ।
पञ्च महाभूत शरीरि समवापि पुरुषः,
स एष कर्म पुरुषश्चिकित्साधि कृतः ॥

अर्थात—आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार क्षेत्रज्ञों को सर्वव्यापक नहीं कहा गया है और पचमहाभूतों के साथ आत्मा के संयोग से पुरुष बनता है वही पुरुष चिकित्सा शास्त्र का प्रयोजन है ।

आयुर्वेदीय साहित्य से ऐसे अनेकों प्रमाण उधृत किये जा सकते हैं जिनसे ब्रह्म की सत्ता का प्रतिपादन होता है। किन्तु सभवतः ब्रह्म जिज्ञासु पाठकों को यह लेख विशेष रुचि कर न हो! अतः केवल एक बहुश्रत प्रमाण देकर ही लेखनी को विश्राम दूंगा । तथा—

व्याधिस्तत्व परिज्ञान वेदना याश्च निग्रहः ।
एतद वैद्य स वैद्यत्वं, न वैद्य प्रभुरायुषः ॥

भावार्थ—व्याधि (रोग) के तत्व का परिज्ञान करके और उससे उत्पन्न वेदना (पीड़ा) का (शमन) करना ही वैद्य का वैद्यत्व है वैद्य आयु का प्रभु नहीं है। अतः स्पष्टतः सिद्ध होता है कि आयु का प्रभु (निर्माता) वह नियात्मक ब्रह्म ही है।

॥ सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र ॥

तथा अनेक गुप्त रहस्यमय बातें मालूम करने के लिये केवल ।) के स्टाम्प विज्ञापन खर्च भेजकर 'जबरी जन्त्री' मुफ्त मगाकर मनोकामनाएं पूर्ण करें ।

पता:- जबरी आफिस (R) जगाधरी

❀ भारत में हलचल ❀

मचा देनेवाली ७४ पृष्ठ की रहस्यमय पुस्तक 'जौहर मुल्क' एक कार्डपर १० भिन्न भिन्न स्थानों के सज्जनों के पूरे पते लिखकर मुफ्त में मंगाईये। फिर ॥) लगेंगे। जल्दी करें।

इडियन स्टोर्स (R) जगाधरी (ई० पी०)

॥ कफ हरना ॥ यह हर प्रकार की खांसी के लिये अजीब औषधि है। यदि आपको खांसी की वजह से रात को नीद न आती हो आप इसे अवश्य सेवन करें। पहली ही खुराक में आप इस का चमत्कार देख कर दंग रह जायेंगे। मूल्य ४० गोली का १) रु० है।
पता—प० राय साहब के० एल० शर्मा जगाधरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगरेजी फैशन वालोंसे........?

रचयिताः—श्री परमहंस पाण्डेय 'प्रमोद' विशारद (निमाड़)

(३)

अंग्रेजी फैशन वालों से, हिन्दी माता घबराती है।
हिन्दी भाषा भाषी से ही, वह पड़ी पड़ी विलखाती है ॥
परिवर्तन कर दे आज धरापर ऐसा कोई तन्त्र नहीं?
पशुता का दर्प, चूर्ण कर दे ऐसा है कोई मन्त्र नहीं?
श्री खेमराज श्री कृष्णदास ने अपना कदम उठाया था,
साप्ताहिक 'वेंकटेश्वर' से जन-जीवन ज्योति जगाया था,
'शर्मा देवेन्द्र शास्त्री' की महिमा कुछ कुछ बतलाती है।
अंगरेजी फैशनवालों से हिन्दी माता घबराती है ॥
क्या इसी दिवस के लिये सन्त तुलसीने ली अंगड़ाई थी।
क्या इसी पतनके लिये सूरने अपनी कलम उठाई थी।
हिन्दी का उपवन खींच दिया मीराबाई ने आंखों से;
पर हाय! यहां करते धरते बनता न आज कुछ लाखों से,
रचना 'रसाल' की पग-पग पर ऐसा ही कुछ दिखलाती है।
अंगरेजी फैशनबालों से हिन्दी माता घबराती है ॥
'केशव', 'मतिराम', और 'चन्द' - 'देव' छिप जायेंगे।
कवि 'भूषण' के वशज उनको क्या दूषण आज बनायेंगे।
'रत्नाकर' और 'विहारी' का उपदेश सुलगता जाता है।
हर पग-पगपर मानवताका अधखिला फूल मुरझाता है।
'परिपूर्णानन्द' प्रवासी की रचना हमको दरसाती है।
अगरेजी फैशनवालों से हिन्दी माता घबराती है ॥
'श्रीनन्द दुलारे' आज कहीं क्या अन्तरिक्ष के पार गये?
अंगरेजी से भयभीत कहीं कवि 'तरुण' छोड़ संसार गये।
पर आज न कहीं फिसल जाये क्षिति से सुदूर 'अज्ञेय' छिपे।
नीला परिधान ओढ़ करके नीलाम्बर में 'कमलेश छिपे।
'हरिशंकर शर्मा' की तूली बन मूक अलग पछताती है।
अंगरेजी फैशनवालोंसे हिन्दी माता घबराती है ॥

(शेष पृष्ठ ६ पर देखें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(कहानी)

"सिफारिश"

लेखक—पं० सी० एल० बुलंदी—

यह घटना पिछले दिनों की है जब मैं जबलपुर में एक छोटे से अखबार का संपादन किया करता था. मेरे इस कृपण जीवन में कुछ ऐसे भी समय आये हैं जिनका कि भुलाना अत्यन्त ही कठिन है। मनुष्य में कुछ ऐसी भी जुगूतियां हुआ ही करती हैं जिनमें वह अपने आप को चतुर एवन् परंतप बनाने की कोशिश किया करता है लेकिन वह जुगूतियां और परतप उसे उल्टा खा जाते हैं। बिलकुल ठीक यही दशा मेरी हुई है।

एक दिन सन्ध्या समय अपने घर पर ही बैठा बच्चों से जी बहला रहा था कि, अचानक बाहर से किवाड़ खटखटाने की आवाज सुनाई पड़ी, मैंने अपनी छोटी लड़की पुष्पा से कहा-बेटी जरा देखना तो बाहर कौन है ?'

पुष्पा ने किवाड़ खोल कर बताया कि सीताराम चाचा जी आये हैं। मैंने मुन्नी से कह दिया कि अन्दर बैठक में आने दे। मैं इतना कह कर उठ के बैठक वाले कमरे में चला गया। सीताराम जी आये, नमस्ते हुई।

'मैंने पूछा, आज आपने कैसे तकलीफ की ?

'बोले क्या बताऊं भाई साहब ?' पुलिस वाले मेरा पीछा ही नही छोड़ते हैं और कहते हैं उस केस में तुम्हारा पूरा पूरा हाथ है. मगर मैं आप से सच कहता हूँ भाई-साहब. उसमें पूरा तो क्या आधा भी हाथ नहीं था. लेकिन पुलिस वाले बिलकुल नही मानते हैं अब आप ही बताइये मैं गरीब आदमी खांमखां मारा जाऊंगा

'तो मैं क्या कर सकता हूं ?'

'अरे आप तो सब कुछ कर सकते हैं भाई-साहब, आप चाहें तो मैं अभी इसी समय इस पुलिस के फंदे से बच सकता हूं।'

तो मुझे करना क्या होगा ?

करना कुछ नही होगा सिर्फ आप मेरे साथ चलकर इन्सपेक्टर साहब से इतना कह दो कि पिछले अखबार में जो सीताराम जी के खिलाफ खबर छपी थी वह बिलकुल निराधार और असत्य है।

'मगर जो चीज एक बार अखबार में निकल चुकी है उसे गलत साबित करना कोई मजाक नहीं है सीताराम जी, इन्सपेक्टर उठाकर हमी को खुद उल्टा फांस देगा कि यह गलत बात थी तो पेपर में देने की क्या जरूरत था रद्दी की टोकरी में डाल देते।

'नहीं-नहीं, ऐसी बात नही है भाई साहब, इन्सपेक्टर साहब आपको बहुत मानते हैं इस

हिन्दी विकासके लिये 'आज' 'सन्मार्ग' और 'संसार' चला।
'भारत' 'नवभारत' धर्मयुग' कोरा का कोरा ही निकला,
'दैनिक प्रताप' और 'लोकमान्य' नवभारत टाइम्स' थक हारा,
प्रतिदिन का 'विश्वमित्र' अथवा 'जागरण' फिरा मारा मारा,
'हिन्दुस्तान' कालम की दयनीय दशा दिखलाती है;
अंगरेजी फैशनवालों से हिन्दी माता घबराती है॥

(श्री वेंकटेश्वर से धन्यवाद पूर्वक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए वह आप से ऐसा कत्तई नहीं कहेंगे। चलो उठो भाई साहब, वरना वह पुलिस की काली जीप अभी यही पर नजर आवेगी।'

'देखो ऐसा करो, मैं तो जाऊंगा नहीं एक पत्र लिखे देता हूं जाकर इन्सपेक्टर सिनहा को दे देना, अगर मेरे बारे में कुछ पूछे तो उनसे कह देना कि उनका कल से स्वास्थ्य खराब चल रहा है इस लिए वह खुद नहीं आ सके; अन्यथा वह जरूर आते।'

'भाई साहब मैं सच कहता हूं, जाने को तो मैं चला हीं जाता हूं चिट्ठी बिट्टी तो वह बाद में देखेगा सबसे पहले वह मेरी सूरत पर नजर डालेगा, और फौरन ही उठाकर हवालात के अन्दर बन्द कर देगा।'

ओफोह, पहले जाओ भी तो सही, देखो वह करता क्या है, बाद में सब देखा जायेगा।'

खैर, अगर आप की यह इच्छा है कि मैं रात भर हवालात की हवा खाऊं तो यही सही, जाता हूं।'

'ओफोह, तुम खाँमखां अभी से दुनियां भर के मतलब लगाने लगे, मैंने कहा पहले वहां जाओ देखो वह करते क्या हैं, और जो होना होगा वह तो रुकेगा ही नहीं, चाहे मैं जाऊं या परमात्मा, इसलिए तुम से कहा कि पहले वहां जाओ।

"खैर, साहब इतना कहने सुनने पर श्री सीता राम जी हमारे घर से उठकर गये। हालांकि ऐसा कोई बात नहीं थी कि मैं पुलिस वालों से डरता था, या इतनी सिफारिश पर वह सीताराम को छोड़ते नहीं, यह सब कुछ हो सकता था मगर यह सिफारिश वाली मुसीबत सर कौन लेवे, इस लिए पत्र लिखकर जान बचा ली, इतने ही में अन्दर से आवाज आई कि भोजन तैयार है भोजन कर लो।

मैं जरा सन्ध्या में कम भोजन करने का आदि हूं इस लिए पहले तो टालना चाहा लेकिन पुष्पा नहीं मानी, इसलिए थोड़ा सा खानेको जा बैठा, इतने ही में फिर बाहरसे किवाड़ खटखटाने की आवाज आई, मैंने सोचा मालूम होता है सीता राम पुलिस के डर से वापिस लौट आया है, लेकिन नहीं, सीता राम नहीं थे बल्कि उनकी धर्मपत्नी अबकी बार तशरीफ लाई थी, मैं उनसे बात चीत करने हेतु बैठक में जा बैठा। आकर बैठ गई और मैं रामजुहार तो भाड़ चुल्हे चली गयी, छूटते ही बोली,—तुम्हें लालाजी हमारे ही साथ में ऐसा करना था, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था जो कि हमें इतनी बड़ी सजा दे दी।

कैसी सजा भाभी जी, मैं आप का मतलब अभी समझा नहीं।'

'हां हां ठीक कहते हो लाला जी, गरीबों का मतलब कौन समजता, कोई अगर अमीर आपके दरवाजे पर आया होता तो फौरन मतलब समझ जाते, ना आप अखबार में ऐसी खबर छापते तो हमें काहे को ऐसा दिन देखने को मिलता, दो दिन से पुलिसवालों ने पीछे पड़पड़ा कर आखिर आज हवालात में बन्दकर दिया तभी चैन आई।

'तो क्या सीता राम को बन्द कर दिया?' लेकिन मैंने तो उन्हें छोड़ देने के लिये पुलिस को लिख दिया था।'

'इन चिट्ठी पत्रियों से कुछ काम नहीं चलता है लाला जी, वहां तो बिना रुपयों पैसों के कोई सीधे मुह बात भी नही करता है, लाल चौकी वाले ३०० सौ कहते हैं तो पोली चोकीवाले ५०० सौ अब तुम्हीं बताओ लाला जी मुझ गरीब दुखिया के पास तीन सौ पांच सौ कहां से आये, सत्या नाश जाये उस कलमुहेका खांमखा मेरे आदमी को चोरी में फंसा दिया, लोगोंको झूठ बोलने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरा भी शर्म नहीं आती है, यह भी नहीं सोचते हैं कि हमारी इस जरा सी झूठके पीछे दूसरे का कितना नुकसान होगा।'

'ठीक कहती हो भाभी यह स्वार्थी दुनियां है इसको जितना भी भरपेट खिलाओ उतना झूठ बोलने के लिये कटिबद्ध होगी, अब ऐसा कोई दुर्वि चिन्त्य जुगुत भी तो नहीं है जिस से कि जल्दी परामृत मिल सके।'

'उपाय तो कोई न कोई ढूंढना ही पड़ेगा लालाजी मेरा कोई ऐसा आदमी भी तो नहीं जिसकी कि पहुँच पुलिस तक हो, अब तो तुम्हीं को मेरी मदद करनी होगी लालाजी, चलो उठो लालाजी अब देर न करो कहीं बेकार में पुलिस वाले उन्हें मारने पीटने न लगें।'

अब क्या करूं मेरे सामने अजीब मुसीबत थी अगर नहीं जाता हूँ तो बुरा बनता हूँ जाता हूं तो बुरा बनता हूँ, खैर साहब मैंने अपने दिल में यही सोचा मैं मनुष्य हूं और मनुष्यता के नाते मेरा फर्ज है कि इनकी यथाशक्ति मदद करूं।

हालांकि मैं पुलिसवालों के यहां जाना नहीं चाहता था लेकिन आज सीता राम जी की पत्नी के सामने मुझे अपनी सारी जुगूतियों व चतुरता से हाथ धोना ही पड़ा। हालांकि इस केस में कोई खास जान नहीं थी फिर भी पुलिस वाले उलझाये हुये थे, मैं सीताराम को खूब अच्छी तरह से जानता था। आदत का तो बड़ा अच्छा था और मन का भी साफ था लेकिन इस केस में वह कैसे आ फंसा, मैंने जो समाचार छापा था उसमें भी हालांकि इससे कोई सम्बन्धित नहीं थी, केवल इतना ही तो था कि पुलिसको सीताराम पर भी पूरा २ शक है लेकिन शक पर इतना पुलिस को परेशान करना नहीं चाहिए।'

उपरोक्त प्रकार की बातें सोचता हुआ कोतवाली जा पहुँचा इन्सपेक्टर श्री सिनहा साहब अन्दर कुर्सी में बैठे किसी केसके बारे में छान बीन कर रहे थे। मुझे देखते ही उठकर बोले 'आइये शर्मा जी आपने कैसे तकलीफ की? अरे हां अभी अभी आपका एक पत्र आया था मैं यहां पर था नहीं, अरे कल्लन देखो अन्दर चाय के लिए बोल दो, बैठिये शर्मा जी, यह और आपके साथ में।'

'जी, पड़ोसिन है।'

'बैठ जाओ बहन कैसे खड़ी हो।'

चाय आय की बात छोड़िये पहले काम की बात करिये।'

'पहले चाय, काम तो मैं आप का पत्र देख कर ही समझ गया, और कोई सेवा हो तो बताइयेगा।'

सुखमार्ग

❋ मासिक पत्र ❋

सुख सम्पत्ति पाने के लिये धार्मिक, सामाजिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी सामाजिक समस्याओं से ओत-प्रोत ३२ वर्षों से भारतियों में जागरण का शंखनाद करने वाले सचित्र 'सुखमार्ग' को अवश्य पढ़ें। यह बड़े २ विद्वानों के लेख लेकर हजारों की संख्या में छपता है। वार्षिक मूल्य केवल १) नमूना मुफ्त।

व्यवस्थापकः-

सुखमार्ग कार्यालय,

केमिकल प्रेस, मोहन गेट, अलीगढ़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे रुपया चाहिये !

—श्री कृष्ण बी० ए०—

"तो क्या इस वर्ष भी विवाह न होगा" पत्नी ने पखे की गति मन्द करते हुए पूछा।

कुछ गर्वित स्वर में मुंशी लाला दीन का अधूरा वाक्य था— 'विवाह तो जरूर होगा…… ……परन्तु ………"

इतने में पत्नी टपाक से बोल उठीं। मानो बात काटने के लिए पहले से ही तैयार बैठी हों— "परन्तु वरन्तु कुछ नहीं शादी होगी अवश्य होगी और इसी वर्ष।"

मुंशी लालादीन ने एक एक शब्द पर बल देते हुए कहा—"औरतें सचमुच बड़ी नासमझ होती हैं—अभी बात पूरी भी न हुई कि बीच ही में इस प्रकार कूद पड़ी मानो जंगल से पकड़ कर आई हों।"

"कहिये, कहिये मैं कान लगा कर सुन रही हूं।"

"स्त्रियां अपने स्वभाव से ऊपर नहीं उठ सकती—चाहे उनको कितना भी उपदेश दिया जाय।"

"कहिये न क्या कह रहे थे—अब बाधा न डालूंगी।'

मुंशी जी मीठे शब्दों में बोले 'विवाह की फिक्र हम को भी है राकेश की मां।" एक ओर से स्वाँस खीचते हुए फिर बोले "परन्तु यह तो तुम्हारे सामने ही है कि" जल ग्रहण करने के बाद फिर बोले "कि जमींदार साहब के लड़के को दहेज में १००००) मिले और उनका लड़का किसी काम के लायक भी नही और मेरे लड़के ने तो बी० ए० पास कर इस साल एम० ए० का इम्तहान दिया है।"

"हां बात तो बिलकुल ठीक है"— मुनिया की मां (जो इसी बीच में आ गई थी) ने हामी भरते हुये कहा— "राकेश भैया के विवाह में बाबू तू हूँ खूब दहेज मांगि है।

"यही तो मैं भी सोच रहा हूं, अगर जमींदार साहब ने १००००) लिया तो मैं भी ७०००) से तो किसी प्रकार कम न लूंगा …… क्योंकि … मेरी हैसियत उनसे कम है" लूंगा इत्यादि शब्दोंपर जोर देते हुए तथा हैसियत पर असन्तोष प्रगट करते हुये बोले।

अच्छा तो हम जात हैं"

'तूने तो आना ही छोड़ दिया है"

"आती क्यों नहीं मुनियां की मां यह भी तो तेरा ही घर है।" कहते हुए राकेश की मां उठी और उसको द्वार तक पहुंचाने चली गई।

द्वार पर पहुँच कर मुनिया की मां के ये शब्द थे—"बड़े भैया का विवाह इस साल जरूर कर डालो और बड़े भैया जौन कहते हैं बिल्कुल ठीक हो।"

हां इसी लिये तो मैंने इन सब बातों को छेड़ा है।'

'अच्छा तो हम चलते हैं—पाँव लागत हुई फिर आना मुनिया की मां'—कहते हुए उन्होंने घर में प्रवेश किया।

इस समय तक राकेश के पिता याने लाला जी सोने चले गये थे। राकेश की माँ ने अन्दर आकर खाना खाया और कुछ उपक्रम जो अवशेष थे उनको पूरा कर सोने के कमरे में बड़बड़ाते हुए चली जा रही थी 'दहेज जरूर करारा लेना चाहिये' इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिसुख जी के यहां शादी तै हो गई। लालादीन के यहां यों तो बहुत लोग आये थे परन्तु जोर इन्हीं का पड़ा। हरिसुख जी को इस शादी के तै कराने में चोटी तथा एंड़ीका पसीना एक कर देना पड़ा था, लेकिन अभी भी बीच में पराम्परा, समाज तथा धन ले लुपता ऐसे तीन रोड़े पड़े हुए थे, जिसमें मुसलमान तथा अंग्रेज सरकार अपनी असमर्थता प्रगट कर चुकी थी।

लड़की टेन्थ पास सर्वगुण सम्पन्न, वर्ण गौर, नव किसलय सी कोमल, आंखें भौंरों को भी सामने न फटकने देनेवाली, शरीर हरिणी से किसी प्रकार कम नहीं होते हुए भी जो वह अभी तक पड़ी हुई थी उसका एक मात्र कारण था लालाजी का लक्ष्मीहीन होना।

हरिसुख लाल बिचारों के मंझधार में उलझे हुए यह सोच रहे थे कि, धनाभाव की पूर्ति किस प्रकार की जाय। कभी कर्जा लेने की बात सोचते, कभी पत्नी के सुहाग के गहनों को बेचने को सोचते, बाप दादों की निशानी पर भी एक बार नजर दौड़ चुकी थी। हरि जी की आमदनी या तनख्वाह तो केवल ७५) मासिक से अधिक न थी, जब कि जीवन नौका के पांच सदस्यों को पार उतारने का अकथनीय प्रयत्न करते हुए सामाजिक बवंडरसे मुकाबला करना था

रागिनी तीसरी बार अपने पिता की आकृति देख चुकी थी। चौथी बार आई देखी, इस बार उस से सहा नहीं जा रहा था वह चाहती थी कि कहदे 'मैं शादी नहीं करूंगी' 'जन्म भर क्वांरी रहूंगी' चाहे जहर खाकर प्राण त्याग दूंगी, नहीं नहीं! मेरी शादी उसी से होगी जो दहेज के लिये हठ करेगा ही नहीं।

हरिजी की विचारधाराओं ने इस समय तक चरम सीमा पार कर डाली, वे उठे और लाला की दूकान की तरफ का अपना फाटक खोलना चाहते थे कि चिल्ला उठे—"नहीं! नहीं! मैं अपने खानदान की इज्जत में बट्टा नहीं लगने दूंगा, चाहे ......शा......(साफ सुनाई नहीं पड़ा)..... या..... न......" गला भरा गया और गिर पड़े।

रागिनी अभी दस ही कदम गई होगी कि चिल्लाते हुए पुकारा—"मां! मां!" और पिता जी के कमरे की ओर मुड़ गई।

थोड़ी देर के उपचार में वे ठीक हो गये। रागिनी को इस बात के समझने में देर नहीं लगी कि पिता जी की ईस हालत का क्या कारण है। उसने सोचा मैं ही, मैं ही अभागिन हूँ, मैं ही इन सब बातों की जड़ हूं, मुझ पापिन को जीने का कोई अधिकार नहीं......।'

× × ×

लालादीन अपने असूल के पक्के थे। वे किसी भी प्रकार दहेज की रकम ५०००) से कम करना नहीं चाहते थे। राकेश पूर्ण-रूपसे वर्तमान सभ्यता के रंग में रंग चुका था। उसने अपने पिता के पास चार पत्र केवल इस आशय को प्रदर्शित करते हुए लिखे थे कि उस की शादी में दहेज तय न हो। परन्तु पुरानी परम्पराको सरपर लेकर ढोनेवाले लाला जीपर उस के पत्रोंका जरा भी असर नहीं हुआ। जिस प्रकार भीगे हुए मनुष्य पर एक बूंद पानी। पत्रों के उत्तर में तो उन्होंने लिख दिया था कि 'सब काम ठीक हो रहा है परन्तु भविष्य की बात उनके मस्तिष्क से बहुत दूर पड़ी हुई थी। वहां तक उनकी दृष्टि नहीं पहुँच सकती थी।

× × ×

रागिनीके बुरे बिचारों ने उस के मस्तिष्क में घर कर लिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख)

टन! टन...—घड़ीने दस बजाये। एक युवती एक घर से निकल कर तेज़ी से क़दम दबाते हुए आगे बढ़ी उसका प्रतिबिम्ब भी न समझ सका कि वह कहां जा रही है। बढ़ती चली गई। ....चबूतरे पर चढ़ने लगी...कूएं के पास जा कर रुक गई।

लखनऊ की ट्रेन उस दिन कुछ देर से आ.ई। एक युवक वर्ण गेहुंआं, बदन गठीला, बाल में सुगन्धित तेलों की सुगन्ध, टाई, कोट और पतलून पहने उतरा। रिक्शा किया, चल पड़ा। उसने रिक्शे वाले से कहा "लाजपद रोड तथा गांधी स्ट्रीट पार करते हुए चलो।"

युवती कूएं पर चढ़ चुकी थी कि आवाज आई "कन्या चली जा अपने माता पिता को तड़पा कर आत्महत्या मत कर।" युवती अत्यधिक भयभीत हो चुकी थी। उसने समझा किसी ने देख लिया—सोचा कि लौट चलें परन्तु शरीर में एक नई स्फूर्ति का जागरण हो गया और वह बिना बोले न रह सकी "तुम हो कौन'

आवाज—क्या करेगी पूछ करके।"

"मै जानना चाहती हूं"

"क्या करेगी"

"मैं कुछ उपाय पूछूंगी"

"उपाय यही है कि तू सीधे घर चली जा—सब्र का फल मीठा होता है—तूने जन्म लिया है सांसारिक बाधाओं से लड़ने के लिये, मरने के लिए नहीं।"

'तो तुम चले जाओ मुझे ऐसा उपदेश नहीं चाहिये। कर्कशता भरे शब्दों में कहा उसने

मेरा कार्य था समझाना तुम्हारा था समझना मर्जी तुम्हारी।"

आवाज आई उसकी भलाई के लिये परन्तु उसको उसको उलझनों में डाल गई। वह वहीं खड़ी सोचने लगी क्या किया जाय क्या नहीं?

सन्! सन्!......करता हुआ रिक्शा आगे बढ़ा। लाजपत तथा मार्कट रोड पार कर वह गांधी स्ट्रीट पर बढ़ रहा था। रिम ऐसा मालूम पड़ता था जैसे उस में तीलियाँ ही न हो। पैडल बहुत तेजी से चल रहा था। बीच २ में रिक्शेवाले से कुछ बातें भी हो जाया करती थी।

रिक्शे की आवाज सुनकर युवती के हृदय की गति सौ गुनी अधिक हो गई। सुलझाने के बजाय बजाय उस ने और अपने को उलझनों में डाल लिया।

सोचा कि छिप जाऊं या सदा के लिये गंगा मैया की गोद में सो जाऊँ।

युवक ने एक दृष्टि अपनी घड़ी पर दौड़ाई और दूसरी बार जो आंख उठाई तो देखा सामने कूए पर कोई स्त्री खड़ी है। क्षणमात्र में उसके सामने कुछ दिन पहले वाले घटना का चित खिंच गया और उस को यह समझने में देर न लगी कि वह रोते हाथ किस लिये वहां खड़ी है? युवती ने अपना मुंह फेर लिया था जिस से कि उसके नाक की झलकी दमक जो रोशनी में अधिक बढ़ गई थी कोई देख न ले। सन सनाते हुए रिक्शेसे वह यह न जानते हुए कि क्या कर रहा है कूद पड़ा। दौड़ा कूएकी ओर, वहां पहुंचते ही पहुंचते छपाक छपाक के शब्दों ने शान्त वातावरण में कोलाहल पैदा कर दिया।

मुहल्ले वालों की नींद टूट गई। दो एक आदमी जो उस में आस पास सोये हुए थे जाग पड़े और कूए के पास पहुंचे। युवक को देखकर उनमें से एक ने पूछा— क्यों भाई तुम्हारा गगरा गिर गया क्या?" इतने में दूसरे ने टार्च जला कर कूएमें झांका देखा एक युवा स्त्री उतरा

(शेष आगामी अङ्क में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक रोमांचकारी उपन्यास

अनजान द्वीप, बदनाम घाटी

—कंचन कुमार—

पहाड़ों की तलहटी में एक निर्जन घाटी के बीच एक तम्बू के चारों ओर मौत सा सन्नाटा छाया हुआ था। तम्बू के दरवाजे पर बहादुर झपकियां ले रहा है। पास ही कुर्सी पर प्रसाद ऊंघ रहा है। पूरब की सफेदी के साथ ही तम्बू के चारों ओर जलती हुई आग की रोशनी धीमी होती जा रही है। बहादुर और प्रसाद दोनों ही ठंडी हवा में बेहोश से पड़े हैं।

अचानक तम्बू के पास ही किसी जानवर की चीख सुनकर प्रसाद जाग पड़ा देखा एक सियार भागा जा रहा है और कुछ दिखायी नहीं पड़ा। एक बार वह तम्बू के चारों ओर चक्कर लगा आया। और फिर अपनी जगह आकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद उसे एसा लगा मानों दूर से कोई आवाज आ रही है, उसने बहादुर को झकझोरते हुए कहा—'ऐ बहादुर! उठ। देख कैसी आवाज आ रही है।"

क्या बात है मालिक?' बहादुर चौंक पड़ा।

'यह आवाज कैसी है'

'आवाज!' उसने कुछ देर तक कान लगाकर सुना फिर बोला—दूर कहीं बहुत से नगाड़े एक साथ बज रहे हैं जैसे। नहीं . नहीं, यह आवाज तो धीरे-धीरे पास आ रही है।

हां।'

ढुम ढुम ढुम, ढुम ढुम ढुम .....

नगाड़ों के बजने की आवाज धीरे २ पास आने लगी। मन्त्रमुग्ध से वे दोनों चुपचाप रहस्यमय नगाड़ों की आवाज सुनने लगे।

तभी हाथ में राइफल लिए मनोज तम्बू के बाहर आया नगाड़ों की आवाज से उसकी नींद खुल गयी थी। भीतर श्याम लाल और शेखर दोनों सो रहे थे।

कितनी देर से यह बज रहा है?"

'यही करीब दस पन्द्रह मिनट से।'

इतनी रातको नगाड़ा माजरा क्या है?' मन ही मन बुद बुदाते हुए मनोजने पुकारा—बहादुर

'जी साब।

बहादुर अन्दर आया। मनोज ने थोड़ा बहुत दो चार चीजें निकाल कर कहा, बहादुर तुम यहीं रहो। प्रसाद मेरे साथ जिधर से आवाज आ रही है उधर जायेगा। हम लोगों के जाने के बाद तुम श्यामलाल और शेखर को जगा देना समझे

अच्छी बात है, लेकिन सरकार, इस वक्त इस जंगल में निकलना खतरे से खाली नहीं है।'

'यह मैं जानता हूँ बहादुर तुम घबराओ नहीं हाँ रात खत्म हो रही है फिर भी आग में कुछ लकडियाँ दे देना और जब तक हम न लौटें तब तक श्याम लाल या शेखर को कहीं जाने नहीं देना

'जी साब।' 'प्रसाद'

'कहो, यार।' तुम तय्यार हो न?'

'यस डीयर।'

'आओ चलें।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीठपर राइफल लटकाये, हाथ में टार्च लिए मनोज प्रसाद केआगे चलने लगा। एक नदीके किनारे तम्बू गाड़ा गया था। तम्बू के पूरब दिश की ओर से आवाज आ रही थी।

दुम दुम दुम- दुम दुम दुम......अँधियारी रात।

टार्च की रोशनी के सहारे नदी के किनारे २ वे लोग चलने लगे। ऊंचा नीचा मिट्टी कंकड़ पत्थर से भरा रास्ता। कई बार वे पत्थर से टकराकर गिरते २ बचे। चलते चलते वे एक मील के करीब आ गये। आवाज अब जोर से सुनाई देने लगी। दुम दुम दुम, दुम दुम दुम...

आवाज की तेजी बढ़ती ही गई। कान के पर्दे जैसे फटने लगे। दुम दुम दुम ..

पास ही कहीं से नगाड़ों के बजने की आवाज आ रही थी। उन्होंने चारों ओर देखा सब अंधेरा ही अन्धेरा। कहीं भी कुछ दिखलाई नहीं पड़ रहा था। पर ऐसा लग रहा था, जैसे बायीं ओर जहां से पहाड़का सिलसिला शुरु होता है वहीं कहीं से वह असह्य आवाज आ रही थी।

मनोज और प्रसाद नदी किनारे के रास्ते को छोड़ पहाड़ की ओर आने लगे। आसमान को चुनौती देने वाले दैत्कार काले पहाड़ के बहुत ही पास आने पर उन्हें ऐसा लगा जैसे यहीं कहीं पास में एक गुफा है, और वहीं से यह भीषण आवाज आ रही है।

मनोज ने इधर उधर टार्च घुमायी। टार्च की रोशनी पहाड़ से टकराकर लौट आयी। कहीं गुफा का नामों निशान दिखलाइ नहीं पड़ा वे लोग पहाड़ के किनारे-किनारे से बधानी से आगे बढ़े।

थोड़ी दूर जाने के बाद एक गुफा का मुंह दिखलाई पड़ा। वहीं से आवाज आ रही थी। अब नगाड़े बहुत ही पास बजते मालूम पड़ रहे थे। लोगों ने गुफा की ओर से अंदर झांका। देखा, हाथ में मशाल लिए नगाड़ा बजाते बजाते बहुत से जंगली इधर आ रहे थे। ज्यादा नहीं. वे लगभग सात सात सौ गज की दूरी पर थे। जंगलियों को गुफासे इधर ही आते देख कर वे दोनों दौड़कर एक बड़े से पत्थर की ओड़ में छिप गये। उत्तेजना के मारे उनका दिल धड़कने लगा।

एक एक पल जैसे एक एक घंटे सा लगने लगा। दस पन्द्रह मिनट तक बैठे रहने के बाद उन्होंने जंगलियों को गुफा से बाहर आते देखा। नगाड़ा जोर जोर से बज रहा था। दुम दुम ....

चार पांच आदमी एक अजीब सी डोली में न जाने क्या उठाये लिए जा रहे थे और लोग मशाल लेकर जोम्बा-जोम्बा जुल्लू जुल्लू चिल्लाते हुए उन आदमियों को घेर कर नाच रहे थे।

जलते हुए मशाल के सामने नाचते हुए खूंखार जंगली शैतान से लग रहे थे उनके पैशाविक नृत्य को देख कलेजा काँप उठा। वे एक प्रकार से नगे थे, केवल कमर में कपड़े का एक टुकड़ा लटक रहा था। सभी के हाथ में भाला तथा पीठ पर तीर-धनुप था।

गुफा के बाहर वह डोली उतार कर उसे घेर कर. "जोम्बा जुल्लु जुल्लु" कह कर चिल्लाते २ उछल कूद मचाने लगे।

नगाडे की आवाज तेज हो गयी। दुम, दुम, दुम.......

अचानक गुफा के अन्दर से कोई जोर से चिल्ला उठा, 'गोडो! गोडो।

(शेष अगामी अङ्क में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

T. B. टी० बी० तपेदिक राजयक्ष्मा

लेखक पं० प्यारे लाल शर्मा
खान्दानी वैद्य जगाधरी

"तपेदिक" या "सिल" और पुराना बुखार लग भग एक ही प्रकार के रोग हैं। यदि सच पूछा जाय, तो इस दुष्ट रोग का नाम "दिक" ठीक ही रखा है। क्यों कि इस रोगकी पहचान और इलाज पर दिमाग लड़ाते लड़ाते इलाज करने वाला तथा रोगी दोनो ही प्रेशान (दिक) हो जाते हैं।

इसी से इसका नाम 'दिक' पड़ा है! भारत के कोने कोने में इस दुष्ट रोग ने जो तबाही और बरबादी मचा रखी है वह किसी से छिपी नहीं है। सरकारी रिपार्ट के अनुसार लग भग ६-७ लाख व्यक्ति प्रति वर्ष इस दुष्ट रों से काल के भयंकर गाल में चले जात हैं। परन्तु हम अपने विचार और ४० साल के तजुर्बे से कह सकते हैं। कि यह सरकारी रिपोर्ट भी अधुरी है। क्यों कि भारत की अधिक जनता तो देहातों में रहती है और वहां इस रोग से मरने वालों की सख्या का अन्दाजा लगाना कठिन ही नहीं असम्भव है। ठीक से हिसाब लगाया जावे तो सरकारी रिपोर्ट से लगभग४-५ गुणा अधिक लोग इस रोग से काल के भयकर गाल में समा जाते हैं। मरने वाला तो मर ही जाता है साथ ही कुटुम्भ के अन्य व्यक्तियों को भी बरबाद कर जाता है। घर का सब कुछ इलाज पर लुटाकर फकीर हो जाना पड़ता है। इसी से कहा जाता है। कि यह रोग सबसे भयकर और दुष्ट होता है। भाग्यहीन भारत ही क्यों सब से अधिक इस दुष्ट रोग का शिकार है।

मित्रो—आओ हम आपको इस रोग का असल कारण बताते हैं। जरा ध्यान से विचार पूर्वक पढ़ो जो पढ़ना नहीं जानते उन्हें भी सुना कर जनता की भलाई में सहायक बनें। भारतके पूज्य ऋषियों ने इस दुष्ट रोगके बारे में जितनी छान बीन की है। शायद ही कोई कर सकेगा यह तो हमारे ही पूज्य लंगोट बन्द ऋषियों का दिमाग था जो इस रोग के असल कारण को केवल एक श्लोक में बांध कर (दरिया को लोटे) में बंदकर दिया है।

अर्थात—

वेगरोधात्क्षयाच्चैव साहसा द्विषमाशनात्।
त्रिदोषो जायते यक्ष्मा गदो हेतुचतुष्टयात ॥

(१) (वेग रोधात)—हर प्रकार की हाजत को रोकना—अर्थात टट्टी, पैशाब, पाद, भूख प्यास आदि यह सब परमात्मा (ईश्वर) ने शरीर की सफाई के लिये ही बनाये हैं इनके वेग को रोकना भारी भूल है बहुत से मूर्ख वीर्य केवेग को स्त्रीप्रसग के समय स्थम्भन आदि की औषधियों से अधिक देर तक रोकने में ही अपनी बहादुरी समझते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि इसका नतजा गुर्दा मसाना पेशाब में रुकावट पथरी, प्रमेह सुजाक आदि रोगों में फसकर अन्त में 'तपेदिक' रोग को बुलाना है।

(२) धातुक्षय अर्थात अपने वीर्य को नष्ट करना आजकल इस नई रोशनी के युग में इस बात का रोना कहां तक रोया जावे। ६० प्रतिशत नवयुवक तो बुरी सँगतों में फस कर अपने शरीर को प्राय नष्ट भ्रष्ट ही कर लेते हैं। यदि हमारे कहने पर विश्वास न हो तो किसी भी समाचार पत्र को उठाकर देखें। लम्बे चौडे विज्ञापन इसी ही रोग की औषधियों के मिलेंगे किसी को नवाब वाजिद अली शाह का नुस्खा मिल जाता है, किसी को जगल में कोई सन्यासी बता गया था। जो एक दो खुराक में ही जवान बना देनेका ईश्वरीय दावा करता है। इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप समझ ले। वह सब विज्ञापन इस बात का सबूत है। कि कल्युगी युग के नवयुवक फैशन और पाशचात्य शिक्षा के शोकीन किस तरह पर इन बुरी आदतों में फंसे हुए हैं। वह लोग स्थम्भन आदि की औषधियों से ही अपनी बहादुरी का सिक्का जमाना चाहते हैं हथलस, अधिक मैथुन आदि कुकर्मों से अपने शरीर के राजा (वीर्य) को नष्ट करके स्वयं अपने को बरबाद करते हैं। यही तो इस का कारण है कि आज कोई भी मोहल्ला, गांव कस्बा या शहर ऐसा न होगा जहां २ या ४ 'तपेदिक' के रोगी न हों। खाने को तो मिलता नहीं परन्तु फैशन अ श्य चाहिये। यह फैशन परस्ती ही हमारे देश के नवयुकों और नवयुवतिया का नष्ट भृष्ट करने की जड़ है। अधिक इस विषय में कहां तक लिखा जावे. यदि अधिक जानने को इच्छा हो। तो हमारी बनाई भारत विख्यात पुस्तक 'खजाना करामात' मूल्य ६) रु० अवश्य मगाकर पढ़े आज भारत के काने २ में इस पुस्तक ने धूम मचा रखी है। और लाखो नवयुवक अपनी जिन्दगी का सुधार कर के सुख उठा रहे हैं। अन्यथा कुकर्मों में फस कर आप एक एक न एक दिन इस दुष्ट रोग 'तपेदिक' में अवश्य ही फसेंगे, फिर वही कहावत होगी कि अब पछताए क्या होत है, जब चिड़ियां चुग गई खेत।

इस लिए प्यारे नवयुवको सावधान—

(३) तीसरा कारण इस दुष्ट रोग का बेजा 'साहस' है। अर्थात अपने शरीर की शक्ति (ताकत) से बाहर कोई काम करना है जिस से फेफड़ों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कभी कभी फेफड़ों से रक्त भी आने लगता है। हमारे ४० साल के अनुभव में अनेक जगह ऐसे रोगी देखे हैं। कि उन के बेजा 'साहस' के कारण फेफड़े ऐसे जखमी हो गये कि महीनों इलाज करने पर भी कुछ न बन सका अन्त में मृत्यु ही उनके इस बेजा साहस का कारण हुई।

(४ [विषम-आशानत] हमारे पूज्य ऋषियों ने इस रोग का चौथा कारण 'विषम आशानत' अर्थात विष भोजन कहा है। आप कहेंगे—कि क्या भोजन की वस्तुएँ भी विष धर हो सकती हैं। हां—वह कैसे जरा देखिये ऋषियों ने लिखा है। अजीर्णम भोजनमविषम अर्थात बदहजमी की हालत में भोजन करना विष का असर रखता है। फिर आजकल न तो हमारे खाने का कोई ठीक समय है। जब देखो बाजारों में पत्ते चाटते हुए ही हमारे नवयुवक दिखाई देते हैं। और रुची न होते हुए भी गाय बैल की तरह से इस लेटर बक्स को भरना ही ताकत समझते हैं। चाहे इस का असर उलटा ही क्यों न हो। इन दिनों देश में घी के नाम पर बिकने वाली वस्तु और भी शरीर का शत्रु है। कई जगह सरकार ने स्वयं इसकी परीक्षा की है कि बिल्ली, कुत्ता, चूहे तक के शरीर और ताकत को नष्ट करता है। फिर भी शोक है कि इस बदनसीब देश में इस का व्यापार अधिकता से हो रहा है बल्कि लम्बे चौड़े विज्ञापनों के साथ इनमें काफी रूप से विटामिन जो तन्दरुस्ती के लिये उत्तम वस्तु है बतलाया जाता है। परन्तु शोक है जब से यह विषधर वस्तु मार्केट में आई है लोगों की तन्दुरुस्ती को चोपट कर दिया और तपेदिक रोग दिन पर दिन जोरों पर है। हमारी सरकार और म्युनिसपिल कमेटियों को चाहिये कि अपने २ हल्के में इस विषधर वस्तु का बिकना कतई बन्द करदें। अन्यथा आये दिन की रिसर्च और कमीशनों आदि का बैठना सब व्यर्थ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असल में जब से बदनसीब भारत पर अंग्रेजों का राज हुआ था उसी समय से सब ही रोगों की चाल तेजी से बढ़ रही है। लोगों के रहन सहन ठीक नहीं फैशन परस्ती ने घर कर लिया खुराक का कोई ठीक समय नहीं, गरीब बेचारों की कौन कहे अमीर कहलाने वाले भी असली घी का तरस रहे हैं। जब तक इन सब बातों पर ध्यान न दिया जावेगा, केवल कमीशनों या सेनेटोरियमों से क्या होगा ? इस सोने की चिड़िया कहे जाने वाले भारत में लोग दाने २ को तरस रहे हैं। फिर "तपेदिक" जैसे भयकर रोग अपना डेरा न जमावें यह क्य कर हो सकता है।

तपेदिक रोग का होना और पहचान

यह तो आप को मालूम हो चुका है कि इस रोग के पदा होने के खास २ कारण क्या हैं। हमारे ऋषियों की इसरोगके बारेमें छान बीन *Research* के अनुसार केवल तपेदिक या आजकल के डाक्टरी नाम केवल टी० बी० (*T. B.*) कह देना ही काफी नहीं है। इसकी भी किस्में (रूप) होती है,

यदि उन सब के बारे में पूरी तरह से लिखा जावे तो सैंकड़ों पृष्टों की लम्बी चौड़ी पुस्तक बन सकती है और यह भी आपको याद रखना चाहिये कि सब प्रकार के ज्वर पुराने होने से तपेदिक की शकल में बदल जाते हैं यहां पर यदि थोड़ा सा *Natural Power (vital force)* अर्थात 'कुदरती शक्ति' के बारे में भी समझा दिया जावे तो बहुत कुछ लाभ होगा। असल में यह ईश्वरीय शक्ति (Natural Power) शरीर के लिए एक प्रकार का हथियार है और समय पढ़ने पर बहुत रोगों से शरीर की रक्षा करना है। आपने बहुधा देखा होगा, कि प्लेग हैजा, चेचक, इन्फुलेन्जा आदि छूत छात के बड़े भयंकर रोग हैं। जब यह रोग फैलते हैं तो शहर के शहर तबाह हो जाते हैं परन्तु उस समय भी सैकड़ों ऐसे व्यक्ति होते हैं जो किसी तरह की परवाह न करते हुए भी ऐसे २ रोगियों की भी सेवा करते हैं। फिर भी उनपर इन रोगों काकोई असर नहीं होता है। इसका असल कारण यह है कि उनकी (Vital force) दिली शक्ति बहुत अधिक शक्ति शाली होती है और इन रोगों के जर्मों (किटाणुओं) को उस शक्ति से हार खानी पड़ती है। और यदि ऐसे जर्म शरीर में पहुंच भी जावें तो स्वयं उस शक्ति से नष्ट होकर रोगी बच जाता है और यदि यह शक्ति कमजोर होती है तो प्रत्येक रोग के जर्म शरीर में पहुंच कर धीरे धीरे शरीर को नष्ट कर डालते हैं। इस लिए ऐसे रोगों से बचने के लिऐ दिल की ताकत को बलिष्ठ रखना जरुरी है हमने स्वय सैकड़ों जगह देखा है कि जहां किसी आदमी को २—४ दिन बुखार आ गया और साथ में खांसी भी थोड़ी बहुत हुई। फिर चाहे वह किसी प्रकार का बुखार हो हमारे पश्चमी विद्या के विद्वार बगैर किसी खास परीक्षा के झट टी० बी० कह डालते हैं। बस जहां रोगी के दिल में यह सन्देह हुआ तो यथार्थ में टी० बी० न होते हुए भी अपने दिल के सन्देह से ही इस भयंकर रोग में फंस जाता है। (Tuberculosis Germs) टी० बी० के जर्म (कीटाणु)

यह बात पूर्ण रूप से स्पष्ट हो चुकी है कि इस रोग के जर्म बड़े भयकर होते हैं यह जर्म थूक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(कफ) में ६ सप्ताह तक जीवित रहते हैं, परन्तु जब कफ (बलगम) सूख जाता है तो इस सूखे हुए कफ में ६ मास तक जीवित रहते हैं। पानी में भी यह कई मास तक जीवित रहते हैं। हां धूप की तेजी को यह सहन नहीं कर सकते हैं। और जल्दी धूप में नष्ट हो जाते हैं। धूप के अलावा साफ और ताजा हवा भी इनकी शत्रु है उत्तम साफ और ताजा हवा में यह जल्द नष्ट हो जाते हैं। जब इस रोग के जर्म शरीर में पहुंचते हैं। तो सब से पहले शरीर के कमजोर भाग की तालाश करते हैं।

शरीर के कमजोर भाग में यह अपना डेरा जमा लेते हैं और फिर वहां से दूसरे भागों में फैलना शुरु करते हैं जब यह जर्म फेफड़ों *Lungs* में पहुंच जाते हैं तो उस को फेफड़ों की टी० बी० कहते हैं। यदि अन्तड़ियों में पहुँच जावे तो अन्तड़ियों की टी० बी० (*Intastine T. B.*) कहते हैं। यदि गले की तरफ चले जावें तो 'कंठमाला' के नाम से कहा जाता है। यदि हड्डियों में चले जावे तो फिर बोन टी० बी० *Bone (T. B.)* कहने लगते हैं। अधिक कर के यह दुष्ट जर्म शरीर के इन ही भागों को पसन्द करते हैं। खुलासा यह है कि यह भयंकर जर्म शरीर के जिस अंग में भी पहुंचते हैं। उस की शक्ति को नष्ट करके दूसरे अंगों को भी खराब करके शरीर को नष्ट कर डालते हैं।

इस दुष्ट रोग की शुरु किस तरह होती है।

इस रोग का आरम्भिक काल इतना छुपा हुआ है कि रोगी को स्वयं कुछ मालूम नहीं होता है। मर्दों के मुकाबले में स्त्रियों को यह अधिक होता है क्यों कि उनकी *Vital Force* (दिली ताकत) पुरुषों से कमजोर होती है। बहुधा रोगियों में आरम्भ काल में यह बातें होती हैं कि रोगी दिन पर दिन कमजोर होता है बेचैनी और दिल में घबराहट रहती है। दिल नब्ज की हरकत किसी कदर तेज हो जाती है। दुपहर और शाम के समय हल्की २ हरारत रहती है। स्त्रियों में मासिक धर्म की कमी हो जाती है या बन्द हो जाता हैं। और जब रोग छाती में पहुंच जाता हैं तो बलगम (कफ) आना शुरु हो जाता है। कभी कभी खून थूकने से मालूम होता है फिर धीरे २ इसका असर फेफड़ों की तरफ हो जाता है कभी कभी इसका आरम्भ पेट और अन्तड़ियों से होता है अर्थात पहले कुछ दिन बदहजमी, पेचिस, भूख का न लगना मतली आते रहना धड़कन आदि कभी छाती पर चोट लगने या शक्ति से अधिक भार उठाने से भी यह रोग हो जाता है।

रोग की पहचान

इस रोग को चार दर्जों में बांटा गया है।

पहला दर्जा— मामुली ज्वर और खासी शरीर का टेम्परेचर सुबह ९७ या ९७॥ और शाम को ९८ या ९९ तक हो जाना, सिर में मामूली दर्द रहना।

दूसरा दर्जा—ज्वर खांसी की अधिकता, शरीर की हरारत भी पहले से बढ़ जाती है टेम्परेचर सुबह के समय ९८॥ ९९ और शाम को १०० या १०१ हो जाता है। शरीर का वजन दिन पर दिन घटने लगता है। पेशाब का रंग पीला हो जाता है।

तीसरा दर्जा—ऊपर लिखी सब ही बातें में अधिक कफ अधिकता से निकलता है। जिस में अधिक मात्रा पीप की होती है। बल्कि फेफड़ों से खून आने लगता है बुखार रात को तेज होकर सुबह के समय व रात में ही इतना पीसना आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि रोगी का बिस्तर कपड़े आदि भीग जाते है पाचन शक्ति नष्ट हो जाती है ।

चौथा दर्जा—सब ही उपर की बातोंमें अधिकता दस्तों का शुरु हो जाना हाथ पांव मुँह पेट आदि पर सुजन हो जाना और यह बिलकुल अन्तिम स्टेज है परन्तु इस रोग में एक विशेष बात यह होती है कि रोगी की हालत अन्त तक बोलने की ठीक रहती है रोगी की मृत्यु के पश्चात इस रोग के भयंकर जर्म इधर उधर फैलते हैं

इस रोग से बचने के कुछ उपाय

उपर इस बारे में बहुत कुछ समझा चुके हैं फिर भी यहां खास बातें संक्षेप में बतला देना उचित समझते हैं अच्छी तरह से ध्यान में रखना चाहिये बल्कि जो रोगी इस रोग में फसे हुए हों इलाज के समय में भी ध्यान रखना उचित है। -

(१) रोशनी और ताजा हवा इस रोग के जर्मो की शत्रु है। इस लिये मकान ऐसा हो जहां रोशनी और हवा पुर्ण रूप से आती जाती हो

(२) रोगी का भोजन जल्दी पचने वाला पुष्ट हो जैसे दूध, मक्खन. घी साबूदाना, बिस्कुट अण्डा शोरबा मीठे और ताजे हर तरह के फल. हरी और ताजा सबजियां खाना भी भूख से कम खावें दूध को सर्वदा गर्म करके सेवन करें शराब आदि नशे की वस्तुओं से कतई परहेज

(३) रात को अधिक न जागें जैसे ही नीद मालूम दे तुरन्त बिस्तर पर आराम से सो जावें। जिस कमरे में सोवें खिड़की दरवाजा आदि खुला रखें गर्मी हो या सर्दी मुंह खोलकर सोना चाहिये।

(४) कोई भी काम चाहे शरीरी हो या दिमागी अपनी ताकत से अधिक न करें। सुबह सूर्य उदय से पहले और शाम को अस्त के पश्चात जितना भी हो सके टहलना जरुरी है रंज, गम, क्रोध. आदि को छोड़कर हर समय दिल को खुश रखें।

(५) (स्त्री प्रसंग की अधिकता आदि बुरी आदतों को छोड़ दें

६) रोगी के बिस्तर कपड़ों आदि को प्रतिदिन धूप में डालें और रुमाल आदि जिस पर रोगी के बलगम का असर हो, प्रतिदिन उबलते हुए पानी में डालकर साफ करना चाहिये रोगी को इधर उधर दीवारों पर थूकने से बंद कर दें।

(७) रोगी को दूसरे तन्दरुस्त आदमी से अलग कमरे में रखें और जिस कमरे में रोगी रह चुका हो उस में उस समय तक न रहें जबतक दिवारों पर सफेदी न कराली जावे, और जमीन को फिनायल आदि से साफ कर के प्रतिदिन ५-६ दिन तक नीम के पत्तों की धूनी देनी चाहिये।

(८) यदि स्त्री रोगी हो तो पति को उस के पास सोना प्रसंग करना चुम्बन आदि कदापि नहीं करना चाहिये यदि बच्चे की माता रोगी हो तो उसका दूध कदापि न दें गाऐ या बकरी के दूध से पालना करें।

(T. B) टी० बी० तपेदिक का ईलाज तपेदिक (असाध्य) रोग मशहूर है परन्तु यह बात सचाई के प्रतिकूल है। दुनियां का कोई भी रोग ला इलाज (असाध्य) नहीं है, यदि पूर्ण रूप से रोग की परीक्षा होकर असल जड़ को मालूम करके इलाज की पूर्ण रूप से व्यवस्था हो सके। यदि ठीक से प्रीक्षा और इलाज न हो तो सब ही छोटे से छोटे रोग भी अन्त में लाईलाज हो सकते हैं फिर यहतो भयंकर रोगही है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काफी रूप से अधिक दिनों तक ईलाज की आवश्यकता है।

१० १५ दिनों में किसी भी इलाज से पूरा फायदा होने की सोचना व्यर्थ और भूल हैं हम अपने ४०-साल के तुजर्बे से कह सकते हैं कि अनेक रोगियों की बिगड़ी हुई हालत में ३ मास तो क्या साल साल भर इलाज करना पड़ता है। प्रिय पाठगण जरा और भी सुनिये अनेक रोगी हम को लिखा करते हैं। यदि आप गारन्टी से इलाज करें और आराम होने का पूरा विश्वास दिलावें तो हम आप का इलाज शुरु कर सकते हैं और पूर्ण रुप से आराम होने पर दवा के मूल्य से पांच या दस गुणा अधिक आप को देंगे। चाहें आप लिखवा लें या रजिस्ट्री करालें आदि आदि हमारे पास ऐसे दसों पत्र प्रति दिन आते हैं हम अपने उन भोले भाले मित्रों को बतला देना चाहते हैं। ध्यान पूवक नोट करलें (T.B) तपेदिक एक ऐसा भयंकर रोग हैं कि सिवाये परम पिता परमात्मा के कोई भी बड़े से बड़ा डाक्टर, हकीम वैद्य कुछ नहीं कह सकता है कि कल को क्या होने वाला है बस हमारी तो यही गारन्टी है कि परम पिता परमात्मा ने ४० साल के समय में दस बीस नहीं सैकड़ों हजारो पेसे ऐसे रोगियां पर भी जिन्हें ऐक्सरे (X Ray) आदि के बाद डाक्टरों हकीमों वैद्यों ने ला इलाज (असाध्य) कह कर इलाज से मुँह मोड़ लिया था। हम को पूर्ण रूप से सफलता दिखाई है यह सब परमात्मा की कृपा है। न हमारा कोई ईश्वरीय दावा है। कहावत है क हानि लाभ, जीवन, मरन, यश, अयश विधिहाथ यह ६ बातें तो परमात्मा ही के हाथ में हैं। वह जिस को चाहे यश दिला सकता है, हमारा तो इसी बात पर पूर्ण विश्वास है। आज भारत ही नहीं दुनियां के कोने कोने से हमें जो भी नेक नामी (यश) मिल रहा है वह परम पिता परमात्मा और पूजनीय ऋषिकों का ही आशीरवाद है, अन्यथा हम स्वय कोई चीज नहीं है। आज परमात्मा की कृपा से हम तो यही समझते हैं कि 'जबरी' के नाम में ही पूज्य ऋषियों के आत्म बल का कुछ रहस्य जरुर है जब ही तो तीसरे चौथे दिन अपना अद्भुत गुण दिखाना शुरु कर देती है फिर भी इलाज के बारे में हमारी आप को खास राय है कि आपके दिल में जिस किसी ईलाज अर्थात डाक्टरी यूनानी आयुर्वेदिक आदि पर पूरा विश्वास हो तसल्ली के साथ वही इलाज करें। जल्दी २ कोई इलाज अदल बदल न करें।

रोगी के कुटुम्ब वालों से एक आवश्यक निवेदन।

चाहे कोई भी हकीम या डाक्टर रोगी को (टी० बी०) तपेदिक रोग बतलावे तो भी रोगी पर जहां तक हो सके प्रकट न होने दें। और यह भी अच्छी तरह से समझ लें कि उत्तम इलाज से यदि रोग का बढ़ना रुक जावे तो कदापि यह न समझें कि अब रोग जाता रहा यदि ऐसा विचार करके इलाज छोड़ दिया गया तो भारी गलती होगी रोग का बढ़ना रुक जाने पर भी कम सेकम १ साल रोगी को पूर्ण रुप से परहेज आदि रखना चाहिये और वैद्य की राय पर चलना चाहिये। यदि आप को हम पर भरोसा और पूर्ण विश्वास हो और हम से इलाज कराना चाहें तो इस रोग के इलाज में जगत विख्यात दवा 'जबरी' के साथ हम जो दूसरी औषधियां रोगी की हालत के अनुसार व्यवहार करते हैं उन सब के बारे में भी लिख देना जरुरी है जिस में रोगी की दशा के अनुसार आप स्वयं भी विचार करके मगा सकें और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल्द लाभ दिखलाई दे सके। हमारी यह सब औषधियाँ इस प्रकार हैं।

❀ जबरी न० १ या न० २ ❀

मूल्य न० १—जिस में साथ २ शरीर में ताकत और खून बढ़ाने के लिये मूल्यवान सोना, मोती फौलाद, अभ्रक आदि की भस्में भी पड़ती हैं। ४० दिन का पूरा कोर्स ७५) रु० है नमुना १० दिन ५ तोला दवा २०) रु०
इसकी मात्रा रोगी की शक्ति के अनुसार १ माशे से ३ माशे तक है।

(१) जबरी न० २—जिस में केवल जड़ी बूटियां ही हैं। मात्रा ३-३ माशे ४० दिन के लिये २०) रु० नमूना १० दिन के लिये ६) रु० है यह दवा सुबह शाम अर्क गिलोद (गुर्च) या ताजे पानी से सेवन करनी चाहिये। जाड़ा में गर्म पानी से

(२) ज्वर नाशक—यह गोलियां बुखार की हरारत बढ़ने को रोकती है 'जबरी' से ३-३ घटे बाद १ १ गोली २ घूंट गरम जल से लेनी होती है। दिन में ३ बार। मूल्य ४० गोली का पैकिट १।) रु०

(३) खांसी के लिये चटनी की दवा-मात्रा ३ माशे दवा चार ताला शर्बत बनकशा या शहद में मिलाकर और ६ माशे बादाम रोगन असली मिलाकर दिन में ३-४ बार थोड़ा २ चटावें मुल्य २॥ तोला १० दिन के लिये २॥) रू० ४० दिन के लिये १०) रू० है।

(४) च्यवन प्राश असली—मात्रा ६ माशे से १ तोला तक दिन में दो बार ऊपर से गाए या बकरी का दूध गरम किया हुआ। एक बार दिन में दूसरी बार रात को सोते समय दें यह आयुर्वेदिक शास्त्र की विख्यात दवा है जो विशेष रुप से असली प्रयोग के अनुसार बनाई जाती है मूल्य १ पाव ३।) आधसेर ६) और १ सेर ११) रु० है

(५) नवशक्ति रसायन—यदि कुछ अधिक खर्च कर सकें तो च्यवनप्राश के स्थान पर इसको सेवन कर सकते हैं यह बहुत ही मूल्य वान दवा है और पन्डित जी खास प्रयोग के अनुसार सोना मोती आदि मूल्यवान भस्मों को शामिल करके अपनी देख रेख में तैयार कराते हैं यह दवा शरीर में तेजी से नया रक्त पैदा करती है इस से भूख बहुत लगती है। खाना पीना जल्द हजम होता है इसकी मात्रा ३-३ माशे दिन में २ बार च्यवनप्राश के अनुसार ऊपर से दुध आवश्यक है मुल्य प्रति तोला १।) रू० है १० दिन के लिये ५ तोला दवा का मूल्य ६।) रू० ४० दिन के लिये २५) रू०।

(६) अमृतरस—यदि फेफड़ों या शरीर के अन्दरूनी भाग में दर्द आदि हो तो इस दवा की ३-३ बून्द 'जबरी' और ज्वरनाशक के साथ जो पानी अर्क आदि ले उसमें मिलाकर दे इस से हाजमा ठीक होगा। भूख बढ़ेगी शरीर में खून बढ़ेगा दर्द आदि दूर होगा मुल्य बड़ी१ शीशी जो लग भग २ सप्ताह चलती है। ४॥) रू० छोटी शीशी २॥) रूपया।

(७) लाक्षादि तेल—तपेदिक रोग के लिये आयुर्वेदिक शास्त्र का विख्यात अपने गुणों में विलक्षण है। शरीर पर मालिश करने से शरीर की तमाम हड्डियों के दर्द धड़कन को तुरन्त दूर करता है। मूल्य एक पाव ६) रु० है मालिश के समय १ तोला तेल में १० बूंद अमृत रस मिला देनेसे और भी लाभ होगा

(८) खून बन्द करने वाली दवा—यदि रोगी के फेफड़ों आदि से कभी कभी बलगम के साथ खून भी आता हो तो इस दवा को अवश्य सेवन करावें. मात्रा ४ रत्ती से १ माशे तक. मुल्य प्रति तोला २॥) रु० दस दिन के लिये २ तोला काफी होगी।

यह ८ प्रकार की दवाएं हमारे यहां रोगी की की दशा के अनुसार सेवन कराई जाती है।

पता—राय साहब के० ए० शर्मा जगाधरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ देश के नवयुवकों को नेक सलाह ॥

कार्यालय में जो सैकड़ों पत्र प्रति दिन डाक से आते हैं, उन में ९० प्रतिशत वीर्य सम्बन्धी रोगों में फंसे हुए नवयुवकों के ही अधिकतर होते हैं। भारत माता की उन्नति का जिन युवकों पर दारोमदार है। उनकी ऐसी दशा पढ़ कर रोना आता है। अनेक तो ऐसी जिन्दगी को भार समझते हैं। परन्तु यह नहीं समझते हैं कि ऐसी दशा खराब सोसाईटियों में पड़कर स्वय उन्होंने पैदा की है। अब भी समय है सम्भल जावें, सब तरह से अपने वीर्य की रक्षा करें। जिन लोगों ने हमारी बनाई विख्यात पुस्तक 'खजाना करामात' या 'गोहर मुल्क' आदि देखी हैं, वह तो इस विषय में सब कुछ जानते ही हैं। कि वीर्य तथा इन्द्रिय सम्बन्धी रोगों से किस प्रकार बचा जा सकता है। यदि आप बदकिस्मती से साल दो साल किसी ऐसी खराब सोसाइटी में फंसकर अपने आपको बरबाद कर चुके हो, वीर्य सम्बन्धी रोगों के कारण सन्तान का सुख न देख सकें हों। या शरीर में किसी तरह की कमजोरी आदि मालूम देती हो। तो तुरन्त कार्यालय की बनाई हुई लाखों नवयुवकों को पुर्णजीवन देने वाली सोना, मोती आदि बहुमूल्य पदार्थों से बनी हूई अमीर और सामर्थवान पुरुषों के लिए ४० दिन का पूरा कोर्स ८० गोहर पिलस और एक तोला गोहर तिला मूल्य ५०) रु० तथा नवशक्ति रसायण स्पेशल सोना मोती वाली २० तोला मूल्य २५) रु० अमृतरस २ शीशी ६) रु० पार्सल आदि खर्च ४) रु० लगभग ९०) रु० खर्च करके अपने स्वास्थ्य को ठीक करके यथार्थ में सुख प्राप्त कर सकते हैं। यदि आपकी सामर्थ इतना मूल्य खर्च करने को नहीं है तो भी घबराने की कोई बात नहीं है। कार्यालय ने दूसरी दवा ऐसे रोगियों के लिए 'अमृत टानिक पिल्स' अमृत तिला मूल्य ४० दिन का कोर्स १२) रु० नवशक्ति रसायण २० तोला २५ रू० अमृतरस २ शीशी ६) रू० महसूल आदि ४) रू० कुल ४०) रू० तैयार की है यह भी अपने मूल्य में बहुत उत्तम हैं। इन औषधियों को १०, १५ दिन सेवन करने से ही आप स्वयं ही कह देगें कि हम आश्चयजनक वस्तु सेवन कर रहे हैं। एक बार परीक्षा करें।

JABRI

जबरी आयुर्वेद शास्त्र का अनोखा चमत्कार है ।।2500

टी० बी० तपेदिक और पुराने बुखार से रोगी को काल गाल से बचाने वाली यही एक मात्र दवा है जिसका नाम आज भारत के कोने २ में प्रसिद्ध है लोगों ने यह मान लिया है कि 'जबरी, दवा नहीं बल्कि रोगी को काल के गाल से बचाने वाली ईश्वरीय शक्ति है। मूल्य जबरी स्पेशल जिसमें साथ २ ताकत बढ़ाने के लिये मूल्यवान सोना, मोती की भस्म पड़ती है पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) नमूना १० दिन २० रू० जबरी न० २ पूरा कोर्स २०) नमूना १० दिन [illegible]) है। महसूल अलग है।

राय साहब के० एल० शर्मा एन्ड संस (R) जगाधरी (E.P.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोजगार नहीं--केवल परोपकार है ?

सर्पनाशक बिना मारे अपनी अद्भुत शक्ति से सांपों को भगा देने वाली और काटे हुए प्राणियों को मिनटों में काल के भयंकर गाल से बचा देने वाली महौषधि जो प्रति वर्ष हजारों प्राणियों के प्राण बचाती है मूल्य प्रति डिब्बा १।।) रु० एक दर्जन के १६) रु०

बिच्छू विषनाशक बिच्छू के काटे हुए प्राणियों को सैकेण्डों में रोने और तड़पते हुओं को हंसा देने वाली शक्तिशाली दवा है। मूल्य प्रति शाशी ।।।) एक दर्जन मूल्य ८) रु०

नोट:—कार्यालय में उपरोक्त दोनों दवायें मुफ्त धर्मार्थ) दी जाती हैं। बाहर भी सैंकड़ों धनवान सज्जन अपने नाम से गरीबों को मुफ्त बांटने के लिये दर्जनों मगाते हैं। दजन के रिआयती रेट उन्हीं के लिये हैं यह रिआयती रेट दर्जन से कम पर लागू न होंगे। प्रत्येक घर में हर समय यह दवाएं रखना उचित है, न मालूम किस समय अपनी तथा दूसरों की रक्षा करने का पुण्य प्राप्त हो सके दजन के आर्डर पर ५) रु० पेशगी आना जरूरी है।

आसाम बङ्गाल की वही रहस्यमय पुस्तक	आसामी बंगाली तिलस्मी राज या खजाना–करामात	मूल्य ६) सजिल्द ६।।) पृष्ट सं० ३५०

जिसकी हजारों प्रतियां पहले एडीशन ६) रु० मूल्य होते हुए भी हाथों हाथ खतम हो गई थी। अब तीसरी बार छपकर धड़ाधड़ ग्राहकों के पास जा रही है। ऐसी पुस्तक आपने कभी नहीं देखी होगी। यदि आपको न पसन्द हो तो ३ दिन देखकर वापिस कर सकते हैं हम तुरन्त मूल्य लौटा देंगे, इससे बढ़कर और क्या सच्चाई होगी।

नोट:—रंगीला मुसाफिर के ग्राहकों को विशेष रूप से इस मास के अन्त तक मूल्य में १) रु० रियायत होगी। जल्द आर्डर देकर एक प्रति सग्रह कर लें। अन्यथा स्टाक खतम होने पर फिर पहले की तरह पछताना पड़ेगा। जल्द प्राप्त करने के लिये "जगाधरी आफिस" को ही आर्डर दें।

पता—राय साहब के० एल० शर्मा रईस एण्ड बैंकर्स जगाधरी (ई० पी०)

विज्ञापन छपवाने का सर्वोत्तम साधन ❋साहित्य प्रचारक❋

बड़ोदा है इसका प्रचार खूब है। यह पुस्तकालयोंको मुफ्त भेजा जाता है। १)वार्षिक मूल्य देने पर हमारी प्रकाशित समस्त हिन्दी पुस्तकें पौने मूल्य पर मिलती हैं डिमाई पेज वालेछपे हुए विज्ञापन भी इसमें नत्थी किये जाते हैं। उसके लिये विज्ञापन भेज कर निश्चित करें। साधारण तथा विज्ञापन छपाई प्रति पृष्ठ २०,रु० आधा पृष्ठ १२)रु० चौथाई पृष्ठ ७)रु० किसी रूप में स्वीकार की जाती है। बिना अगिम धन आए विज्ञापन नहीं छापते जो परिवर्तन में विज्ञापना चाहें वह इस विज्ञापन को छापकर अपना विज्ञापन भेज दें। पुस्तकालयों को श्रीमती स्व० रतन कुमारी देवी जी की पुण्य स्मृति में ५) की हिन्दी पुस्तकें भेंट दी जावेंगी। उनके लिये १) डाकखर्च भेजना आवश्यक है।

पता—जय देव ब्रदर्स बड़ोदा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

RANGILA MUSAFIR 112500 Registered No. E.P. 374
License to Post with out Prepayment License No. 10/ Punjab

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के पुज्य ऋषियों के आयुर्वेद शास्त्र में क्या कुछ नहीं है।

(भारत के नवयुवको–देश के नो निहालो सावधान)

सैंकड़ों साल गुलामी के बाद 'भारत माता' स्वतन्त्र हो कर आप की तरफ देख रहीहै विदेशी सभ्यता, खराब सोसाइटियों, और लम्बे चौड़े विज्ञापन बाजों के स्पेशल कोर्सों के चक्कर में फस कर व्यर्थ में अपना पैसा नष्ट न करें, यदि आप यहां आ सकें, तब तो कुछ भी बताने या कहने की दरकार नहीं है, केवल २ मिन्ट में नाड़ी परीक्षा द्वारा अन्दर का सब कुछ हाल सुन कर भारत के पुज्य ऋषियों के आयुर्वेद शास्त्र का चमत्कार देख कर आप दंग रह जावेंगे। यदि ऐसा न कर सकें तो फिर सहज उपाय, एक मित्र के नाते अपना पूरा हाल लिख कर पत्र द्वारा आसाम बंगाल के ४० साला तजर्बेकार वैद्य (भारत विख्यात पुस्तक "खजाना करामात" के प्रसिद्ध लेखक। आयुर्वेद तथा युनानी चकित्सा तथा नाड़ी विज्ञान के माहिर। राय साहब के० एल० शर्मा फर्म के संचालक श्री मान पंडित जी से अपने कठिन से कठिन रोग के बारे में बगैर किसी फीस के सेवा रुप से सच्ची सलाह लेकर अपनी मुसीबतों को खतम करें, अधिक लिखना व्यर्थ है। आज ही पत्र व्यवहार से बगैर किसी खर्च के अपने स्वास्थ को ठीक करें, यदि पुस्तक (खजाना करामात) आप ने न देखी हो तो ६।।।) भेज कर तुरन्त मंगाकर अपनी जिन्दगी को सफल बनावें।

* दर्द नाशक *

यह दर्द को आराम देने वाली औषधि है शरीर के किसी भी अंग पांव से लेकर सिर तक हर प्रकार के दर्द को भगा देने में लाभदायक है इस औषधि का हर एक घर में होना जरुरी है मूल्य प्रति शीशी १।।) रु० दर्जन का १५) रु० महसूल अलग।

MONTHLY
RANGILA MUSAFIR
JAGADHRI (Punjab)
No. Exchange
To
Shri Manager Gurukul Patrika
Vill.
P.O. Gurukul Kangri
Distt. (Hardwar) U.P.

❁ खूनी और बादी ❁

दोनों प्रकार की बवासीर से छुटकारा दिलाने वाली शक्तिशाली आयुर्वेदिक औषधि।

❁ बवासीरी ❁ पुरा कोर्स ३० दिन का मुल्य ६।।)

पताः- राय साहब के० एल शर्मा एन्ड सन्स (R) जगाधरी

प० प्यारे लाल शर्मा सम्पादक प्रिंटर पब्लिशर 'रंगीला मुसाफिर' जगाधरी ने अशोक प्रिंटिंग प्रेस जगाधरी में श्री परमा नन्द के प्रबन्ध द्वारा छपवा कर रंगीला मुसाफिर कार्यालय से प्रकाशित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri